Vol.26, Issue 1 | Annual Subscription ` 600

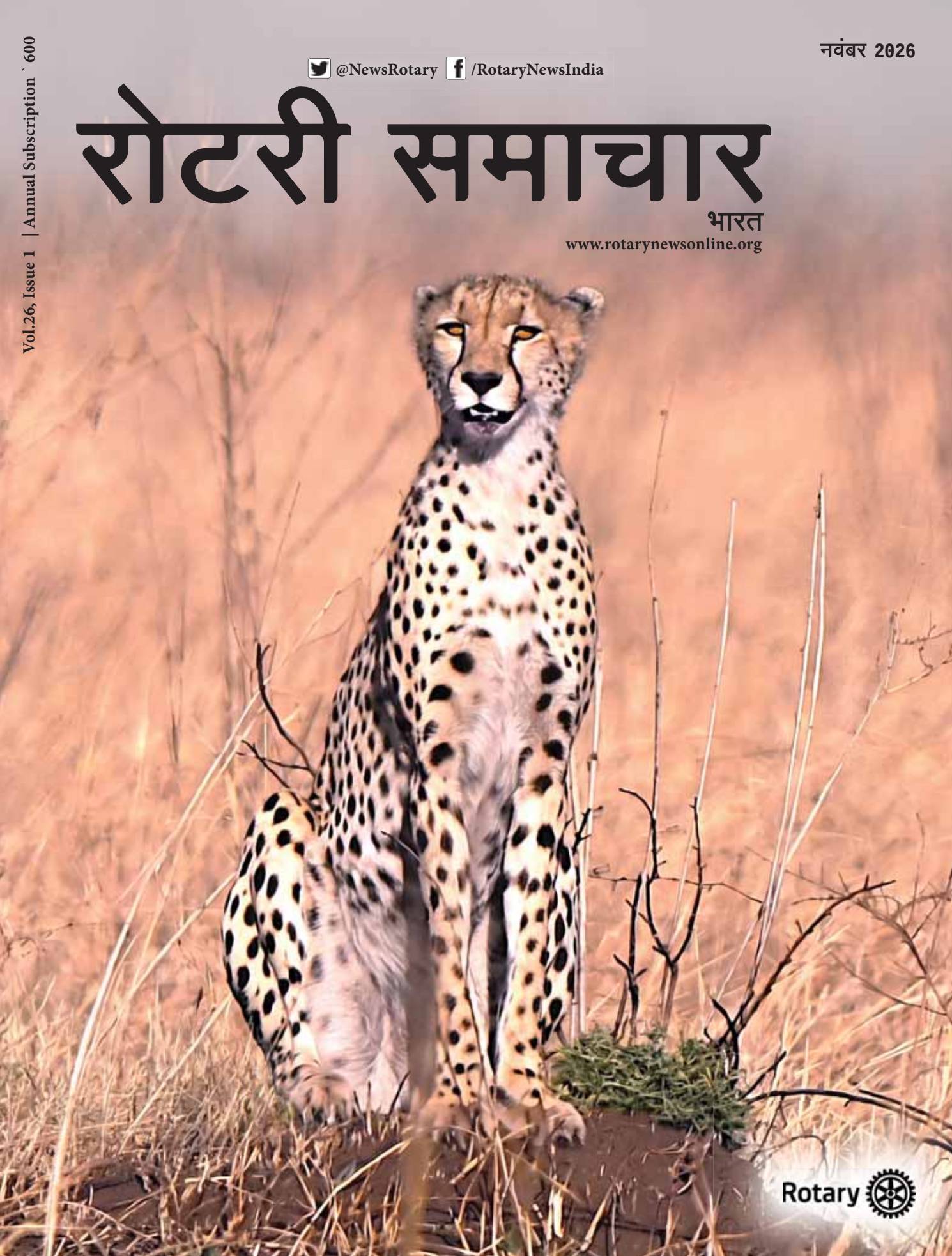
नवंबर 2026

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org



Rotary

PROUD BNI MEMBER

Pankaj Shah

COL Representative District 3131 2026-28
RI Convention Promotion Chair : Taipei, 2025-26
DRFC RID 3131 RY 2025-26
ARRFC ZONE 7 RY 2023-25
District Membership Chair 2022-25
District Learning Facilitator 2024-25
District Governor 2021-22
Charter Member : Rotary Club of Pune Sarasbaug



+91 98220 57299
rotary.pankajshah@gmail.com

Personal Secretary : 81490 57299 I Email : secretary.pankajshah@gmail.com

GDM RRFM

Head Office
Tel : +91 20 24404900 (30 lines)
Call Center : 7888039303.
admin@ramtilak.com

SCAN for the Location

Corporate Office:
Shop No. 243,
Chatrapati Shivaji Market Yard,
Gultekadi, Pune,
Maharashtra-411037

Shree Ganesh Dal & Besan Mills - Shirwal
Ramtilak Roller Flour Mills (p) Ltd. - Chakan
Mandar Health And Hygiene Pvt. Ltd. - Phaltan
M/s. Arun Narayandas Shah - Lonand
Shree Ganesh Shelters - Pune
M/s Deepchand Venichand Shah, Pune.

https://gdmrrfm.com

• ISO 9000:2015 • ISO 22000:2015

CRESCO HEALTHCARE

Multibrand Pathology

www.crescohealthcare.com

PATHOLOGY HOME COLLECTION
MEDICAL STORE - CHEMIST AND DRUGGIST

To avail the services
89564 66801/2/3/4/5

Download Cresco app

PATHOLOGY PARTNERS

Grant Medical Foundation Ruby Hall Clinic · DMH · Bharati Vidyapeeth's Bharati Hospital and Research Centre · Sahyadri Specialty Labs · TRUTEST Laboratories · METROPOLIS The Pathology Specialist

विषयसूची



42

सेवा के साथ रजत जयंती का उत्सव



12

अफ्रीका के जंगलों में 'बिग 5' की तलाश



54

चंडीगढ़ के रोटेरियनों ने बदली गांव की तस्वीर



22

रोटरी का सर्वश्रेष्ठ अध्याय अभी लिखा जाना बाकी है



60

अंतरिक्ष वैज्ञानिक तैयार करने की पहल



34

चेन्नई के एनट्स ने फतह की किलिमंजारो चोटी

महत्वपूर्ण सूचना

सदस्यता शुल्क में संशोधन

प्रिय पाठकों,

भारत सरकार द्वारा पत्रिकाओं के लिए डाक रियायत समाप्त किए जाने से प्रति डाक शुल्क `0.70 पैसे से बढ़कर `16 हो गया है। इसी कारण हमें वार्षिक सदस्यता शुल्क में संशोधन करने का निर्णय लेना पड़ा है।

नई वार्षिक सदस्यता दरें इस प्रकार हैं:

- प्रिंट संस्करण: **`600**
- ई-वर्ज़न: **`360**

संशोधित सदस्यता शुल्क 1 जुलाई 2026 से प्रभावी होगा। इसके अनुसार आपको चालान (इनवॉइस) भेजा जाएगा।

हम रोटेरियनों से ई-वर्ज़न अपनाने का भी आग्रह करते हैं।
यह पर्यावरण-अनुकूल है तथा डाक विलंब के बिना समय पर उपलब्ध हो जाता है।

संपादक

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

Magazine

आपके पत्र

RIPN nS\Çm H$m àaH$ n[aM`

रो ई अध्यक्ष पद के नामित डॉ भरत पंड्या और उनके परिवार का कितना शानदार परिचय! हम दोनों ने 1989 में रोटरी जॉइन किया था। उसी साल तत्कालीन रो ई अध्यक्ष ह्यू एम आर्चर ने *Enjoy Rotary* थीम दी थी। मेरे लिए रोटरी का मतलब है समाज की सेवा करना, दोस्ती बढ़ाना और दुनिया भर के लोगों से जुड़ना। शांत स्वभाव और हमेशा मुस्कुराते रहने वाले डॉ. पांड्या इस भावना को बखूबी दर्शाते हैं।



उनकी एक यादगार बात है, एक अच्छे सर्जन की नजर बाज जैसी, दिल शेर जैसा और हाथ एक महिला जैसे कोमल होने चाहिए। उनका मानना है कि सर्जरी के लिए विश्लेषण, ज्ञान, सबूत, साहस और ईमानदारी जरूरी हैं। यही मूल्य वे रोटरी में भी अपनाते हैं। जीवन के प्रति उनका नजरिया सरल है - सीखो, कमाओ और लौटाओ।

हमें उम्मीद है कि उनके नेतृत्व में रोटरी का साल सार्थक और यादगार होगा।

सुरेश कुमार सबलोक
रोटरी क्लब नाहन सिरमौर हिल्स,
रो ई मंडल 3080

रो ई अध्यक्ष पद के नामित डॉ भरत पंड्या और उनकी पत्नी डॉ माधवी की कवर पेज पर लगी तस्वीर शानदार थी।

रो ई अध्यक्ष 2028 के लिए चुने जाने पर डॉ पंड्या को बधाई! उनका सुझाव है, अगर हम चाहते हैं कि रोटरी अगले 30-50 वर्षों तक जीवंत, सक्रिय और प्रभावी बनी रहे, तो हमें युवाओं को जोड़ना होगा। आज के युवा किसी उद्देश्य और सार्थक काम से जुड़ना चाहते हैं।

रशीदा का लेख 'तालिबान से तबाह... दुनिया ने भुलाया' शानदार था। उन्हें बधाई! रो ई अध्यक्ष यिंका बाबालोला का संदेश '99.9 प्रतिशत, 100 प्रतिशत नहीं है' भी बेहद रोचक था।

डैनियल चिट्टिलाप्पिल्ली
रोटरी क्लब कलूर
रो ई मंडल 3205

रो ई अध्यक्ष पद के लिए नामित होने पर डॉ भरत पंड्या को बधाई! रोटरी के प्रति 37 वर्षों की उनकी निरंतर और समर्पित सेवा ने उन्हें इस प्रतिष्ठित पद तक पहुंचाया है। इस पद पर एक और भारतीय को देखकर हमें गर्व होता है। इस सफर में उनका साथ देने वाली उनकी पत्नी माधवी भी सराहना की पात्र हैं।

एस मोहन
रोटरी क्लब मदुरै वेस्ट
रो ई मंडल 3000

रो ई अध्यक्ष पद के नामित डॉ भरत पंड्या के इंटरव्यू में दिया गया बॉक्स 'एक अच्छे नेता के गुण' काफी जानकारीपूर्ण था। पीआरआईपी के आर रवींद्रन की डॉ पंड्या पर की गई टिप्पणी भी गहरी और प्रभावशाली थी। हाल के वर्षों में भारत में रोटरी की सदस्यता और टीआरएफ में योगदान, दोनों में तेजी से वृद्धि हुई है। मुझे विश्वास है कि नए नेतृत्व में रोटरी के संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के मामले में भी प्रगति होगी।

नेस्टर सिक्वेरा
रोटरी क्लब पणजी
रो ई मंडल 3170

gnmXH$s` na gamhZm Amam gPmd

रशीदा भगत ने अक्टूबर के अपने रोचक संपादकीय में बताया कि ईमानदारी रो ई अध्यक्ष पद के नामित भारत पांड्या के सबसे प्रमुख गुणों में से एक है। अमेरिका के स्वनिर्मित अरबपति, समाजसेवी और लेखक क्लेमेंट स्टोन ने एक बार कहा था, सच का सामना करने का साहस रखें। सही काम इसलिए करें, क्योंकि वह सही है। यही दो जादुई चाबियां हैं, जो आपको ईमानदारी के साथ जीवन जीने में मदद करती हैं।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - रो ई मंडल 3150

ईमानदारी और भ्रष्टाचार पर अक्टूबर अंक में प्रकाशित शानदार संपादकीय के लिए बधाई। यह आज के समाज में फैले भ्रष्टाचार और अनैतिक कामों की गंभीर तस्वीर पेश करता है। आज हम देखते हैं कि सरकार में अधिकार रखने वाले कई लोग उसका इस्तेमाल पैसा कमाने के लिए करते हैं। भ्रष्टाचार हमारी नैतिकता को खोखला कर रहा है। सरकार में जिसके भी हाथ में सत्ता है, वह उसका इस्तेमाल पैसा कमाने के लिए करता है। भ्रष्टाचार हमारी नैतिकता को खोखला कर रहा है। मेरा मानना है कि देश को नियंत्रित करने वाली

आपके पत्र

आबादी का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा वास्तव में भ्रष्ट है। यही 10 प्रतिशत पूरे देश को बदनाम करता है। अब समय आ गया है कि बाकी 90 प्रतिशत लोग अपनी आवाज उठाएं।

ऐसे में रो ई अध्यक्ष पद के नामित भरत पंड्या का उदाहरण ताजी हवा के झोंके जैसा है। सभी उन्हें बेदाग ईमानदारी वाले नेता के रूप में सम्मान देते हैं। ईमानदारी जीवन का सहारा है। हमारे काम और हमारी बातें एक जैसी होनी चाहिए, चाहे कोई हमें देख रहा हो या नहीं। आपने सही कहा है कि ईमानदार और सच्चे लोग रात को सुकून की नींद सोते हैं।

शुभेंदु महंती
रोटरी क्लब भुवनेश्वर एक्सीलेंस - रो ई मंडल 3262

अगस्त अंक में प्रकाशित संपादकीय 'शिक्षा की आकांक्षा' बहुत कुछ कहता है। हाल ही में पेपर लीक होने और विरोध कर रहे छात्रों पर पुलिस की कार्रवाई के कारण देशभर में प्रदर्शन हुए। इन घटनाओं ने अधिकारियों को नींद से जगाया। जब स्थिति बेकाबू होने लगी, तब सुधार के कदम उठाए गए।

संपादकीय में कही गई बात 'पेट काटकर बच्चे को पढ़ाया' दिल को छू जाती है। बेहतर भविष्य के लिए बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से माता-पिता अपनी बुनियादी जरूरतों, यहां तक कि भोजन तक का त्याग करते हैं। यह सचमुच भावुक कर देने वाली बात है। और अब, ख पर कुछ ही तकनीकी जानकार लोगों का नियंत्रण होने से सामाजिक और आर्थिक समानता तथा सबकी प्रगति को लेकर और भी गंभीर सवाल खड़े होते हैं।

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर जेनिफर जोन्स का संदेश 'सीमाओं से परे सेवा' भी महत्वपूर्ण है। इसमें विभिन्न देशों में स्वास्थ्य सेवाओं की असम नता और सीमाओं के पार टीआरएफ के योगदान पर बात की गई है। इसका लक्ष्य ऐसी दुनिया बनाना है, जहां कोई भी पीछे न छूटे।

अभय किशोर संडवार
रोटरी क्लब धनबाद मिडटाउन - रो ई मंडल 3250

अक्टूबर अंक के संपादकीय के संदर्भ में मेरा मानना है कि रोटरी एक ऐसी संस्था है, जो आपसी मेलजोल और मित्रता पर आधारित है। इसलिए हमें अपने विचारों, कामों और शब्दों में राजनीतिक रूप से तटस्थ रहना चाहिए और अपनी विचारधारा को अपने कामों पर हावी नहीं होने देना चाहिए। अक्टूबर का संपादकीय रो ई अध्यक्ष पद के नामित भारत पांड्या की ईमानदारी की सराहना से शुरू हुआ, लेकिन जल्द ही कई दूसरे विषयों की ओर मुड़ गया। एक गैर-सरकारी संगठन के रूप में रोटरी को राजनीतिक और वैचारिक प्रभावों से मुक्त रहना चाहिए। हमारे प्रकाशनों का ध्यान सेवा और मित्रता जैसे मूल्यों पर केंद्रित होना चाहिए।

मुरली कृष्ण आर वी
रोटरी क्लब मूडबिद्री
रो ई मंडल 3181

am B {ZXeH$ ZmJe H$m EH$ {XbMñn g\$a

रशीदा भगत की कवर स्टोरी 'आइए, रोटरी को नई ऊंचाइयों तक ले जाएं' में रो ई निदेशक के. पी. नागेश के रोटरी सफर को बहुत खूबसूरती से पेश किया गया है। उनकी असाधारण जीवन यात्रा और उसे प्रस्तुत करने का अंदाज दिल को छू गया।

उनकी कहानी केवल उपलब्धियों का ब्योरा नहीं है, बल्कि यह संदेश भी देती है कि सही सोच, समर्पण और लगन से कठिनाइयों को पार कर उद्देश्य के साथ आगे बढ़ा जा सकता है।

इस प्रेरक कहानी को रोटरी न्यूज़ के पाठकों तक इतने सहज, रोचक और विचारोत्तेजक ढंग से पहुंचाने के लिए संपादक को बधाई। ऐसी कहानियां रोटरी साहित्य को समृद्ध बनाती हैं।

कर्नल (सेवानिवृत्त) विजयकुमार
रोटरी क्लब अलप्पुळा ग्रेटर- रो ई मंडल 3211

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर जेनिफर जोन्स का सितंबर अंक में प्रकाशित संदेश 'पोलियो को इतिहास बनाएं' नई ऊर्जा देता है। विश्व पोलियो दिवस (24 अक्टूबर) पर रोटेरियन्स का कर्तव्य है कि वे सभी को भरोसा दिलाएं कि वे पोलियो को पूरी तरह खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मेरा मानना है कि उनके क्विज का जवाब पेंगुइन है।

पी मोहनकुमार
रोटरी क्लब मद्रास पल्लवा - रो ई मंडल 3234

गीता माथाई के शानदार लेख 'गठिया का प्रबंधन' के लिए धन्यवाद।

चंडीगढ़ के एक स्कूल का नाम भवन्स आर के सबू विद्यालया रखा जाना पीआरआईपी राजेंद्र सबू और पूरे रोटरी परिवार के लिए गर्व का क्षण है।

रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट ने जन्मजात हृदय रोगों से पीड़ित 625 से अधिक बच्चों की जीवनरक्षक हृदय सर्जरी कराने की सराहनीय पहल की है। इस परियोजना से जुड़ी पूरी टीम को बधाई!

चिन्मय महापात्र
रोटरी क्लब राजधानी भुवनेश्वर - रो ई मंडल 3262

_Indðna
मसाई मारा-सेरेन्गेटी क्षेत्र में खींची गई चीते की तस्वीर।
चित्र : एन रामकृष्णन

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp na ^O gXem na {dMma Zhs {H$`m OmEJm&

अध्यक्ष की जबानी

अधिक सदस्य, अधिक प्रभाव

दुनिया में बदलाव लाने की हमारी कोशिश की शुरुआत खुद में बदलाव लाने से होती है।

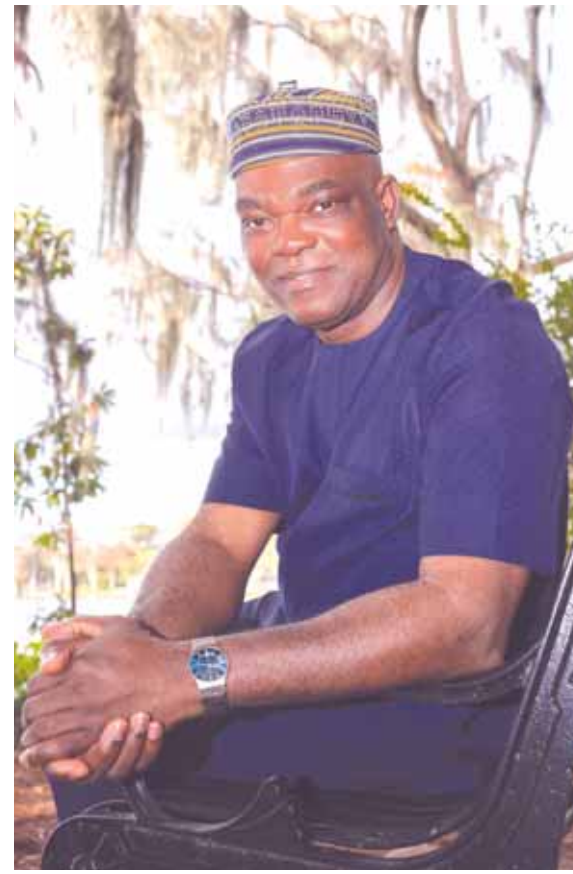
मुझे आज भी रोटरी से अपनी पहली मुलाकात याद है। मैंने टीवी पर एक रोटेरियन को देखा था। मैं तब किशोर था और मेरा ध्यान कहीं और था, लेकिन अचानक मेरी नजरें और पूरा ध्यान उस व्यक्ति पर टिक गया। उस समय मुझे नहीं पता था कि वह छोटा-सा पल मेरी जिंदगी बदलने वाला है। प्रभाव की यही खासियत है। हम अक्सर सोचते हैं कि प्रभाव वह है जो हम बाहर की दुनिया में पैदा करते हैं-किसी समुदाय में जाकर या किसी प्रोजेक्ट के लिए सहयोग देकर। लेकिन असली बदलाव हमारे भीतर से भी आता है।

रोटरी के एक्शन प्लान का पहला स्तंभ है-अपने प्रभाव को बढ़ाना। इसका मतलब सिर्फ अच्छा काम करना नहीं, बल्कि ऐसा काम करना है जिसका असर लंबे समय तक बना रहे और जिसे मापा भी जा सके। इसका अर्थ है ऐसे प्रोजेक्ट चुनना जो टिकाऊ हों और लोगों की वास्तविक जरूरतों पर आधारित हों। हमें खुद से यह सवाल भी पूछना चाहिए-क्या आज शुरू किया गया यह प्रोजेक्ट पांच साल बाद भी लोगों के काम आएगा, तब भी जब हम वहां मौजूद न हों?

जब मैं कहता हूं 'स्थायी प्रभाव पैदा करें', तो मेरा मतलब ऐसा प्रभाव नहीं है जो फीता काटने या कुआं खोदने के बाद खत्म हो जाए। मेरा मतलब उस बदलाव से है जो काम करने वाले व्यक्ति को भी उतना ही बदल दे, जितना उस व्यक्ति को जिसे उस काम से लाभ मिला है।

रोटरी हम सभी को बदलती है। उसने टीवी पर रोटरी को देखने वाले उस किशोर को भी बदला था। 1905 से अब तक रोटरी ने लाखों रोटेरियनों और रोटरेकटरों के जीवन को प्रभावित किया है। और अगर हम आज सही काम करें, तो यह बदलाव इस रोटरी वर्ष के खत्म होने के बाद भी लोगों की जिंदगी में जारी रहेगा। इस बदलाव की शुरुआत सदस्यता से होती है। लोग बढ़ेंगे, तो हमारा प्रभाव भी बढ़ेगा। हर नया सदस्य एक और ऐसा हाथ है जो कुआं खोद सकता है, किसी बच्चे को पढ़ना सिखा सकता है, टीका पहुंचा सकता है या जरूरतमंद पड़ोसी के साथ खड़ा हो सकता है।

2030 में रोटरी की 125वीं वर्षगांठ आने वाली है। तब तक हमारा लक्ष्य दुनिया भर में 12.5 लाख रोटेरियन और 1,25,000 रोटरेकटर तक पहुंचना है। यह सिर्फ किसी बैनर पर लिखी जाने वाली संख्या नहीं है। यह इस बात का पैमाना है कि साथ मिलकर हम कितना अधिक अच्छा कर सकते हैं और कितनी और जिंदगियों को-अपनी जिंदगी समेत-रोटरी बदल सकती है।



चित्र: मोनिका लोज़िस्का

मैंने अक्सर आपसे अपनी क्षमता से भी बेहतर करने की चुनौती दी है। आज यह चुनौती सबसे ज्यादा हमारी सदस्यता बढ़ाने के मामले में सामने आती है। उस सहकर्मी को रोटरी से जोड़िए जो बार-बार पूछता है कि रोटरी आखिर है क्या। उस सदस्य का फिर से स्वागत कीजिए जो किसी वजह से रोटरी से दूर हो गया। पास के रोटरेक्ट क्लब के साथ साझेदारी कीजिए। इनमें से हर बातचीत एक छोटा-सा कदम है, लेकिन उसका असर लंबे समय तक रह सकता है।

हमारे पीछे रोटरी के 125 वर्षों की विरासत है और आगे अभी बहुत काम बाकी है। आइए, ऐसी रोटरी बनाएं जो लोगों की जिंदगी उसी तरह बदलती रहे, जैसे उसने मेरी जिंदगी बदली-एक सदस्य, एक प्रोजेक्ट और एक सेवा कार्य के जरिए।

आइए, *मिलकर स्थायी प्रभाव पैदा करें।*

q¶H$m ~m~mbmbm
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल



Cå_rX OJmZ dmbr H$hm{Z`m H$s Vbme

दुनिया आज संघर्ष, हिंसा और युद्ध की आग में झुलस रही है। युवाओं को अपने भविष्य की चिंता सता रही है, क्योंकि शिक्षा व्यवस्था आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं है। दुनिया के एक हिस्से में बेरहमी से जनसंहार हो रहा है। ऐसे माहौल में मन एक अच्छी, उम्मीद जगाने वाली कहानी सुनने को तरस जाता है।

ऐसी ही एक कहानी पढ़ने के लिए मैंने *द बेटर इंडिया* पत्रिका का रुख किया, जो अच्छी खबरों और सकारात्मक कहानियों को सामने लाने के लिए जानी जाती है। पत्रिका के ताजा अंक की कवर स्टोरी और उसके साथ छपी तस्वीर ने मेरे चेहरे पर तुरंत मुस्कान ला दी। तस्वीर में कुछ महिलाएं हैं, जिनके सामने तरह-तरह के हैंडबैग, टोकरियां और घर में इस्तेमाल होने वाली दूसरी चीजें रखी हैं। पहली नजर में ये सामान बेंत या घास से बना लगता है। लेकिन कहानी इससे कहीं ज्यादा दिलचस्प है। आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले की 150 महिलाएं एक नुकसानदेह जलीय खरपतवार - जलकुंभी - से हैंडबैग, घर सजाने का सामान और आमदनी के साधन तैयार कर रही हैं। कल्पना नाम की एक स्थानीय कारीगर इस तेजी से फैलने वाली खरपतवार को खूबसूरत टोकरियों, लैंपशेड और दूसरी उपयोगी चीजों में बदल देती हैं। जलकुंभी जलाशयों और जलमार्गों में फैलकर उन्हें जाम कर देती है। इसे हटाकर अक्सर फेंक दिया जाता है। लेकिन कल्पना इसी बेकार समझे जाने वाले पौधे से रोजाना ₹500-700 तक कमा लेती हैं। आगे की कहानी बताती है कि कैसे एक पर्यावरणीय समस्या को महिलाओं की आजीविका का साधन बना दिया गया। यह ऐसी पहल है, जो रोटरी के सेवा क्षेत्रों से भी सीधे जुड़ती है।

वैसे, सकारात्मक कहानियां खोजने के लिए हमें बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं है। *रोटरी न्यूज़* के इनबॉक्स में आने वाली खबरें और हमारी पत्रिका में प्रकाशित लेख भी उम्मीद और आशावाद से भरे होते हैं। दुनिया भर में, खासकर भारत में, रोटेरियंस अपनी सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के जरिए लोगों की जिंदगी में बदलाव ला रहे हैं। इसी अंक में प्रकाशित रोटरी क्लब बॉम्बे बे व्यू की कहानी देखिए (पृष्ठ 42)। क्लब के सदस्य अपनी रजत जयंती को 25 खास सेवा परियोजनाओं के जरिए मना रहे हैं। इनमें से कुछ पहलें खास तौर पर दिल को छूती हैं। कश्मीर के दुर्गम इलाकों में तैनात हमारे सैनिकों के कल्याण के लिए क्लब ने नियंत्रण रेखा के पास अंधेरे इलाकों में सोलर लाइटें लगवाई हैं और जवानों के लिए एक विशेष जिम बनवाया है। इतना ही नहीं, 1,200 जवानों को राखियां भेजकर उनके साथ स्नेह और अपनत्व का रिश्ता भी कायम किया है। क्लब की एक सदस्य के शब्दों में, हम उन्हें यह भरोसा दिलाना चाहते थे कि वे अकेले नहीं हैं। 1,200 महिलाएं उनके बारे में सोच रही हैं और देश की रक्षा करने के लिए उन्हें सलाम करती हैं।

यह कहानी मुझे 30 साल पहले की एक सुबह की याद दिलाती है। तब मैं *द इंडियन एक्सप्रेस* में न्यूज़ ब्यूरो का प्रमुख था। एक ब्रिटिश दंपती, जो भारत घूमने आया था, मेरे पास एक सकारात्मक कहानी लेकर पहुंचा। उनका कहना था कि भारत हो या उनका अपना देश, अखबारों में ज्यादातर नकारात्मक खबरें ही पढ़ने को मिलती हैं। वे एक ऐसी घटना बताना चाहते थे, जो लोगों का भरोसा और उम्मीद बढ़ा सके।

कहानी इंडियन एयरलाइंस के कैप्टन शमशेर सिंह की थी। उन्होंने पोर्ट ब्लेयर के चुनौतीपूर्ण रनवे पर विमान का एक इंजन खराब हो जाने के बावजूद अद्भुत कौशल से उसकी सुरक्षित लैंडिंग कराई थी। ब्रिटिश दंपती में पति खुद पायलट थे। उन्होंने बताया, ज्यादातर यात्रियों को शायद यह पता भी नहीं चला होगा कि एक इंजन बंद होने पर उनके कप्तान ने कितनी तेजी और कुशलता से विमान को दुर्घटनाग्रस्त होने से बचाया और उनकी जान बचाई। लेकिन मैं समझ गया था कि उन्होंने क्या किया। बाद में मैंने कैप्टन से बातचीत करके इसकी पुष्टि भी की।

मैंने इस घटना पर खबर लिखी। इसके बाद कैप्टन सिंह ने फोन करके आभार जताया। वह परिचय धीरे-धीरे एक लंबी और अनमोल दोस्ती में बदल गया। पिछले साल उनके निधन तक यह रिश्ता बना रहा।

हां, छोटे-छोटे दीये अंधेरे को दूर करने में मदद करते हैं - भले ही हमारे आसपास की बुरी ताकतें बार-बार नया अंधेरा पैदा करती रहें। लेकिन जब दिवाली बस आने ही वाली है, तो आइए, हम उम्मीद के इन छोटे-छोटे दीयों को जलाते रहें।

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

रशीदा भगत

ADVT.

FINSHERPA
Helping you reach your financial Peak

MAKE A SIFerence.

Your next investment move deserves a conversation.

EXPLORE SIF (SPECIALIZED INVESTMENT FUNDS) WITH FINSHERPA



Already investing in mutual funds?

Discover whether SIF strategies fit your goals, experience and appetite for risk.

Flexible investment strategies | Equity, debt and hybrid approaches | For experienced investors

Minimum investment: ₹10 lakh across SIF strategies of the same AMC.*

Could SIFs fit your portfolio?



Rtn. Babu Krishnamoorthy
Let's catch up over a coffee

Call FinSherpa. Let's explore.

91592 69500 | rotary@finsherpa.com

MUTUAL FUNDS | AIFs | GIFT CITY INVESTMENTS | INSURANCE | AND MANY MORE

Mutual funds are subject to market risks, please read the offer documents carefully before investing.

Alwarpet • Pallikaranai • Navalur • Mogappair • Bangalore

निदेशक का संदेश



जब मिलते हैं हाथ, बदलती है दुनिया

जब भी मैं किसी क्लब से उसकी सबसे अच्छी परियोजना के बारे में पूछता हूं, तो कोई भी शुरुआत खर्च की गई राशि से नहीं करता। वे किसी व्यक्ति या जगह का जिक्र करते हैं - नवजात शिशु को बचाने वाला नियोनेटल वार्ड, पुनर्जीवित किया गया तालाब, दोबारा स्कूल जाने लगा बच्चा या सरकारी कन्या विद्यालय, जहां आखिरकार साफ-सुथरे शौचालय उपलब्ध हुए। आंकड़ों की बात बाद में आती है, मानो वह कोई गौण बात हो। मुझे लगता है कि इससे पता चलता है कि रोटेरियन के लिए दान का असली मायने क्या है।

कोई एक रोटेरियन नियोनेटल वार्ड, पुनर्जीवित तालाब, किसी बच्चे की शिक्षा या अपने जिले से दूर किसी सरकारी कन्या विद्यालय में शौचालयों का पूरा खर्च नहीं उठाता। यह काम कुछ और ही तरीके से होता है। आपका योगदान आपके हाथों से निकलकर हजारों दूसरे योगदानों से जुड़ता है और फिर अनुदान के रूप में लौटता है, जिसे कोई ऐसा व्यक्ति जरूरतमंदों के लिए इस्तेमाल करता है, जिससे आप शायद कभी नहीं मिलेंगे। हो सकता है आप उस गांव को कभी न देखें। उस गांव के लोग आपका नाम भी न जानें। फिर भी काम हो जाता है। इसीलिए मुझे 'दान' शब्द अधूरा लगता है। दान वह है, जिसे आप देकर अलग हो जाते हैं। हमारे फाउंडेशन के जरिए हम जो करते हैं, वह उस समस्या की जिम्मेदारी लेने जैसा है, जिसे कोई एक व्यक्ति, क्लब या मंडल अकेले हल नहीं कर सकता। हम उस जिम्मेदारी में अपना हिस्सा उठाने का संकल्प लेते हैं।

इसके तरीके आप पहले से जानते हैं - एनुअल फंड, एंडोमेंट फंड, पोलियोप्लस फंड और अब तेजी से बढ़ती सीएसआर साझेदारियां, जिनमें भारत में हमारी क्षमता से कहीं अधिक संभावनाएं हैं। अपनी क्षमता के अनुसार कोई भी विकल्प चुनें। कौन-सा विकल्प चुनते हैं, यह उतना मायने नहीं रखता, जितना यह फैसला कि आप योगदान देंगे और लगातार देते रहेंगे। मुझे याद है, 25 साल पहले जब मैंने टीआरएफ में 100 डॉलर से अपना खाता खोला था, तो लगा था कि इतनी छोटी रकम से कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। मैं गलत था। मायने उस पहले चेक की रकम का नहीं था, बल्कि इस बात का था कि मैं हर साल उसमें योगदान जोड़ता रहा। आज उस खाते में 4,75,000 डॉलर हैं। युवा रोटेरियन और रोटरेक्टरों से मैं कहना चाहूंगा कि उस दिन का इंतजार न करें, जब आप अपनी नजर में सम्मानजनक रकम दे सकें। अभी योगदान दें, अपनी सुविधानुसार दें और इस आदत को अपने साथ बढ़ने दें। हमारा फाउंडेशन 100 से अधिक वर्षों से इसी गणित के सहारे कायम है।

पोलियो के खिलाफ हमारी लड़ाई में यह बात सबसे ज्यादा सच साबित होती है। रोटरी को इस अभियान से जुड़े अब 47 साल हो चुके हैं। इसकी शुरुआत 1979 में फिलीपींस में एक टीकाकरण परियोजना से हुई थी। अपने साझेदारों के साथ मिलकर हमने दुनियाभर में पोलियो के मामलों में 99 प्रतिशत से अधिक की कमी लाने में मदद की है। आज हम मंजिल से बस कुछ मील दूर हैं। आखिरी मील सबसे कठिन और सबसे महंगे हैं। इन्हें भी उसी तरह पूरा किया जाएगा, जैसे पुल बनाया गया था - एक-एक योगदान से। कृपया क्लब और व्यक्तिगत स्तर पर पोलियो उन्मूलन अभियान का साथ दें। हम यहां तक साथ मिलकर पहुंचे हैं। अब रुकना नहीं है।

नवंबर फाउंडेशन माह है और इस दौरान हम लक्ष्यों के बारे में काफी सुनेंगे। लेकिन इस साल मैं चाहूंगा कि आप अपने मन में एक अलग तस्वीर रखें। कहीं एक पुल बनाया जा रहा है - पोलियो, निरक्षरता और बीमारियों के खिलाफ; लोगों की जरूरतों और उन तक पहुंचने के साधनों के बीच की दूरी मिटाने के लिए। हो सकता है आप बड़ी चट्टान न उठा सकें।

जितना संभव हो, उतना योगदान दें। देते रहें!

एम मुरुगानंदम
रो ई उपाध्यक्ष, 2026-27
रो ई निदेशक, 2025-27

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

शांति के बीज



हाल ही में मेरी मुलाकात सेलु पॉली से हुई। वह युगांडा के पुलिस अधिकारी हैं और जापान की इंटरनेशनल क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी में रोटरी पीस

फेलोज के 25वें बैच के सदस्य हैं।

दक्षिणी युगांडा में दुनिया के सबसे पुराने और बड़े शरणार्थी शिविरों में से एक, नकिवाले के पास पले-बढ़े सेलु वहां रहने वाले कुछ लोगों को जानते थे। अब वह अपनी पीस फेलोशिप के तहत नकिवाले पर शोध करना चाहते हैं, ताकि लौटकर अपने समुदाय की बेहतर सेवा कर सकें।

उनसे बातचीत ने मुझे 2022 में नकिवाले की अपनी यात्रा की याद दिला दी। इसने फिर एहसास कराया कि शांति के बीज वहां भी पनप सकते हैं, जहां हम इसकी उम्मीद नहीं करते।

नकिवाले में 2,86,000 से अधिक लोग रहते हैं। वे कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, बुरुंडी, रवांडा और अन्य जगहों पर संघर्षों से बचकर यहां पहुंचे हैं। इनमें कई महिलाएं ऐसी हैं, जिन्होंने सुरक्षित ठिकाने की तलाश में कई-कई दिन, यहां तक कि हफ्तों तक पैदल सफर किया।

उनकी कहानियां मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। हर महिला ने बताया कि उसके पति की हत्या कर दी गई थी। कई ने हिंसा, भूख या थकान के कारण अपने बच्चों को भी खो दिया था। इतने गहरे दुख के बावजूद, उनमें एक अद्भुत धैर्य, गरिमा और दृढ़ संकल्प था।

जब मैंने उनसे पूछा कि उन्हें किस चीज की जरूरत है, तो किसी ने पैसे नहीं मांगे। किसी ने भोजन या आश्रय की मांग भी नहीं की। उन्होंने अवसर मांगा। वे छोटे व्यवसाय शुरू करना चाहती थीं, ताकि अपने बच्चों का पेट भर सकें और उन्हें स्कूल भेज सकें। उनकी मांग सीधी, लेकिन बेहद प्रभावशाली थी - हमें कुछ ऐसा बनाने में मदद कीजिए, जो लंबे समय तक कायम रहे।

इसी दिशा में मैं पॉल मुशाहो के साथ काम कर रहा हूं। वह युगांडा की मेकेरेरे यूनिवर्सिटी स्थित रोटरी पीस सेंटर के पहले बैच के स्नातक हैं और उन्होंने नकिवाले में पहला रोटरेक्ट क्लब शुरू किया। रोटरी फाउंडेशन की मदद से हम एक सिलाई केंद्र स्थापित कर रहे हैं, जहां ये महिलाएं हुनर सीख सकें, कमाई कर सकें और अपने जीवन में स्थिरता ला सकें। इन क्लबों के जरिए नकिवाले के युवा खुद को केवल संघर्ष से उबरे लोगों के रूप में नहीं, बल्कि नेतृत्व करने वालों के रूप में देखने लगे हैं।

नवंबर में रोटरी फाउंडेशन मंथ मनाते हुए और रोटरी पीस फेलोज के 25वें वर्ष में प्रवेश करते हुए, हमें याद रखना चाहिए कि फाउंडेशन ने कितना लंबा सफर तय किया है और इसके 1,900 से अधिक पूर्व पीस फेलोज ने दुनिया में शांति के लिए कितना योगदान दिया है।

शांति की इस यात्रा को पॉल जैसे नेता शुरू करते हैं, नकिवाले की वे महिलाएं मजबूती देती हैं जो उम्मीद का दामन नहीं छोड़तीं, और सेलु जैसे पीस फेलोज इसे आगे बढ़ाते हैं।

शांति कोई अमूर्त विचार नहीं है। यह एक कर्म है, जो एक-एक अवसर से आकार लेता है। अक्सर इसकी नींव वे लोग रखते हैं, जिन्होंने अकल्पनीय दुख झेले हैं, फिर भी उम्मीद चुनते हैं। रोटरी फाउंडेशन के माध्यम से हम भी उनके साथ उम्मीद का रास्ता चुन सकते हैं और उसे कुछ ऐसा बनाने में मदद कर सकते हैं, जो आने वाले वर्षों तक कायम रहे।

जेनिफर जोन्स
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	वैद्यनाथन के
RID 2982	सेंथिलकुमार सी
RID 3000	आर बी एस मणि
RID 3011	अजीत जालान
RID 3012	अमित गुप्ता
RID 3020	श्रीराम गुड्डिकोंडा
RID 3030	राजेश वी पाटिल
RID 3040	संस्कार कोठारी
RID 3053	बृज मोहन अग्रवाल
RID 3055	नैमिष एन रवानी
RID 3056	अरुण बगड़िया
RID 3060	निलेश आर शाह
RID 3070	अनिल कुमार सिंघल
RID 3080	रीता कालरा
RID 3090	अमित कुमार
RID 3100	पायल गौर
RID 3110	जसबीर सिंह भाटिया
RID 3120	पूनम गुलाटी
RID 3131	नितिन एस धमाले
RID 3132	जयेश आर पटेल
RID 3141	राजन दुआ
RID 3142	निलेश वी जावंत
RID 3150	उदय सुधीर पिलानी
RID 3160	केशव रेड्डी पी
RID 3170	लेनी डा कोस्टा
RID 3181	सतीश बोलार
RID 3182	वी एम भट्ट
RID 3191	अनिल गुप्ता
RID 3192	रविशंकर डाकोजू
RID 3203	के भूपति
RID 3204	एम वी मोहनदास मेनन
RID 3205	जोशी चाको
RID 3206	आर एस मारुति
RID 3211	के जी नायर
RID 3212	गांधी कृष्णन
RID 3231	टी एस रविकुमार
RID 3233	श्रीराम दुव्वुरी
RID 3234	सुरेश डी जैन
RID 3240	असीम कांती ए
RID 3250	अनु नारंग
RID 3261	आलम एस रूपरा
RID 3262	अनिल कुमार सामल
RID 3291	तपस भट्टाचार्य

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

के पी नागेश **रो ई निदेशक और अध्यक्ष** **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3191
एम मुरुगानंदम **रो ई उपाध्यक्ष और निदेशक**	RID 3000
डॉ भरत पंड्या **रो ई अध्यक्ष-नामित**	RID 3141
ए एस वेंकटेश **TRF ट्रस्टी**	RID 3234
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
डॉ महेश कोटबागी	RID 3131
राजु सुब्रमण्यन	RID 3141
अनिरुद्धा रॉयचौधरी	RID 3291
गुरजीत सिंह सेखों	RID 3070
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2026-27)

पायल गौर **गवर्नर्स काउंसिल की अध्यक्ष**	RID 3100
डॉ लेनी डा कोस्टा **गवर्नर्स काउंसिल के उपाध्यक्ष**	RID 3170
आर सुब्रमणि **गवर्नर्स काउंसिल के सचिव**	RID 3000
अजीत जालान **गवर्नर्स काउंसिल के कोषाध्यक्ष**	RID 3011

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

टीआरएफ ट्रस्टी का संदेश



प्रभाव को बनाएं अपना मूलमंत्र

सेवा का अवसर रोटरी से जुड़ने के प्रमुख कारणों में से एक है। यही अवसर रोटरी में बने रहने की सबसे बड़ी वजह भी है। सेवा के अनेक रूप हैं, लेकिन इनमें से सबसे महत्वपूर्ण अवसर हमें द रोटरी फाउंडेशन के माध्यम से मिलते हैं। जब हम अपने फाउंडेशन की पूरी क्षमता का इस्तेमाल करते हैं, तब इसका असली जादू देखने को मिलता है।

हमारे फाउंडेशन के पास कई तरह की परियोजनाओं के विकल्प हैं, जिनका लाभ सदस्य उठा सकते हैं। रोटेरियन्स की परियोजनाएं केवल सेवा करने की इच्छा से लेकर समुदाय की समस्याओं का समाधान खोजने के बड़े लक्ष्य तक फैली हैं। इनमें से हर प्रयास महत्वपूर्ण है, लेकिन हमें अपने काम के 'प्रभाव' पर ध्यान केंद्रित करना जरूरी है।

पोलियो उन्मूलन इसका एक उदाहरण है, जहां हमने केवल सेवा करने के बजाय एक समस्या को खत्म करने का प्रयास किया। जितना अधिक हम केवल सेवा करने की सोच से आगे बढ़कर समस्याओं का समाधान करने की मानसिकता अपनाएंगे, उतना ही अधिक प्रभाव पैदा कर पाएंगे। दुनियाभर के संगठन अब केवल परिणामों के बजाय अपने काम के प्रभाव को माप रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम भी इस दिशा में आगे बढ़ें।

अब तक हम अपनी परियोजनाओं पर खर्च की गई राशि और कभी-कभी उनमें लगाए गए मानव-श्रम के घंटों का ब्योरा देते रहे हैं। कई बार इन घंटों का मौद्रिक मूल्य भी तय किया जाता है, तो कई बार नहीं। लेकिन हम शायद ही कभी यह बताते हैं कि इन प्रयासों से वास्तव में कितना बदलाव आया।

मैं क्लबों और मंडलों से आग्रह करता हूं कि वे अपनी परियोजनाओं के प्रभाव पर ध्यान देना शुरू करें। कितने लोगों के जीवन में बदलाव आया और कितना बदलाव आया? हमारे काम का असर कितने समय तक बना रहेगा? क्या उससे केवल कुछ सुविधा मिलेगी या जीवन में बुनियादी परिवर्तन आएगा? क्या आने वाली पीढ़ियां भी इससे लाभान्वित होंगी? सामुदायिक सेवा परियोजना की योजना बनाते समय हमें खुद से ये सवाल पूछने चाहिए।

आइए, आगे बढ़ते हुए 'प्रभाव' को अपना मूलमंत्र बनाएं - ऐसा प्रभाव, जो लंबे समय तक बना रहे!

ए एस वेंकटेश
टीआरएफ ट्रस्टी



अफ्रीका के जंगलों में ‘बिग 5’ की तलाश

एन रामकृष्णन

मसाई मारा और सेरेंगेटी-इन नामों के साथ ही आंखों के सामने शेरों के झुंड, हाथियों के विशाल झुंड, ज़ेब्रा, जिराफ़, चीते और तेंदुओं की तस्वीर उभर आती है। और फिर मौका मिले किसी शिकारी को अपने शिकार का पीछा करते देखने का-तो रोमांच और भी बढ़ जाता है।

इन सबके अलावा वाइल्डबीस्ट का नदी पार करना अपने आप में एक शानदार नज़ारा है। और रोमांच तब और बढ़ जाता है जब नदी में घात लगाए बैठे मगरमच्छों को ज़ेब्रा या वाइल्डबीस्ट को अपना शिकार बनाने का इंतज़ार करते देखा जाए।

यही सब देखने की उम्मीद में हम 10 लोगों का एक समूह अफ्रीका पहुंचा था। वॉकी-टॉकी पर नदी पार करने की खबरें सुनाई देने लगीं। हमारे ड्राइवर



तुरंत गाड़ी लेकर मसाई मारा की तरफ नदी के किनारे पहुंच गए। हम सभी बेहद उत्साहित थे और कुछ रोमांचक घटने का इंतज़ार कर रहे थे। नदी की ओर जाती ढलान के ऊपर ज़ेब्रा और वाइल्डबीस्ट का एक बड़ा झुंड घास चर रहा था।

मसाई मारा और सेरेंगेटी-इनका नाम सुनते ही आंखों के सामने शेरों के झुंड, हाथियों के विशाल झुंड, ज़ेब्रा, जिराफ़, चीते और तेंदुओं की तस्वीर उभर आती है। और अगर इनमें से किसी शिकारी को अपने शिकार का पीछा करते देखने का मौका मिल जाए, तो रोमांच और बढ़ जाता है।

फिर वाइल्डबीस्ट का नदी पार करना तो अपने आप में एक शानदार नज़ारा है। रोमांच तब और बढ़ जाता है, जब नदी में घात लगाए मगरमच्छों पर नज़र पड़ती है-जो ज़ेब्रा या वाइल्डबीस्ट के पानी में उतरने का इंतज़ार कर रहे होते हैं।

हम 10 लोगों का समूह भी कुछ ऐसा ही रोमांच देखने की उम्मीद में था। वॉकी-टॉकी पर खबर मिली कि जल्द ही वाइल्डबीस्ट नदी पार कर सकते हैं। हमारे ड्राइवर हमें तुरंत मसाई मारा की ओर नदी के किनारे ले गए। हम सभी उत्साहित थे और किसी रोमांचक नज़ारे का इंतज़ार कर रहे थे।नदी की ओर जाती ढलान के ऊपर ज़ेब्रा और वाइल्डबीस्ट का एक झुंड आराम से घास चर रहा था।

नदी के किनारे ज़ेब्रा का एक छोटा-सा झुंड पानी पी रहा था। शांत दिखाई दे रही मारा नदी से वे अपनी प्यास बुझा रहे थे। हम 10 लोग दूसरी तरफ दो बदली हुई टोयोटा लैंड क्रूज़र 4x4 गाड़ियों में बैठे थे। गाड़ियों की अस्थायी छतें खुली थीं और हममें से लगभग सभी सीटों पर खड़े होकर गर्दनें ऊंची किए ज़ेब्रा को देखने की कोशिश कर रहे थे। मन में यही सवाल था-क्या ये ज़ेब्रा मारा नदी पार करेंगे?

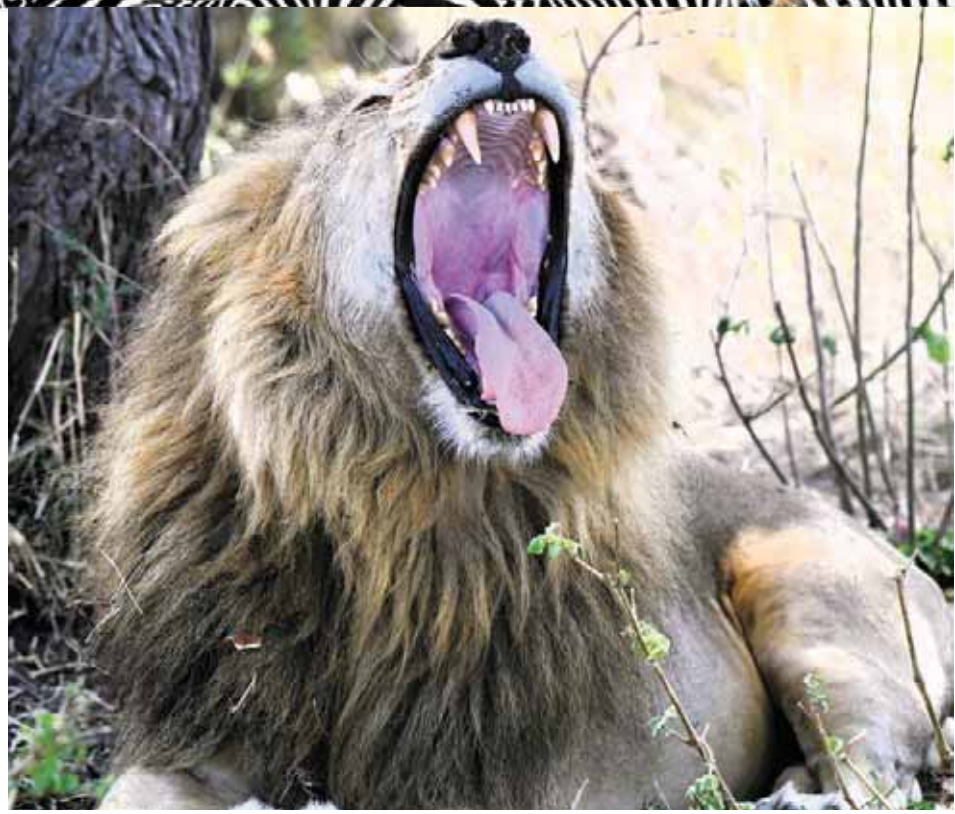
लेकिन दुर्भाग्य से, उस झुंड की दिलचस्पी नदी पार करने में नहीं, सिर्फ अपनी प्यास बुझाने में थी। वे सेरेंगेटी से मसाई मारा की ओर जाने के बजाय वापस तट की ढलान पर चढ़ गए और फिर घास चरने लगे। हम थोड़े निराश हुए। हमें उम्मीद थी कि ज़ेब्रा नदी पार करेंगे और उन्हें देखकर पास में चर रहे बड़ी संख्या में वाइल्डबीस्ट भी नदी पार करने के लिए आगे बढ़ेंगे।

चारों ओर एक अजीब-सी शांति थी। जानवर लगभग खामोश थे, शोर सिर्फ इंसानों की तरफ से

हो रहा था। हवा तेज़ चल रही थी। छोटे-छोटे पक्षी, खासकर मधुमक्खी खाने वाले पक्षी, अपनी मीठी चहचहाहट से माहौल को जीवंत कर रहे थे। वे घास की लंबी पत्तियों के बीच से उड़ते हुए छोटी झाड़ियों तक जा रहे थे।

ऊपर से सब कुछ वैसा ही लग रहा था, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं था। ज़ेब्रा और वाइल्डबीस्ट के इस अफरातफरी भरे नदी पार करने का इंतज़ार करने वाले मगरमच्छों को जानवरों की मौजूदगी का एहसास हो चुका था। वे उस जगह के पास आ गए थे, जहां ज़ेब्रा पानी पीने के लिए नीचे उतरे थे।

नदी के दूसरी तरफ अपनी जगह से हम दूरबीन के जरिए उन्हें पानी में बिल्कुल स्थिर पड़े देख सकते थे। अगर हमने उन्हें पानी में सरकते हुए आते न देखा होता, तो शायद उन्हें चट्टानें ही समझ बैठते। अब ज़ेब्रा वापस तट की ढलान पर चढ़ चुके थे और फिर से घास चरने लगे थे। हमारे सामने सवाल था-क्या हमें किसी दूसरे स्थान पर









जाकर शिकारियों को तलाशना चाहिए या यहीं इंतज़ार करना चाहिए? अच्छा हुआ, हमने इंतज़ार करने का फैसला किया।

फिर अचानक रोमांच शुरू हुआ। चार ज़ेब्रा तट की ढलान से नीचे उतरे और नदी पार करने का फैसला किया। सबसे आगे एक ज़ेब्रा था और उसके पीछे कुछ फीट की दूरी पर तीन और। हमारी जीपों से घबराई हुई आवाज़ें आने लगीं-लोग ज़ेब्रा को नदी पार न करने की चेतावनी दे रहे थे। लेकिन इससे पहले कि हम कुछ समझ पाते, घात लगाए बैठे एक मगरमच्छ को अपना शिकार मिल चुका था।

सबसे आगे चल रहा ज़ेब्रा पूरे आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा था, मानो उसे पूरा यकीन हो कि रास्ता साफ है। लेकिन वह सीधे मगरमच्छ के खतरनाक जबड़ों में जा पहुंचा। संघर्ष बहुत छोटा था। जीत सिर्फ एक की हुई-मगरमच्छ की। उसने ज़ेब्रा को पानी के भीतर खींच लिया और उसे एक सुनसान जगह ले गया, जहां कुछ और मगरमच्छ भी उसके साथ आ गए और मिलकर अपने शिकार का आनंद लेने लगे।

हममें से कुछ लोग उम्मीद कर रहे थे कि ऐसे और भी झुंड नदी पार करेंगे और कुछ और रोमांचक नज़ारे देखने को मिलेंगे। वहीं कुछ को उस ज़ेब्रा के लिए बुरा भी लगा।

लेकिन यही प्रकृति का नियम है। प्रकृति बेरहम है। एक जानवर को दूसरे के जीवित रहने के लिए अपनी जान गंवानी पड़ती है।

मसाई मारा, सेरेंगेटी और न्गोरोंगोरो की 10 दिन की यात्रा के दौरान हमने वाइल्डबीस्ट के नदी पार करने के कई नज़ारे देखे। एक बार तो कम से कम कुछ सौ वाइल्डबीस्ट का झुंड नदी पार कर रहा था। वह वाकई एक शानदार दृश्य था। अफ्रीकी सवाना में वाइल्डबीस्ट को 'अग्ली 5' यानी पांच बदसूरत जानवरों में गिना जाता है। इस सूची में वॉर्थॉग, गिद्ध, चित्तीदार लकड़बग्घा और माराबू स्टॉर्क भी शामिल हैं।

वाइल्डबीस्ट के मारा नदी पार करने की अपनी-अपनी वजहें होती हैं। कभी वे बारिश का पीछा करते हुए आगे बढ़ते हैं, तो कभी बिना सोचे-समझे आगे चल रहे जानवर का अनुसरण करते हैं। अक्सर सबसे आगे ज़ेब्रा होता है, जो मानो पूरे झुंड का बैंड मास्टर हो और बाकी उसके पीछे चलते चले जाते हैं।

कई बार पानी के किनारे इतनी बड़ी संख्या में वाइल्डबीस्ट जमा हो जाते हैं कि पीछे से आने वाले झुंड उन्हें लगातार आगे की ओर धकेलते रहते हैं। जगह की कमी के कारण कुछ जानवर नदी में उतरने और उसे पार करने लगते हैं।

इस पूरे नज़ारे को देखने के लिए पर्यटकों से भरी बड़ी संख्या में गाड़ियां नदी के किनारे जमा हो जाती हैं। ज्यादातर लोग अपने मोबाइल फोन से इस रोमांचक पल को कैमरे में कैद करने में व्यस्त रहते हैं। मेरे जैसे कुछ लोग डिजिटल कैमरों और टेलीफोटो लेंस के साथ सही तस्वीर के इंतज़ार में खड़े रहते हैं।

पार्क के रेंजर भीड़ को नियंत्रित करने की पूरी कोशिश करते हैं। अगर नदी पार करने का अंदेशा हो, तो गाड़ियों को नदी के किनारे के बहुत पास जाने की अनुमति नहीं होती। लेकिन जैसे ही जानवर नदी में उतरना शुरू करते हैं, वहां जैसे अफरातफरी मच जाती है-और सचमुच मच जाती है! ड्राइवर अपने यात्रियों को नदी पार करने का बेहतर नज़ारा दिखाने के लिए तुरंत गाड़ियां दौड़ाकर सबसे अच्छी जगह घेरने लगते हैं।

वाइल्डबीस्ट का नदी पार करना मसाई मारा और सेरेंगेटी के कई शानदार नज़ारों में से बस एक है। यहां आपको ङ्कबिग 5फ में से कम से कम चार जानवर देखने को मिल जाते हैं।'बिग 5' में शेर, भैंसा, तेंदुआ, हाथी और गैंडा शामिल हैं। हालांकि, मेरी समझ से बाहर है कि इस सूची से चीते को कैसे बाहर रखा गया और भैंसे को शामिल कर लिया गया! लेकिन यह बहस फिर कभी।

हमारे मामले में मसाई मारा और सेरेंगेटी में हमें इन पांच में से पहले चार जानवर देखने को मिले। वहीं न्गोरोंगोरो में दूर से चार गैंडों के झुंड की अच्छी झलक भी मिली।

भारत में कई टाइगर सफारी कर चुका हूं, इसलिए बाघ मुझे हमेशा से रोमांचित करते रहे हैं। पहली बार जंगल में शेरों को इतने करीब से देखने के बाद भी मेरा मानना है कि शेरों की तुलना में बाघ कहीं ज्यादा शाही और सम्मोहक लगते हैं। लेकिन इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं कि अलग-अलग जगहों पर शेरों को देखकर मैं उत्साहित नहीं हुआ। एक जगह तो शेरों का पूरा झुंड वाइल्डबीस्ट के एक बड़े झुंड का शिकार करने की तैयारी में था। हम काफी देर तक इंतज़ार करते रहे, लेकिन दुर्भाग्य से वह शिकार शुरू नहीं हुआ।

शेरों को अच्छी तरह पता है कि जंगल का राजा कौन है। कई शेर हमारी गाड़ियों से कुछ ही फीट की दूरी पर बेफिक्र होकर टहलते हुए निकल गए। उनमें एक शानदार अयाल वाला नर शेर भी था। कुछ दूसरे शेर पिछली टांगों पर बैठकर सड़क किनारे जमा बारिश के पानी से बड़े आराम से पानी पी रहे थे। रात में हुई बारिश के कारण वहां पानी का एक छोटा-सा गा बन गया था।





यहां का नज़ारा भारत के ज्यादातर टाइगर रिजर्व से बिल्कुल अलग था-सूखा और खुला हुआ। वह सूखा मौसम था और सेरेंगेटी के विशाल मैदान दूर-दूर तक फैले थे। चारों ओर खुली घासभूमि थी और कहीं-कहीं दूर कोई अकेला पेड़ दिखाई देता था, जो इस पूरे दृश्य को और भी खूबसूरत बना देता था।

मैदानों में हिरणों की कई प्रजातियां भी दिखाई देती थीं-थॉमसन गज़ेल, इम्पाला, कोक हार्टबीस्ट, ईलैंड, ग्रांट्स गज़ेल, बुशबक और वॉटरबक। वे घास चरते हुए भी हर वक्त सतर्क रहते थे, क्योंकि कहीं न कहीं कोई शिकारी उनकी ताक में हो सकता था।

कम से कम दो मौकों पर हाथी हमारी गाड़ियों से इतने करीब आ गए कि हम उन्हें हाथ बढ़ाकर छू सकते थे। न्गोरोंगोरो में तो एक विशाल नर हाथी हमारे बिल्कुल पास से गुजरा, जिसके बड़े-बड़े दांत थे।

उन्हें इंसानों की कोई परवाह नहीं थी। वे बिल्कुल बेफिक्र होकर, लगभग बिना कोई आवाज़ किए चलते रहे और रास्ते में जो पसंद आया, खाते रहे। क्योंकि यह उनका घर था। इंसान वहां सिर्फ घुसपैठिए थे।

न्गोरोंगोरो में दो मिलियन साल से भी पहले एक ज्वालामुखी विस्फोट से बना विशाल क्रेटर है। यहां झील में फ्लेमिंगो की दो प्रजातियां-लेसर और ग्रेटर फ्लेमिंगो-देखने को मिलती हैं। वे पानी में अपनी चोंच डालकर शैवाल छानते रहते हैं। यही शैवाल उनका मुख्य भोजन है और उनके शरीर का गुलाबी रंग भी इसी से आता है।

मसाई मारा, सेरेंगेटी और न्गोरोंगोरो पक्षियों की कई प्रजातियों से भी समृद्ध हैं। लेकिन मेरी तरह पक्षियों को देखने के शौकीन लोग ही इस ओर खास ध्यान देते हैं। ज्यादातर पर्यटकों की नजर तो बड़े जानवरों को देखने पर ही रहती है।

गाड़ियों के ड्राइवर ही हमारे गाइड भी होते हैं और इसके लिए उन्हें बाकायदा प्रशिक्षण लेकर गाइड के तौर पर योग्यता हासिल करनी पड़ती है। दूर से जानवरों को पहचानने में वे माहिर होते हैं। वॉकी-टॉकी पर लगातार होने वाली बातचीत से सभी को पता चलता रहता है कि कहीं कोई शिकारी दिखाई दिया है या जानवरों का नदी पार करना शुरू होने वाला है।

इसके बाद शुरू होती है सबसे अच्छी जगह पाने की होड़। हर कोई चाहता है कि उसे जानवरों को देखने के लिए सबसे बढ़िया जगह मिल जाए। कई लोगों के लिए यह यात्रा उनकी ङ्कबकेट लिस्टफ में शामिल एक और ख्वाहिश पूरी करने भर की होती है। लेकिन मेरी पत्नी और मेरे जैसे प्रकृति और वन्यजीवन प्रेमियों के लिए यह जिंदगी भर याद रहने वाला अनुभव था-ऐसा अनुभव जिसे ताउम्र यादों में संजोकर रखा जा सके।

हां, तस्वीरें भी इन यादों को ताजा रखने में मदद करेंगी! मैं तो बिना एक भी जानवर देखे पूरा दिन उस विशाल घास के मैदान को निहारते हुए बिता सकता था। अगर आपके पास पैसे हैं, लैंड क्रूज़र की उबड़-खाबड़ सवारी झेलने का धैर्य है और जानवरों के दिखाई देने तक घंटों इंतज़ार करने के लिए तैयार हैं, तो यह सफर यकीनन पूरी तरह सार्थक है।

हमारी यात्रा नैरोबी से शुरू हुई। वहां से हमारे ड्राइवर एमोस और आइज़ैक हमें लैंड क्रूज़र में मसाई मारा के हमारे पहले रिज़ॉर्ट तक ले गए। वहां से छोटे सेसना विमानों में दो 'बुश फ्लाइट्स' लेकर हम सेरेंगेटी पहुंचे। वहां हमारे ड्राइवर गिलियड और फिलिप ने हमें रिसीव किया। इसके बाद उन्होंने पूरी यात्रा में हमारा साथ दिया और आखिर में हमें किलिमंजारो एयरपोर्ट तक छोड़कर विदा किया, ताकि हम ढेर सारी खूबसूरत यादों के साथ घर लौट सकें।

सड़कें शानदार थीं और हाईवे पर भारत की तुलना में कहीं ज्यादा लोग ट्रैफिक नियमों का पालन करते दिखाई दिए। नैरोबी से निकलते ही हमारी बातचीत का सबसे बड़ा विषय यही था-क्या हमें बड़ी बिल्लियां यानी शेर और दूसरे शिकारी देखने को मिलेंगे या वाइल्डबीस्ट का नदी पार करना?

हमारे मददगार गाइड का हर बार एक ही जवाब होता-इंतज़ार कीजिए और देखिए।

अच्छी बात यह रही कि हमने इंतज़ार किया और आखिरकार वह सब देखा, जिसकी हमें उम्मीद थी।

लेखक चेन्नई स्थित स्वतंत्र पत्रकार हैं।

चित्र : एन रामकृष्णन

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी के सहयोग से निखर रही तीरंदाजों की प्रतिभा

किरण ज़ेहरा



गया स्थित मगध आर्चरी फाउंडेशन के केंद्र में तीरंदाजी सीखती लड़कियां।

बिहार के एक छोटे से गांव उसास में तीन साल के आदर्श कुमार ने अपने चाचा के साथ मिलकर लकड़ियों से अपना पहला धनुष-बाण बनाया था। *रामायण* से प्रेरित होकर वह खुद को राम या लक्ष्मण मानकर पेड़ों के तनों और चट्टानों पर निशाना साधने की कल्पना करता था। सात साल की उम्र में उसके चाचा उसे स्थानीय तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में ले जाने लगे। इस तरह बचपन का शौक धीरे-धीरे एक गंभीर खेल में बदल गया।

आदर्श बताते हैं, उस समय मेरे पास न तो अच्छे उपकरण थे और न ही औपचारिक प्रशिक्षण। मुझे बस तीर चलाने में मजा आता था। आज 17 साल की उम्र में आदर्श राष्ट्रीय स्तर के तीरंदाज हैं। उन्होंने 2025 की राष्ट्रीय चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता है। पिता, जो सरकारी स्कूल में शिक्षक थे, के निधन के बाद आदर्श गया आ गए और मगध आर्चरी फाउंडेशन के प्रशिक्षण केंद्र में अभ्यास करने लगे। उनकी मां सरकारी क्लर्क हैं। फाउंडेशन और रोटरी क्लब गया सिटी, रो ई मंडल 3250 के सहयोग से आदर्श अपनी पढ़ाई और खेल, दोनों जारी रख पा रहे हैं। क्लब ने गया की नाज़रेथ एकेडमी में उनका दाखिला करवाया

और स्कूल की फीस भी भर रहा है। इससे उन्हें पढ़ाई छोड़े बिना तीरंदाजी पर ध्यान देने का मौका मिला है।

आदर्श के प्रदर्शन में सुधार के साथ क्लब ने उनकी मदद भी बढ़ाई। उन्होंने 2022 में अंडर-14 राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता। इसके बाद अंडर-17 वर्ग में अलग-अलग वर्षों में स्वर्ण और रजत पदक हासिल किए। 2025 में राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतकर उन्होंने अपनी उपलब्धियों में एक और तमगा जोड़ लिया।

आदर्श इस केंद्र में आगे बढ़ रहे अकेले युवा तीरंदाज नहीं हैं। पंद्रह वर्षीय पूनम सिंह को भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) ने देशभर से चुने गए 10 तीरंदाजों में शामिल किया है। उन्हें विशेष प्रशिक्षण के लिए तुर्किये भेजा जाएगा। केंद्र में अभ्यास करने वाले राज्य स्तरीय चैंपियन रणवीर राज और सलोनी राज का केंद्रीय विद्यालय में दाखिला कराने में भी रोटरी क्लब गया ने मदद की है।

तीरंदाजी कोच जय प्रकाश कहते हैं, क्लब के सहयोग से युवा खिलाड़ी अपनी पढ़ाई छोड़े बिना खेल में आगे बढ़ सकते हैं। उनकी सफलता सिर्फ पदक जीतने पर निर्भर नहीं करती। इसके लिए अच्छी शिक्षा, परिवार का सहयोग और लगातार अभ्यास करने के लिए जरूरी संसाधन भी चाहिए।

2022 में जय प्रकाश ने गया में तीरंदाजी प्रशिक्षण केंद्र विकसित करने के लिए क्लब के कार्यकारी सचिव रतन कुमार से मदद मांगी। कुमार स्वयं राज्य स्तर के क्रिकेट खिलाड़ी रह चुके हैं। उन्होंने इस मुद्दे को क्लब के सामने रखा और पहल के संचालन के लिए एक ट्रस्ट बनाया गया।



आदर्श कुमार (दाएं) तीरंदाजी कोच जय प्रकाश के साथ।



पीडीजी एस पी बगारिया (बाएं से छठे), संजीव कुमार ठाकुर (बगारिया के बाएं) और रोटरी क्लब गया सिटी के सदस्य साइकिल पाने वाले विद्यार्थियों के साथ।

स्थानीय सरकार ने प्रशिक्षण केंद्र के लिए खुला मैदान उपलब्ध कराया, जहां क्लब ने एक शेड बनवाने में मदद की। इसके बाद पीडीजी संजीव ठाकुर ने केंद्र को ₹50,000 दिए, जबकि डीजी एस. पी. बगरिया ने वहां प्रशिक्षण लेने वाले बच्चों को 12 साइकिलें भेंट कीं। 2025 में क्लब ने तीरंदाजी मैदान और अन्य सुविधाओं के विकास के लिए ₹1.51 लाख का योगदान दिया।

क्लब के सदस्यों ने खिलाड़ियों के लिए जर्सियां भी प्रायोजित कीं। क्लब और फाउंडेशन ने बच्चों को धनुष-बाण, पानी की बोतलें और बैकपैक उपलब्ध कराए। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर दो युवा तीरंदाजों सलोनी और वैशाली करण को नए धनुष दिए गए।

रतन कुमार बताते हैं, तीरंदाजी एक महंगा खेल है। पेशेवर धनुष-बाण का एक सेट ₹5 लाख तक का हो सकता है। केंद्र लगभग ₹40,000 की कीमत वाले बुनियादी सेट उपलब्ध कराता है। अब तक केवल एक विद्यार्थी को ₹80,000 का सेट मिला है। वह कहते हैं कि जिन परिवारों को बच्चों की पढ़ाई, घर के खर्च और खेल के उपकरणों के बीच संतुलन बनाना पड़ता है, उनके लिए इतने महंगे उपकरण खरीदना आसान नहीं है। जब बच्चों को जरूरी उपकरण मिल जाते हैं, तो वे नियमित अभ्यास कर सकते हैं और अपनी प्रतिभा निखार सकते हैं।

इस समय केंद्र में तीन से 18 वर्ष की उम्र के 86 बच्चे तीरंदाजी सीख रहे हैं। इनमें से कई आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आते हैं। कोच जय प्रकाश बताते हैं, बच्चों का चयन तीरंदाजी में उनकी रुचि, क्षमता, नियमित उपस्थिति और प्रदर्शन के आधार पर किया जाता है। केंद्र में 2025 से एक इंटरेक्ट क्लब भी सक्रिय है। इसके सदस्य गुल्लकों में थोड़ी-थोड़ी रकम बचाते हैं और उस पैसे का इस्तेमाल सामाजिक कार्यों के लिए करते हैं। वे पौधारोपण कार्यक्रमों में हिस्सा ले चुके हैं और शिक्षक दिवस तथा होली के अवसर पर आयोजन भी करते हैं। क्लब के सदस्य राज कुमार दुबे, डॉ. रतन कुमार और विजय भलोटिया इस इंटरेक्ट क्लब को सहयोग देते हैं। रतन कुमार कहते हैं, ''युवा तीरंदाजों को नियमित कोचिंग, अच्छे उपकरण, प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर और प्रशिक्षण के लिए यात्रा करने हेतु आर्थिक सहायता की जरूरत होती है। प्रतिभा को निखारने के लिए इन सभी चीजों का साथ मिलना जरूरी है।'' ■



हैं, हम चाहते हैं कि युवा खुद को केवल मदद पाने वाले खिलाड़ी के रूप में न देखें, बल्कि ऐसे समुदाय का हिस्सा समझें, जिसमें वे भी योगदान दे सकते हैं।

पटना में बिहार राज्य खेल प्राधिकरण से लेवल-2 की योग्यता प्राप्त तीरंदाजी कोच जय प्रकाश को बिहार सरकार ने 2024 और 2025 में सर्वश्रेष्ठ कोच पुरस्कार से सम्मानित किया। दोनों ही वर्षों में उन्हें ₹2 लाख की पुरस्कार राशि मिली। उन्होंने इस राशि का एक हिस्सा प्रशिक्षण केंद्र के लिए उपकरण खरीदने में लगाया। उनके मार्गदर्शन में गया की टीम ने 2024 में पटना में आयोजित राजा कर्ण राज्य स्तरीय तीरंदाजी चैंपियनशिप में ओवरऑल चैंपियन का खिताब जीता। 400 तीरंदाजों के बीच मुकाबले में गया की टीम ने नौ स्वर्ण, आठ रजत और 10 कांस्य पदक हासिल किए।

इस वर्ष भी सर्वश्रेष्ठ कोच पुरस्कार जीतने का भरोसा रखने वाले जय प्रकाश का सपना इससे कहीं बड़ा है। वह चाहते हैं कि उनके विद्यार्थी एक दिन ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतें। रतन कुमार इस प्रशिक्षण केंद्र को 'चैंपियंस सेंटर' कहते हैं। वह विश्वास के साथ कहते हैं, इन बच्चों को अभ्यास करते देखकर मुझे यकीन है कि एक दिन यहां से ओलंपिक पदक जरूर आएगा।

केंद्र के तीरंदाजों ने भागलपुर में आयोजित राज्य स्तरीय स्कूली चैंपियनशिप में मगध क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए तीन आयु वर्गों में कुल 21 पदक जीते। इनमें नौ स्वर्ण, छह रजत और छह कांस्य पदक शामिल थे। मार्च 2026 में आयोजित मिनी नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप में फाउंडेशन के खिलाड़ियों ने दो स्वर्ण और एक कांस्य पदक हासिल किया। अब फाउंडेशन तीन विद्यार्थियों को विशेष तीरंदाजी प्रशिक्षण के लिए दक्षिण कोरिया भेजना चाहता है। लेकिन इस अभियान का खर्च काफी अधिक है। इसलिए रोटरी क्लब गया भारत और दक्षिण कोरिया के रोटरी क्लबों से सहयोग मांग रहा है।

Rotary
Zones 4,5,6 & 7

AIM HIGH
Sri Lanka
ROTARY INSTITUTE 2026

AIM HIGH

Sri Lanka

ROTARY INSTITUTE 2026

18-20 DECEMBER

CITY OF DREAMS, COLOMBO



Yinka Babalola
Rotary International President 2026-2027



RI Vice President & Convenor
Muruganandam M. (MMM)
RI Director 2025-27
India



Co-Convenor
K.P. Nagesh (KPN)
RI Director 2025-27
India



Harriette Florence Verwey
RI Director 2025-27
Netherlands



Brian Hall
RI Director 2025-27
USA



Emmanuel Katongole
RI Director 2026-28
Uganda



Sofia Gisladottir
RI Director 2026-28
Iceland

Meet | Greet | Network

with the current
Rotary International
Directors



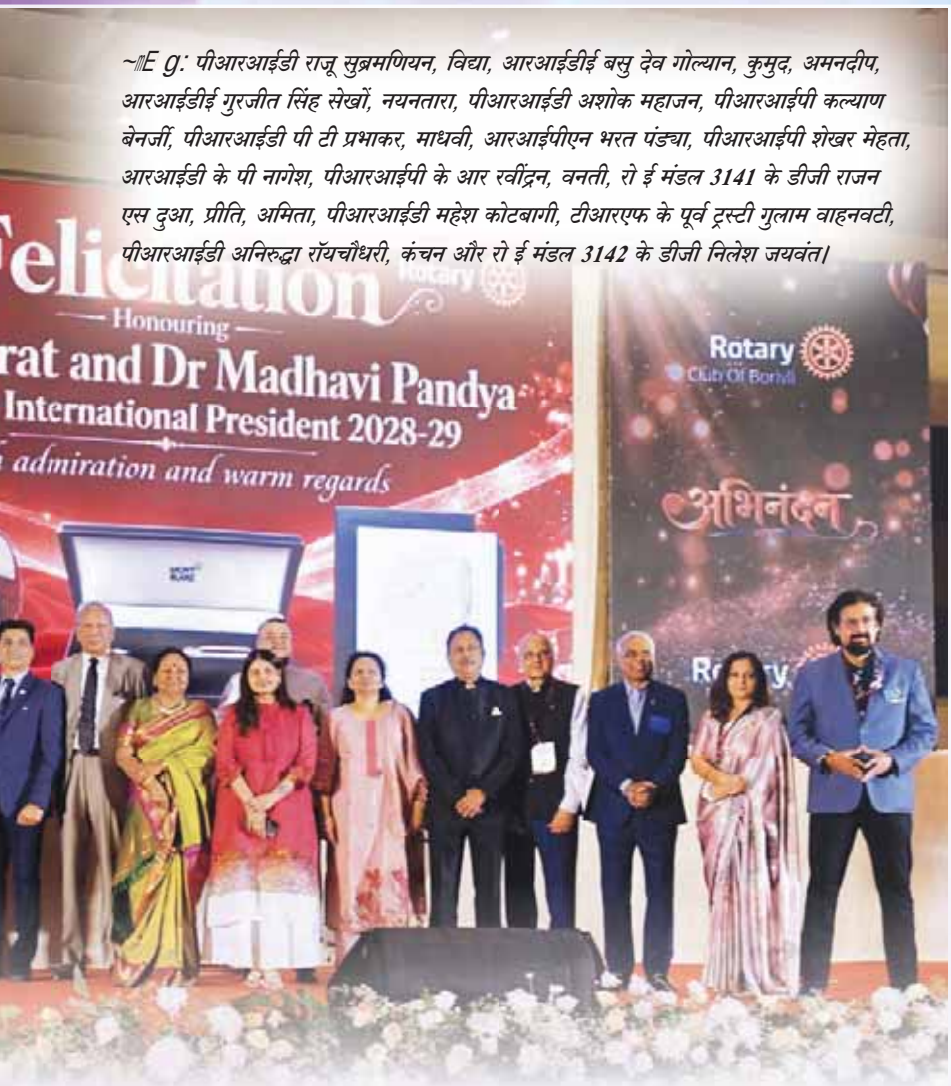
रोटरी का सर्वश्रेष्ठ अध्याय अभी लिखा जाना बाकी है

भरत पंड्या

रशीदा भगत

जीवन में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब शब्द भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कम पड़ जाते हैं। 37 साल पहले, जब मैंने रोटरी से जुड़ने का फैसला किया था, तब मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि यह सफर मुझे यहां तक ले आएगा, जहां आज मैं 2028-29 के रो ई अध्यक्ष के रूप में आपके सामने खड़ा हूं। यहां वक्ताओं और पैनल के सदस्यों ने मेरे लिए प्रशंसा, ज्ञान और आशीर्वाद के जो शब्द कहे हैं, उनसे मैं अभिभूत हूं और विनम्रता से उनका आभार व्यक्त करता हूं।

इन शब्दों के साथ रो ई अध्यक्ष-नामित भरत पंड्या ने मुंबई में उनके सम्मान में आयोजित भव्य सम रोह *अभिनंदन* में रोटेरियन्स का अभिवादन किया। उन्होंने कार्यक्रम के संयोजक एवं पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन और रो ई मंडल 3141 व 3142 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर्स राजन दुआ और निलेश जावंत का



~ E g: पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन, विद्या, आरआईडीई बसु देव गोल्यान, कुमुद, अमनदीप, आरआईडीई गुरजीत सिंह सेखों, नयनतारा, पीआरआईडी अशोक महाजन, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, माधवी, आरआईपीएन भरत पंड्या, पीआरआईपी शेखर मेहता, आरआईडी के पी नागेश, पीआरआईपी के आर रवींद्रन, वनती, रो ई मंडल 3141 के डीजी राजन एस दुआ, प्रीति, अमिता, पीआरआईडी महेश कोटबागी, टीआरएफ के पूर्व ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी, पीआरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी, कंचन और रो ई मंडल 3142 के डीजी निलेश जयवंत।

आभार जताया। समारोह में 750 रोटेरियन्स शामिल हुए। राजू सुब्रमणियन और उनकी पत्नी विद्या को बाद में 2028-29 के लिए अध्यक्ष के सहयोगी घोषित किया गया।

पंड्या ने अपने रोटरी जीवन के शुरुआती दिनों की एक याद साझा की। उस समय वे अपने क्लब के एकमात्र डॉक्टर थे और उन्हें पोलियोप्लस कार्यक्रम की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जो तब शुरू ही हुआ था। वे बताते हैं, जब मैं इस अभियान से जुड़ा, झुग्गी-बस्तियों के दुर्गम इलाकों में गया, माता-पिता को बच्चों को पोलियो की दो बूंदें पिलाने के लिए समझाया, तब उस अनुभव ने मुझे भीतर तक छू लिया और बदलकर रख दिया। धीरे-धीरे उन्हें एहसास हुआ कि रोटरी में सेवा कोई अमूर्त विचार या महज एक नारा नहीं है। सेवा का एक मानवीय चेहरा है-बच्चे की मुस्कान, माता-पिता की चिंता और मां के चेहरे पर कृतज्ञता। यह उन महिलाओं की गरिमा में दिखाई देती है, जिनका जीवन रोटरी के सशक्तीकरण से बदल गया; उन बच्चों की जिंदगी में भी, जिनकी देखभाल के लिए किसी रोटेरियन ने हाथ बढ़ाया।

वर्षों बाद, पीआरआईडी अशोक महाजन के सहयोग से पंड्या ने राष्ट्रीय पोलियोप्लस समिति में काम किया। इसी दौरान भारत पोलियो मुक्त बना। वे कहते हैं, हर भूमिका और हर जिम्मेदारी ने मुझे कुछ नया सिखाया। मैंने समझा कि रोटरी में नेतृत्व का अर्थ लोगों के सामने खड़े होकर तालियां बटोरना नहीं, बल्कि उनके साथ खड़े रहना है। इसका अर्थ है उनकी बात सुनना, उन्हें समझना और सबको साथ लेकर चलना। सबसे अहम बात यह है कि रोटरी में पद अस्थायी होते हैं, लेकिन हमारे काम का प्रभाव वर्षों और दशकों तक बना रह सकता है। लाओ त्से के विचार का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, अच्छा नेता वह है, जिसके पीछे लोग चलते हैं; लेकिन सच्चा बुद्धिमान नेता वह है, जिसके नेतृत्व में काम पूरा होने पर लोग कहें-यह हमने खुद किया है।

पंड्या ने कहा कि रोटरी में उनका हमेशा यही प्रयास रहा है कि अधिक अनुयायी बनाने के बजाय अधिक नेता तैयार किए जाएं। पीछे मुड़कर देखता हूं, तो लगता है कि रोटरी ने मुझे जितना दिया है, उतना मैं शायद कभी लौटा नहीं पाऊंगा। इसने मुझे ऐसे मित्र दिए, जिनका साथ अनमोल है; सीखने और आगे बढ़ने के अवसर दिए और असाधारण लोगों व नेताओं के साथ काम करने का सौभाग्य दिया। मुझे रोटेरियन होने पर गर्व है, क्योंकि रोटरी ने मेरी सोच का दायरा बढ़ाया और मुझे जीवन को देखने तथा जीने का बेहतर नजरिया दिया। वे इस बात से भलीभांति परिचित हैं कि उन्हें उन विशिष्ट नेताओं की परंपरा को आगे बढ़ाना है, जिन्होंने रोटरी का नेतृत्व किया है। इनमें उनके अपने ज़ोन्स के पांच नेता भी शामिल हैं। राजा साबू, कल्याण बनर्जी, के. आर. रवींद्रन और शेखर मेहता जैसे नेताओं ने संगठन पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

रो ई अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व करने का अवसर मिलने पर विनम्रता और उत्साह व्यक्त करते हुए पंड्या ने अपने माता-पिता और रोटरी परिवार के वरिष्ठ सदस्यों का मार्गदर्शन के लिए आभार जताया। उन्होंने अपने क्लब, रोटरी क्लब बोरिवली, और तत्कालीन रो ई मंडल 3140-जो अब मंडल 3141 और 3142 हैं-का विशेष धन्यवाद किया। उन्होंने कहा, मैं रो ई मंडल 3140 की देन हूं। इस सफर में मेरे क्लब और मंडल ने मुझ पर भरोसा किया, मेरा साथ दिया और मेरा उत्साह बढ़ाया। लेकिन उनका सबसे भावुक आभार अपनी पत्नी माधवी के लिए था। उन्होंने कहा, मैं उस शख्स का विशेष रूप से शुक्रिया अदा करता हूं, जिन्हें मेरे भतीजे श्याम ने मेरे पंखों के नीचे बहने वाली हवा कहा था। माधवी मेरी मार्गदर्शक, मेरी गुरु और मेरी सबसे अच्छी दोस्त हैं।

रोटरी के लिए सेवा कर रहे सभी रोटेरियन्स का आभार व्यक्त करते हुए अध्यक्ष-नामित ने कहा कि रोटरी में हर अवसर अपने साथ एक जिम्मेदारी भी लाता है। इन जिम्मेदारियों को निभाते हुए लक्ष्य पर ध्यान बनाए रखना जरूरी है। उन्होंने चींटियों का उदाहरण दिया, जो रास्ते में आने वाली बाधाओं से



~ïE g: पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन, आरआईपीएन भरत पंड्या, विद्या सुब्रमणियन और माधवी पंड्या।

विचलित हुए बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रहती हैं। उनका पूरा ध्यान अपने उद्देश्य तक पहुंचने पर होता है। एकाग्रता में बहुत शक्ति है, उन्होंने कहा। पंड्या ने लेजर का उदाहरण देते हुए समझाया कि ऊर्जा का एक कमजोर स्रोत भी, जब केंद्रित किया जाता है, तो कांच काट सकता है या हीरे जैसी कठोर वस्तु में छेद कर सकता है। इसी तरह, यदि रोटेरियन्स अपनी ऊर्जा और प्रयासों को एक दिशा में केंद्रित करें, तो वे बड़े लक्ष्य हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में उन्हें और सभी रोटेरियन्स को तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना होगा-सदस्य, प्रभाव और विश्वास। पंड्या के अनुसार, रोटरी की सबसे बड़ी पूंजी उसके सदस्य हैं और वही संगठन की असली ताकत हैं। उन्होंने जून 2030 तक रोटरी में 1.25 मिलियन रोटेरियन्स और 125,000 रोटरेक्टर्स का लक्ष्य हासिल करने के लिए सदस्यों पर ध्यान देने की जरूरत बताई।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में लोगों के दुख दूर करने के महत्व का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यही रोटरी सेवा का मूल भाव है। अब तक सेवा की सफलता को अक्सर परियोजनाओं की संख्या और खर्च की गई राशि से मापा जाता रहा है। लेकिन, उनके अनुसार, हमारी सेवा का उद्देश्य लोगों की समस्याओं का समाधान करना, उनके जीवन में बदलाव लाना और समुदाय पर ऐसा स्थायी प्रभाव छोड़ना होना चाहिए, जिसे मापा भी जा सके।

विश्वास को रोटेरियन्स की सबसे बड़ी पूंजी बताते हुए पंड्या ने कहा कि आज जब कई संस्थानों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठ रहे हैं और लोगों का भरोसा कमजोर हो रहा है, तब रोटरी को ऐसा संगठन बने रहना चाहिए, जिस पर लोग विश्वास कर सकें। लोगों को हमारे नेतृत्व, ईमानदारी और जिम्मेदार कार्यप्रणाली पर भरोसा होना चाहिए। उन्हें विश्वास होना चाहिए कि रोटरी को दिया गया हर रुपया सही तरीके से, समझदारी से और प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया जाएगा। भारतीय धर्मग्रंथों के विचार का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इंसान के साथ उसकी मृत्यु के बाद भी जो चीज बनी रहती है, वह उसका चरित्र है। चरित्र से ईमानदारी का जन्म होता है, ईमानदारी से विश्वास बनता है और विश्वास ही नेतृत्व की नींव है।

पंड्या ने स्पष्ट किया कि उनके रो ई अध्यक्ष (2028-29) के लिए नामित होने का जश्न मनाने से ज्यादा जरूरी उन सभी रोटेरियन्स का सम्मान करना है, जो अपना समय, प्रतिभा और ऊर्जा रोटरी को दे रहे हैं। उन्होंने कहा, सवाल यह नहीं है कि भरत पंड्या रो ई अध्यक्ष के रूप में क्या करेगा, बल्कि यह है कि 2028-29 के इस सफर में हम सब मिलकर क्या हासिल करेंगे।

उन्होंने कहा कि आज रोटरी में भारत के ज़ोन्स शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। सदस्यता लगातार बढ़ रही है, युवा नेता आगे आ रहे हैं और रोटरी फाउंडेशन (टीआरएफ) के सहयोग से समुदायों में उल्लेखनीय सेवा कार्य हो रहे हैं। पिछले कई वर्षों से भारत फाउंडेशन को योगदान देने वाले देशों में दूसरे स्थान पर है। पिछले साल यह योगदान 45 मिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर गया। पीआरआईपी शेखर मेहता के शब्दों को याद करते हुए उन्होंने कहा, सेवा परियोजनाओं के मामले में हम कोहिनूर हैं। हालांकि, उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि चुनाव संबंधी विवाद और आपसी टकराव संगठन की छवि पर असर डालते हैं। पीआरआईपी के. आर. रवींद्रन की सीख का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, असहमति होना गलत नहीं है, लेकिन हमें यह सीखना होगा कि असहमत होते हुए भी ऐसा व्यवहार न करें, जिससे आपसी संबंध खराब हों।

पंड्या ने कहा कि यदि सभी रोटेरियन्स एकाग्रता और आपसी सौहार्द के साथ काम करें, तो वे ऐसा रोटरी संगठन बना सकते हैं, जिस पर हर सदस्य को गर्व हो-एकजुट, भविष्य के प्रति सजग और प्रभावी संगठन, जो अपने मूल्यों पर कायम रहते हुए रोटरी की वैश्विक दुनिया में अग्रणी भूमिका निभाए। मेरी आप सभी से यही अपेक्षा है। मुझे पूरा विश्वास है कि रोटरी का सर्वश्रेष्ठ अध्याय अभी लिखा जाना बाकी है।

उन्होंने कहा कि यदि सभी मिलकर इस अध्याय को साहस, करुणा और ईमानदारी के साथ लिखें, तो वर्षों बाद शायद लोगों को यह याद न रहे कि 2028-29 में रोटरी का नेतृत्व किसने किया था। लेकिन उन्हें वे अच्छे काम जरूर याद रहेंगे, जो रोटरी के माध्यम से किए गए-वे बच्चे जिन्हें पोलियो से बचाया गया, वे जिंदगियां जिन्हें बेहतर बनाया गया और वे अवसर, जिनके जरिए समुदायों और दुनिया की उम्मीदों को पूरा करने का प्रयास किया गया। अपने संबोधन का समापन उन्होंने रॉबर्ट फ्रॉस्ट की कविता की इन पंक्तियों के भाव के साथ किया: *The woods are lovely, dark and deep. But I have promises to keep and miles to go before I sleep.*

पंड्या को अध्यक्ष-नामित बनने पर बधाई देते हुए पीआरआईपी के आर रवींद्रन ने करीब 15 साल पहले हुई अपनी पहली मुलाकात याद की। यह मुलाकात उनके क्लब के रजत जयंती समारोह में हुई थी। उन्होंने पंड्या को विरोधाभासों से भरा एक व्यक्तित्व बताया-कद में छोटे, लेकिन अपने महत्व और प्रभाव में विशाल; व्यवहार में बेहद विनम्र, लेकिन भीतर दृढ़ संकल्प वाले। वे श्रेय लेने में संकोच करते हैं, लेकिन जिम्मेदारी स्वीकार करने में कभी पीछे नहीं हटते। रवींद्रन ने कहा, वे कमरे में सबसे ऊंची आवाज वाले व्यक्ति कभी नहीं होते, फिर भी लोग उनकी बात से सहमत हो जाते हैं। अध्यक्ष के पद पर बैठे व्यक्ति के लिए यह एक बहुत उपयोगी गुण है।

उन्होंने पंड्या को आगाह किया कि रो ई अध्यक्ष का पद कोई पदोन्नति नहीं है और न ही यह उस सीढ़ी का अंतिम पायदान है, जिस पर चढ़ते हुए वे यहां तक पहुंचे हैं। यह बिल्कुल अलग तरह की जिम्मेदारी है। आपने अब तक जो कुछ किया है, वह अपने आप में आपको इस भूमिका के लिए पूरी तरह तैयार नहीं कर सकता। मैं यह इसलिए जानता हूं, क्योंकि मुझ जैसे लोग इस जिम्मेदारी को निभा चुके हैं। रवींद्रन ने कहा कि ऐसे मौके आएंगे, जब पंड्या को अपनी लोकप्रियता से ऊपर संगठन के हित को रखना होगा। उस दिन इसकी कीमत भी चुकानी पड़ सकती है। अध्यक्ष को कठिन फैसलों का कारण समझाने, उनकी जिम्मेदारी स्वीकार करने और पूरे संगठन में उन्हें लागू कराने का साहस रखना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय कार्यकाल के दौरान रो ई में खर्चों में बड़ी कटौती करने का अनुभव साझा करते हुए रवींद्रन ने बताया कि जब उन्होंने कर्मचारियों से खर्च कम करने को कहा, तो उन्होंने वरिष्ठ नेताओं से भी पूछा कि वे खुद खर्च घटाने के लिए क्या कर रहे हैं। इसलिए मैंने अपनी यात्रा का खर्च 1.2 मिलियन डॉलर से घटाकर 700,000 डॉलर कर दिया। मैंने बोर्ड की बैठकों में जीवनसाथियों के आने पर भी रोक लगा दी। आखिर हमें वही करना चाहिए, जो हम दूसरों से करने को कहते हैं। इन कदमों से 3.5 मिलियन डॉलर की बचत हुई।



खर्चों में कटौती के लिए कभी-कभी कठिन फैसले भी लेने पड़ते हैं। रवींद्रन ने बताया कि एक बार जब वे अफ्रीका में थे, तब उनके एक साथी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर ने तत्कालीन अमेरिकी उपराष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ बैठक आयोजित की। लेकिन इसमें शामिल होने के लिए उन्हें अफ्रीका से वापस अमेरिका जाना पड़ता, इसलिए उन्होंने बैठक में शामिल न होने का फैसला किया।

पंड्या को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभालने से पहले बचे 18 महीने भले ही लंबे लग रहे हों, लेकिन समय बहुत तेजी से बीतेगा। इस दौरान ऐसी परिस्थितियां भी सामने आ सकती हैं, जिनकी किसी ने कल्पना तक न की हो। कहीं युद्ध छिड़ सकता है, कोई बीमारी फैल सकती है, भूकंप आ सकता है या कोई ऐसा कार्यक्रम सामने आ सकता है, जिसकी आपने योजना ही न बनाई हो। कभी आपकी यात्राएं रद्द करनी पड़

मेरी नजर में भरत

माधवी

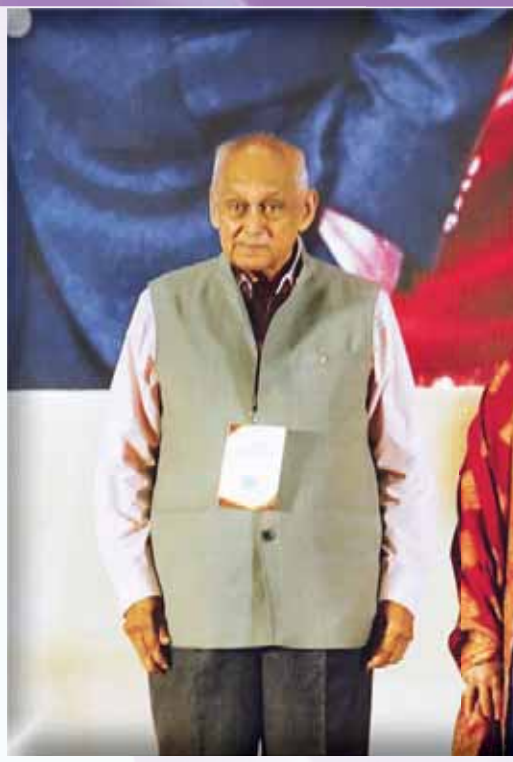


डॉ माधवी पंड्या

समारोह को संबोधित करते हुए भरत पंड्या की पत्नी माधवी पंड्या ने कहा कि जब आयोजकों ने उनसे मेरी नजर में भरत विषय पर बोलने के लिए कहा, तो वह सोचने लगीं कि क्या वे उनसे यह कहलवाना चाहते हैं कि भरत स्मार्ट, आकर्षक और हैंडसम हैं। हां, मेरी नजर में तो वे ऐसे हैं ही। लेकिन वे इससे कहीं बढ़कर हैं। वे बेहद ख्याल रखने वाले, संवेदनशील और सबसे बढ़कर अपने परिवार को पूरी अहमियत देने वाले इंसान हैं।

माधवी ने बताया कि भरत पंड्या रो ई के इतिहास में इस सर्वोच्च पद के लिए नामित होने वाले पहले जनरल सर्जन और दूसरे चिकित्सा विशेषज्ञ हैं। उन्होंने कहा कि सर्जन के रूप में उनके प्रशिक्षण और अनुभव ने उनके जीवन-मूल्यों को गढ़ने में अहम भूमिका निभाई है। सर्जरी में अंतर्ज्ञान, सही निर्णय लेने की क्षमता, सटीकता, साक्ष्यों पर आधारित कार्रवाई, टीमवर्क और नैतिकता बेहद जरूरी हैं। भरत अपने जीवन के हर क्षेत्र में इन्हीं गुणों को अपनाते हैं। माधवी ने बताया, लोग अक्सर मुझसे पूछते हैं कि रो ई अध्यक्ष-नामित की पत्नी होने का अनुभव कैसा है। मेरा जवाब होता है-बेशक, यह अद्भुत है। मन में गर्व है, खुशी है और कृतज्ञता भी।

लेकिन इन भावनाओं के साथ उन्हें यह एहसास भी है कि इस मुकाम तक पहुंचने का सफर अनेक लोगों के सहयोग, अनगिनत अनुभवों और वर्षों की प्रतिबद्धता से बना है। माधवी के अनुसार, भरत की इस उपलब्धि में उनके परिवार का सहयोग, माता-पिता और बड़ों का आशीर्वाद महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने कहा, मेरी दोनों बेटियों निधि और सश्मि ने भी परिवार के लिए अपना समय दिया और हर कदम पर हमारा पूरा साथ निभाया।



सकती हैं। कोविड के कारण रो ई अध्यक्ष होल्गर नाक को अपने कार्यकाल में घर से बाहर निकलने का अवसर तक नहीं मिला था। ऐसी परिस्थितियों की पहले से कल्पना नहीं की जा सकती। तब आपको अचानक सामने आई चुनौतियों का सामना करना होगा।

उन्होंने एक पूर्व रो ई अध्यक्ष का उदाहरण भी दिया, जो उनके करीबी मित्र थे। वे रो ई कर्मचारियों के खिलाफ भाषण देने लगे और उन्हें सार्वजनिक रूप से प्रचारित करने लगे। जब बातचीत से समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो रवींद्रन को उन्हें सख्त चेतावनी देनी पड़ी। इसके बाद उस पूर्व अध्यक्ष ने उनसे बात करना बंद कर दिया।

nSçm H$ {bE H$N Ah_ gbmh

पीआरआईपी के. आर. रवींद्रन ने भरत पंड्या को चार महत्वपूर्ण सुझाव दिए: अपने वर्ष की योजना बनाएं, लेकिन अनियोजित परिस्थितियों के लिए भी गुंजाइश रखें; कार्यकाल शुरू करने से पहले तय करें कि किन दो या तीन कामों के लिए आप याद किए जाना चाहते हैं; उन लोगों को भी खोजें, जो आपसे असहमत हों, और उनकी बात ध्यान से सुनें, क्योंकि वे कभी-कभी आपको खुद से जुड़ी किसी भूल से बचा सकते हैं; और जब अध्यक्ष का पद



रो ई अध्यक्ष-नामित डॉ भरत पंड्या और माधवी, रो ई के पूर्व अध्यक्षों कल्याण बेनर्जी, शेखर मेहता, के आर रवींद्रन और वनती के साथ।

आपको अकेलापन महसूस कराए, तो ऐसे पुराने मित्रों का सहारा लें, जिन्हें आपसे कोई पद, नौकरी या ओहदा नहीं चाहिए।

उन्होंने रोटेरियन्स से भी आग्रह किया कि वे अध्यक्ष-नामित पर जिम्मेदारियां सौंपने का अनावश्यक दबाव न डालें, उन्हें परेशानियों से बचाएं और चुनाव उचित तरीके से कराएं। साथ ही, रोटरी फाउंडेशन (टीआरएफ) और सदस्यता संबंधी लक्ष्यों को पूरा करने में उनका सहयोग करें। उन्होंने भरत पंड्या की इस मुकाम तक पहुंचने की यात्रा में उनकी पत्नी माधवी के योगदान को भी रेखांकित किया। रवींद्रन को विश्वास था कि पंड्या इस पद पर उत्कृष्ट काम करेंगे। उन्होंने कहा, ऐसा आपकी असाधारण याददाश्त या आपकी उपलब्धियों की लंबी सूची के कारण नहीं होगा, बल्कि इसलिए कि आप एक नेकदिल और भले इंसान हैं। संभवतः यही आपकी सबसे बड़ी योग्यता है।

जुलाई 2028 से भरत सिर्फ भारत के नहीं रहेंगे। वह नाइजीरिया, ब्राज़ील, जापान, जर्मनी, स्कैंडिनेविया और पूरी दुनिया के भी होंगे, ठीक वैसे ही जैसे वह बोरीवली के हैं। आइए, इस अध्यक्ष को दुनिया सौंप दें।

के आर रवींद्रन
am B H$ nd AÜ`j

अपनी बात समाप्त करते हुए उन्होंने कहा, याद रखिए, जुलाई 2028 से भरत केवल भारत का नहीं रह जाएगा। वह नाइजीरिया, ब्राजील, जापान, जर्मनी, स्कैंडिनेविया और दुनिया के हर हिस्से का भी होगा, ठीक वैसे ही जैसे वह बोरिवली का है। आइए, हम अपने इस अध्यक्ष को पूरी दुनिया सौंप दें।

पंड्या को अध्यक्ष-नामित बनने पर बधाई देते हुए पीआरआईपी कल्याण बनर्जी ने भारत से रो ई अध्यक्षों के चयन के इतिहास का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि भारत को अपना पहला रो ई अध्यक्ष 1962 में मिला था। दूसरे अध्यक्ष के लिए 30 साल इंतजार करना पड़ा, तीसरे के लिए 18 साल और चौथे के लिए 12 साल। पांचवें अध्यक्ष का चयन महज आठ साल बाद हो गया। उन्होंने कहा कि इस क्रम के बीच सुशील गुप्ता भी थे, जिनकी असाधारण प्रतिभा से यह सिलसिला टूटने वाला था, लेकिन दुर्भाग्यवश वे अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सके। भारत से चुने जाने वाले रो ई अध्यक्षों के बीच लगातार घटता अंतर इस बात का संकेत है कि रोटरी अब उत्कृष्ट नेतृत्व के लिए दक्षिण एशिया, खासकर भारत की ओर तेजी से देख रही है।

बेनर्जी ने कहा कि भरत पंड्या भारत से चुने जाने वाले पहले रो ई अध्यक्ष नहीं हैं, लेकिन उनकी पृष्ठभूमि उन्हें खास बनाती है। भारत के अन्य पूर्व रो ई अध्यक्ष किसी न किसी रूप में कोलकाता से जुड़े रहे हैं, जबकि पंड्या मुंबई से आने वाले पहले अध्यक्ष होंगे। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि चयन में क्षेत्र से अधिक महत्व व्यक्ति के गुणों का होता है। हमने उनकी उत्कृष्टता, गहन चिंतन, व्यापक ज्ञान, जमीन से जुड़े नेतृत्व और धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता के बारे में बहुत कुछ सुना है। वे एक प्रभावशाली वक्ता भी हैं। वे हमेशा दिखावे या भव्यता के पीछे नहीं

भागते, बल्कि जरूरत के समय मुस्कुराते हुए मदद के लिए मौजूद रहते हैं। मुझे विश्वास है कि रोटरी में उनका नेतृत्व एक और यादगार वर्ष साबित होगा।

पंड्या को बधाई देते हुए पीआरआईपी शेखर मेहता ने कहा कि उनका अध्यक्ष-नामित बनना केवल उनके लिए ही नहीं, बल्कि भारत के पूरे रोटरी आंदोलन के लिए सम्मान की बात है। हालांकि, यह अप्रत्याशित नहीं था। हम सभी जानते थे कि ऐसा जरूर होगा, क्योंकि वे इसके पूरी तरह हकदार हैं। रो ई अध्यक्ष बनने के लिए जिन गुणों की जरूरत होती है, वे सभी उनमें मौजूद हैं। मेहता ने कहा कि पंड्या शांत, संयमित और गरिमामय व्यक्तित्व के धनी हैं। उनका ज्ञान गहरा है, याददाश्त शानदार है और वे एक असाधारण वक्ता हैं। इन गुणों के साथ उनकी विनम्रता और सादगी उन्हें एक उत्कृष्ट नेता बनाती है। उनके अनुसार, यह नेतृत्व के लिए एक आदर्श संयोजन है।

उन्होंने कहा, यह उन सबसे रोमांचक जिम्मेदारियों में से एक है, जो किसी व्यक्ति को मिल सकती है। दुनिया के बहुत कम राष्ट्राध्यक्षों को भी ऐसे अवसर मिलते हैं, जैसा अवसर आपको मिलने जा रहा है। अगले तीन वर्षों में आप जितने देशों की यात्रा करेंगे और वहां जितना प्रेम व स्नेह पाएंगे, वह अविश्वसनीय होगा। आप इस अद्भुत संगठन में दुनिया भर के 1.4 मिलियन लोगों का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मेहता ने कहा कि रोटरी ऐसे बड़े लक्ष्यों और समस्याओं पर काम कर रही है, जिनसे दुनिया के नेता भी जूझते हैं। इनमें निरक्षरता दूर करना, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करना, उन्हें सशक्त बनाना-विशेष रूप से लड़कियों को-और स्वच्छ जल तथा स्वच्छता से जुड़ी चुनौतियां शामिल हैं। उन्हें पूरा विश्वास था कि पंड्या का अध्यक्षीय वर्ष रोटरी के इतिहास का एक और उज्ज्वल अध्याय बनेगा। इसके बदले उन्हें दुनिया भर के 1.4 मिलियन लोगों का प्यार और स्नेह मिलेगा। मेहता ने कहा, रोटरी में वर्षों की आपकी मेहनत के बदले अगले तीन वर्षों में आपको जो प्रेम और अपनापन मिलेगा, वही आपकी सबसे बड़ी कमाई होगी।

उन्होंने अपने ज़ोन्स के वर्तमान और आगामी रो ई निदेशकों से भी आग्रह किया कि वे इस क्षेत्र में रोटरी की सदस्यता बढ़ाकर दो लाख तक पहुंचाने के लिए पूरी मेहनत करें। मैं हमेशा कहता आया हूं कि हम रोटरी के कोहिनूर हैं। हम शानदार सेवा परियोजनाएं करते हैं और रोटरी फाउंडेशन में हमारा योगदान भी असाधारण है। अब जब हमारे क्षेत्र से एक नया नेता संगठन का नेतृत्व करने जा रहा है, तो हम मिलकर सचमुच कमाल कर सकते हैं। समारोह में रो ई अध्यक्ष-निर्वाचित लैरी लंसफोर्ड, रोटरी फाउंडेशन ट्रस्टी चेयर जेनिफर जोन्स, पूर्व रो ई अध्यक्ष राजेंद्र साबू, गॉर्डन मैकइनली और स्टेफनी अर्चिक तथा महासचिव जॉन ह्यूको के वीडियो संदेशों और लिखित बधाई संदेशों को भी प्रदर्शित किया गया या पढ़कर सुनाया गया।

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

भरत पंड्या ही थे पहली पसंद



पीआरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी और राजू सुब्रमणियन।

भरत पंड्या को रो ई अध्यक्ष के लिए चुनने वाली नामांकन समिति के सदस्य पीआरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी और राजू सुब्रमणियन ने बताया कि रो ई अध्यक्ष के चयन की प्रक्रिया किस तरह पूरी होती है। इस प्रक्रिया में रो ई के एक विशेष विभाग के साथ लगातार बातचीत और विचार-विमर्श किया जाता है। इसके बाद ऑनलाइन ओरिएंटेशन के जरिए समिति के सदस्यों को नामित उम्मीदवारों के आवेदन-पत्रों का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया समझाई जाती है।

सुब्रमणियन ने कहा, इस प्रक्रिया से गुजरने के बाद मैं रो ई के संचार तंत्र, सुव्यवस्थित प्रशासनिक ढांचे और लोकतांत्रिक भावना की सराहना करना चाहूंगा। मुझे रो ई महासचिव के दो स्पष्ट निर्देश आज भी याद हैं-हर उम्मीदवार से बातचीत करते समय पूरी संवेदनशीलता बरतें और छह उम्मीदवारों में से सर्वश्रेष्ठ का चयन करें। सुब्रमणियन ने कहा कि चयन के समय पंड्या इस पद के लिए सबसे उपयुक्त उम्मीदवारों में से एक के रूप में उभरे। वह उत्कृष्ट उम्मीदवारों में भी अपनी खास पहचान रखते थे। चयन समिति के एक सदस्य ने बाद में रात के खाने पर मुझसे कहा कि पंड्या की उम्मीदवारी को लेकर सभी की सहमति थी और मुकाबले जैसी कोई स्थिति नहीं थी।



'अर्थ डिटॉक्स' बोर्ड गेम का शुभारंभ। बाएं से: पीडीजी चेल्ला राघवेंद्रन, वाई कुमानन, डीजी आर एस मारुति, मंडल प्राथमिकता निदेशक ए एम रामकृष्णन, पीडीजी राजशेखर श्रीनिवासन, रामनारायण और रोटरी क्लब नेम्मारा के अध्यक्ष रामदास।

Rotary PEOPLE OF ACTION

सांप-सीढ़ी में पर्यावरण का ट्विस्ट!

जयश्री

सांप-सीढ़ी तो आपने खूब खेली होगी! लेकिन रोटरी क्लब ऑफ नेम्मारा, रो ई मंडल 3206 के रोटेरियन रामकृष्णन ने इस मशहूर खेल को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने वाला एक रोचक रूप दे दिया है। *अर्थ डिटॉक्स* नाम के इस खेल में पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करने पर इनाम मिलता है, जबकि प्रकृति को नुकसान पहुंचाने वाली आदतों की कीमत चुकानी पड़ती है।

मान लीजिए, आप उस खाने पर पहुंचते हैं जिस पर लिखा है, 'मैं अपने घर के बाहर कचरा फेंकता हूं।फ तो सांप आपको दो पायदान नीचे ले जाएगा। लेकिन अगर आप ङ्गमैं अपने मोहल्ले में पौधे लगाता हूं' वाले खाने पर पहुंच गए, तो सीढ़ी से एक पायदान ऊपर चढ़ जाएंगे! बोर्ड के सभी 100 खानों में पर्यावरण से जुड़े सकारात्मक या नकारात्मक संदेश हैं। पासे की चाल के साथ खिलाड़ी इन संदेशों के मुताबिक आगे बढ़ते हैं या नीचे फिसलते हैं।

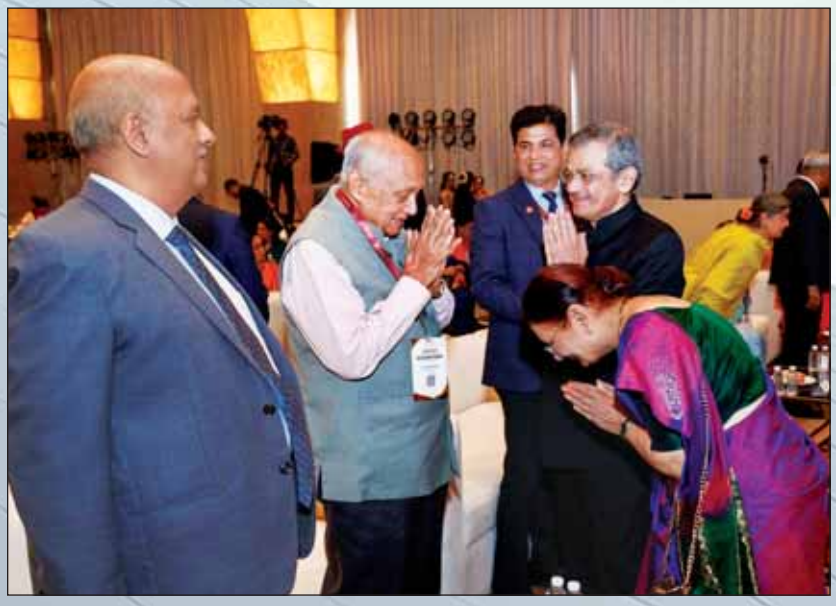
मेरा मकसद सांप-सीढ़ी जैसे जाने-पहचाने खेल को पर्यावरण की सीख देने का एक मजेदार माध्यम बनाना था। अर्थ डिटॉक्स के हर खाने में पर्यावरण से जुड़ा कोई संदेश या व्यवहार है। अच्छी आदतें खिलाड़ी को सीढ़ी से ऊपर ले जाती हैं, जबकि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियां उन्हें सांप के रास्ते नीचे पहुंचा देती हैं, रामकृष्णन बताते हैं। वह कई वर्षों से पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी जिम्मेदारियां निभाते आए हैं। इनमें WASRAG एम्बेसडर, WINS चेयर और नदी संरक्षण के लिए मंडल चेयर की भूमिकाएं शामिल हैं। इस खेल का विचार तब आया, जब रो ई मंडल 3206 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर आर एस मारुति ने हर रोटेरियन को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करने का अपना दृष्टिकोण सामने रखा। चुनौती थी कि इस संदेश को पारंपरिक अभियानों से आगे ले जाकर ऐसा रूप दिया जाए, जिसमें रोटेरियंस, उनके परिवार और समुदाय के लोग सक्रिय रूप से हिस्सा लें और सीख को लंबे समय तक याद रखें।

''जब डीजी मारुति ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर अपना दृष्टिकोण सामने रखा, तो सवाल था कि इस संदेश को सामान्य अभियान से आगे कैसे ले जाएं। ऐसा माध्यम चाहिए था, जिससे रोटेरियंस, उनके परिवार और समुदाय के लोग जुड़ सकें, उसे याद रख सकें और उस पर अमल भी करें। इसी सोच से अर्थ डिटॉक्स बोर्ड गेम का जन्म हुआ। यह भागीदारी और मनोरंजन के जरिए लोगों की आदतों में बदलाव लाने का एक प्रयास है,'' रामकृष्णन कहते हैं। डीजी मारुति ने एक मेंबरशिप सेमिनार में इस खेल का औपचारिक शुभारंभ किया। अब इसकी PDF रोटेरियंस, रोटरेक्टर्स, इंटरेक्टर्स, स्कूलों, हाउसिंग सोसायटियों और अन्य सामुदायिक समूहों के बीच साझा की जा रही है। खिलाड़ी इसे डाउनलोड करके प्रिंट कर सकते हैं, कार्डबोर्ड पर चिपका सकते हैं और खेल शुरू कर सकते हैं।

हमारा उद्देश्य पर्यावरण की देखभाल पर बातचीत शुरू करना और लोगों में इसके प्रति जागरूक व संवेदनशील नजरिया विकसित करना है, वह कहते हैं। इस बोर्ड गेम को लेकर पूरे मंडल में अंतर-स्कूल प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जा रही हैं। रोटरी क्लब के सदस्य अपनी साप्ताहिक बैठकों के बाद भी यह खेल खेलते हैं। इस तरह पर्यावरण संरक्षण का संदेश न सिर्फ चर्चा में बना रहता है, बल्कि एक आसान और दिलचस्प गतिविधि के जरिए लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा भी बनता है। ■

अभिनंदन





रो ई अध्यक्ष-नामित भरत पंड्या और माधवी अपने नवनियुक्त सहयोगियों पीआरआईडी राजू सुब्रमणियन और विद्या का अभिवादन करते हुए।
XmE: आरआईपीएन पंड्या और उनकी बेटी डॉ निधि।



आरआईपीएन पंड्या और माधवी, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी का अभिवादन करते हुए। पीआरआईपी शेखर मेहता और रो ई निदेशक के पी नागेश भी मौजूद हैं।
XmE: आरआईपीएन पंड्या और माधवी का स्वागत करते हुए पीआरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी, टीआरएफ के पूर्व ट्रस्टी गुलाम वाहनवटी, पीआरआईडी महेश कोटबागी, अमिता, वनती, पीआरआईपी के आर रवींद्रन और आरआईडी नागेश।



पीआरआईपी के आर रवींद्रन, विद्या और वनती रवींद्रन।





D$na X|E: आरआईपीएन पंड्या, पीआरआईडी सुब्रमणियन के साथ।

ZrM, ~|E g: अमनदीप सेखों, आरआईडी नागेश और आरआईडीई गुरजीत सिंह सेखों।







~|E g: पीआरआईपी बेनर्जी, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, माधवी, आरआईपीएन पंड्या और पीआरआईपी रवींद्रन।



वनती और पीआरआईपी रवींद्रन।



नयनतारा और पीआरआईडी अशोक महाजन।



पीआरआईडी प्रभाकर, टीआरएफ के पूर्व ट्रस्टी वाहनवटी, पीआरआईडी कोटबागी, अमिता और पीआरआईडी रॉयचौधरी।



आरआईपीएन पंड्या और माधवी।
ZtM: रो ई मंडल 3141 के डीजी राजन दुआ (बाएं) और रो ई मंडल 3142 के डीजी निलेश जयवंत।



आरआईडीई बसु देव गोल्यान और उनकी पत्नी कुमुद।



चित्र : रशीदा भगत और रोटेरियन प्रकाश पटेल।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

ADVT.

For what's precious, choose a place built on trust

Sakthi LOCKERS
Since 1988



State-of-the-art security

Convenient working Hours
10:00 AM - 06:00 PM | Monday - Saturday

Unlimited number of free locker operations in a year

Simple documentation & Immediate locker allotment

SECURE YOUR JEWELLERY DOCUMENTS & VALUABLES

Limited large and extra large lockers available

Reserve your locker today
73977 30308

OUR BRANCHES IN CHENNAI

- Anna Nagar West - Opposite to Babu towers
- Besant Nagar - Opp to Annai Velankanni Church Bus Stop
- KK Nagar - Near Art interiors.
- T. Nagar - Near Hotel Quality Inn Sabari
- Mylapore - Near Mylai Medical Center
- Nanganallur - Near GRT Jewellery

Sakthi Vaults & Wealth Ltd.

Protect . Preserve . Prosper

चेन्नई के एनट्स ने फतह की किलिमंजारो चोटी

जयश्री

रात के दो बजे थे। चारों ओर अंधेरा था, तेज हवा चल रही थी और मंजिल अभी कई घंटे दूर थी। चेन्नई के द स्कूल केएफआई में दसवीं कक्षा के विद्यार्थी ओवियम और 13 से 18 वर्ष की उम्र के तीन अन्य एनट्स अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी माउंट किलिमंजारो की अंतिम चढ़ाई शुरू करने वाले थे। ठंड के बीच उन्हें बस आगे बढ़ते रहना था। ओवियम बताते हैं, जब चढ़ाई बहुत मुश्किल लगने लगती, तो मैं खुद से कहता - बस दस कदम और, फिर दस कदम और।

14 से 18 मई, 2026 के दौरान इस समूह ने 5,895 मीटर ऊंची किलिमंजारो चोटी पर पहुंचकर इतिहास रचा। उनके साथ ओवियम के पिता लक्ष्मणन कृष्ण थे, जो रोटेरियन विद्या रघु के पति हैं और ट्रेकिंग का अच्छा अनुभव रखते हैं।

ओवियम 2022 में एवरेस्ट बेस कैंप तक ट्रेकिंग कर चुके थे। जब परिवार एक और पर्वत अभियान की योजना बना रहा था, तो उन्होंने किलिमंजारो जाने का सुझाव दिया। उनके पिता राजी हो गए और तीन अन्य किशोर भी इस अभियान से जुड़ गए। इनमें रोटेरियन सेंथिल पलानीस्वामी के बेटे तमिळ इनियन (18) और तमिळ इनबन (14), तथा रोटेरियंस अंजलि और प्रवीण के बेटे अयान (13) शामिल थे। ये सभी रोटरी क्लब ग्लोबल नेक्सस, रोई मंडल 3234 से जुड़े हैं।

बोर्ड परीक्षाएं नजदीक होने के कारण ओवियम को पढ़ाई और शारीरिक प्रशिक्षण के बीच संतुलन बनाना पड़ा। गर्मी की छुट्टियों में वह नियमित रूप से जिम जाते थे और अपनी ताकत तथा सहनशक्ति बढ़ाने के लिए निजी ट्रेनर के साथ अभ्यास करते थे। अभियान से एक सप्ताह पहले कृष्ण बच्चों को कर्नाटक के गोकर्ण ले गए। ओवियम बताते हैं, ''हमने इसे मजेदार गतिविधि बना दिया। समुद्र तट पर दौड़ते और आसपास की पहाड़ियों पर चढ़ते थे। इससे हमारी सहनशक्ति बढ़ी।''

लेकिन पहाड़ पर उन्हें कुछ ऐसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिनकी उन्होंने कल्पना नहीं की थी। उन्हें पता था कि चोटी पर पहुंचने वाले दिन तेज हवाएं चलेंगी, लेकिन उससे पहले के दिन भी कम मुश्किल नहीं थे। एक घाटी पार करते समय आसपास की ढलानों से तेज झोंके आने लगे। संतुलन बनाकर चलना मुश्किल हो गया। आखिरकार, आगे बढ़ने से पहले उन्होंने चट्टानों के पीछे शरण लेकर कुछ देर आराम किया।

ओवियम को घाटी में दोपहर के भोजन का एक बेहद ठंडा अनुभव भी याद है। उन्हें मांस के साथ गरम आलू का स्टू परोसा गया था, लेकिन तेज हवा के कारण खाना मुश्किल हो गया। वह कहते हैं, खाना पल भर में ठंडा हो गया। मैंने मुश्किल से दो-चार चम्मच खाए और फिर छोड़ दिया।

दस कदम और, फिर दस कदम

18 मई को चोटी तक पहुंचने के लिए समूह ने रात दो बजे ही चढ़ाई शुरू कर दी। उनका उद्देश्य था कि दिन निकलने से पहले अधिक से अधिक दूरी तय कर ली जाए। ओवियम कहते हैं, जब चोटी दिखाई नहीं देती, तो आप बस चलते रहते हैं और आखिरकार



~E g: ओवियम, तमिळ इनियन, अयान और तमिळ इनबन।

वहां पहुंच जाते हैं। दिन की रोशनी में चोटी इतनी ऊंची दिखती है कि हौसला टूट सकता है।

सूरज निकलने के साथ थकान बढ़ने लगी। ओवियम ने अपना ध्यान एक बार में दस कदम चलने पर केंद्रित किया, जबकि उनके दोस्त एक-दूसरे का हौसला बढ़ाते रहे। वह बताते हैं, हम सब साथ थे और एक-दूसरे की मदद करते हुए ऊपर बढ़ रहे थे। हमारे गाइड तंजानिया का संगीत बजाते थे, जिससे हमारा उत्साह बना रहता था। कई परतों वाले गर्म कपड़े पहनने के बावजूद तेज हवाओं के कारण ठंड और बढ़ गई थी।

ट्रेकिंग के तीन जरूरी नियम

कृष्ण ने अभियान से पहले बच्चों को तीन बुनियादी बातें समझाई थीं - पर्याप्त नींद लेना, भरपेट खाना और शरीर में पानी की कमी न होने देना।

वह कहते हैं, रात में फोन चलाते हुए देर तक मत जागो, क्योंकि अगले दिन लंबी चढ़ाई के लिए पर्याप्त नींद जरूरी है। अपनी पसंद का खाना खाओ, क्योंकि कार्बोहाइड्रेट से ऊर्जा मिलती है, लेकिन जरूरत से ज्यादा मत खाओ। रोज दो से तीन लीटर पानी पियो, भले ही प्यास न लगी हो।



किलिमंजारो ट्रेक के बाद वन्यजीव सफारी पर इनबन, इनियन, ओवियम और अयान।



उन्होंने बच्चों को एक ऐसा वाक्यांश भी सिखाया, जो पहाड़ पर बार-बार सुनने को मिलता है - *पोले पोले,* जिसका स्वाहिली भाषा में अर्थ है 'धीरे-धीरे'। कृष्ण कहते हैं, हमने शुरुआत से लेकर अंत तक इसी रफ्तार से चढ़ाई की। हर हाल में अपनी गति धीमी रखी, ताकि सांस लेने का समय मिलता रहे।

चार साल की उम्र से पहाड़ों का साथ

कृष्ण को 2016 में पूरे भारत की सड़क यात्रा के दौरान पहाड़ों में दिलचस्पी हुई। तब से वह हिमालय और रूस के काकेशस पर्वतों में ट्रेकिंग कर चुके हैं और कई बार एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंच चुके हैं। उनकी पत्नी विद्या भी ट्रेकिंग की शौकीन हैं।

वह मुस्कुराते हुए बताते हैं, हम ओवियम को पहली बार चार साल की उम्र में पहाड़ों पर ले गए थे। उत्तराखंड की उस यात्रा में वह 10,000 फीट की ऊंचाई तक पैदल चढ़ा। मुश्किल रास्तों पर हमने उसे गोद में उठाने की पेशकश की, लेकिन उसने मना कर दिया।

कृष्ण के लिए किलिमंजारो अभियान यह देखने का अवसर भी था कि परिचित माहौल से दूर, कठिन परिस्थितियों में ये किशोर किस तरह खुद को संभालते हैं। उनकी स्वतंत्रता और जिम्मेदारी की भावना ने उन्हें सुखद आश्चर्य में डाल दिया।

वह कहते हैं, लोगों ने मुझसे कहा था कि चार बच्चों को संभालना मुश्किल होगा। लेकिन मुझे एक मिनट के लिए भी उन्हें संभालने की जरूरत नहीं पड़ी। सच तो यह है कि उन्होंने मुझे बहुत अच्छी तरह संभाला।

खराब मौसम और कठिन रास्तों के बावजूद बच्चों के डटे रहने की सराहना करते हुए वह कहते हैं, मैं इन लड़कों की तारीफ करता हूं कि उन्होंने हवा, मौसम और दुर्गम रास्तों की चुनौतियों के बावजूद आगे बढ़ने का फैसला किया। पहाड़ हमसे कहीं अधिक विशाल और शक्तिशाली है। इनमें से ज्यादातर को ट्रेकिंग का ज्यादा अनुभव नहीं था, फिर भी उनके साहस और दृढ़ संकल्प ने मुझे प्रभावित किया।

अगली मंजिल, एक और चोटी

ट्रेकिंग पूरी करने के बाद समूह ने दो दिन सफारी में बिताए और वन्यजीवों को करीब से देखा। इस अभियान पर प्रति प्रतिभागी 3,000 डॉलर खर्च हुए। पांचों पर्वतारोहियों के साथ 22 सदस्यों का एक सहयोगी दल था, जो उनके लिए भोजन तैयार करता, सामान उठाता और रास्ते में मार्गदर्शन देता था।



किलिमंजारो की चोटी पर क्लब का ध्वज थामे एनेट परिवार।



लक्ष्मणन कृष्ण (बाएं) ट्रेकिंग टीम के साथ भोजनावकाश के दौरान।

कृष्ण कहते हैं, मैंने दल के सदस्यों का चुनाव सोच-समझकर किया था। मैं खर्च बचाने के लिए जरूरी सुविधाओं से समझौता नहीं करना चाहता था और बाद में परेशानी नहीं उठाना चाहता था।

ओवियम के लिए यह अभियान एक अविस्म रणीय अनुभव है। अब उनकी नजर रूस के माउंट एल्ब्रुस या आल्प्स की मों ब्लां चोटी पर है।

अयान बताते हैं कि किबो तक की चढ़ाई अभियान का दूसरा सबसे मुश्किल हिस्सा था, जबकि अंतिम चढ़ाई सबसे चुनौतीपूर्ण रही। वह कहते हैं, एक जगह ढलान करीब 70 डिग्री रही होगी। वहां पैदल चढ़ना सबसे कठिन था। शारीरिक चुनौतियों के बावजूद वह इस अनुभव को शानदार बताते हैं।

चोटी पर पहुंचकर इन युवा पर्वतारोहियों ने रो ई मंडल 3234 का ध्वज फहराया और उसे अफ्रीका की सबसे ऊंची चोटी तक पहुंचाया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रो ई मंडल 3262 में सेवा की नई मिसाल

वी मुत्तुकुमारन

ओडिशा के राज्यपाल कंभमपति हरि बाबू ने भुवनेश्वर में रो ई मंडल 3262 के तत्कालीन डिस्ट्रिक्ट गवर्नर मनोज कुमार त्रिपाठी को टाइम्स आइकॉन अवॉर्ड से सम्मानित किया। उन्हें प्रभावशाली सेवा परियोजनाओं के जरिए समुदायों में बदलाव लाने के लिए यह सम्मान मिला। रोटरी क्लब श्री जगन्नाथ धाम के सदस्य त्रिपाठी कहते हैं, ''ओडिशा के 25 राजस्व जिलों में फैले हमारे 120 रोटरी क्लबों और 4,000 से अधिक रोटेरियंस के लिए यह गर्व का क्षण था।''

उनके कार्यकाल में मंडल ने कई उपलब्धियां हासिल कीं। पहली बार सीएसआर कार्यक्रम शुरू हुआ, विश्व शांति के संदेश के साथ रेत पर बुद्ध की विशाल कलाकृति बनाकर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया, मंडल के पहले घड सदस्य को शामिल किया गया और *प्रोजेक्ट मददगार* के तहत ग्रामीण महिलाओं को घरेलू उपयोग के उपकरण दिए गए।

मंडल ने ₹2.1 करोड़ की तीन ग्लोबल ग्रांट परियोजनाएं भी पूरी कीं। इनमें पुरी में 50,000 डॉलर की लागत से डायग्नोस्टिक सेंटर, 65,000 डॉलर से रोटरी जलेश्वर आई हॉस्पिटल और 48,000 डॉलर की फेको मशीन रोटरी बालासोर आई हॉस्पिटल को देना शामिल था। त्रिपाठी बताते हैं, हमने रो ई मंडल 9216, केन्या की एक ग्लोबल ग्रांट परियोजना के लिए अपने डिस्ट्रिक्ट डेजिग्नेटेड फंड (DDF) से 6,000 डॉलर दिए। इसके तहत इथियोपिया के एक गरीब इलाके में खाद्य सामग्री बांटी गई।

ओडिशा के वन एवं पर्यावरण मंत्री गणेश राम सिंह खुंटिया ने त्रिपाठी और उनके क्लबों की सराहना की। *प्रोजेक्ट मददगार* के तहत एक ही दिन में 1,000 से अधिक ग्रामीण महिलाओं को सिलाई मशीनें, वेट ग्राइंडर, श्रवण यंत्र, कृत्रिम अंग और व्हीलचेयर दिए गए। *मिशन सक्षम* के तहत 2,500 अंग-विहीन लोगों को ट्राइसाइकिल और कृत्रिम अंग उपलब्ध कराए गए। वहीं, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (IOCL) से मिले 50,000 डॉलर के सीएसआर अनुदान से रोटरी बालासोर आई हॉस्पिटल को एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एम्बुलेंस दी गई।



पीडीजी मनोज कुमार त्रिपाठी (बाएं से तीसरे) और उनकी पत्नी मधुस्मिता की मौजूदगी में सिलाई मशीनें, वेट ग्राइंडर, व्हीलचेयर और श्रवण यंत्र वितरित करते ओडिशा के मंत्री गणेश राम सिंह खुंटिया।

aV na CH$am em{V H$m gXe

पुरी में दया नदी के पास कलिंग युद्ध स्मारक पर सप्ताहभर चले कार्यक्रम में रेत से लेटे हुए बुद्ध की 144x53 फीट की विशाल कलाकृति बनाई गई। इसे देखने करीब 10 लाख लोग पहुंचे। त्रिपाठी कहते हैं, ''हम युद्ध नहीं, शांति चाहते हैं संदेश के साथ बनाई गई बुद्ध की इस कलाकृति को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में जगह मिली। इससे पूरे राज्य में रोटरी की पहचान मजबूत हुई।''

ओडिशा के राजस्व मंत्री सुरेश पुजारी ने भी रोटरी की सराहना करते हुए कहा कि दुनिया के कई हिस्सों में बड़े संघर्षों के बीच मानवता को वैश्विक शांति का संदेश देना बेहद महत्वपूर्ण है। त्रिपाठी के कार्यकाल में 173 नए सदस्य रोटरी से जुड़े और पांच नए क्लब शुरू हुए। वे कहते हैं, मेरे कार्यकाल में हमारे क्लबों ने 250 से 270 बड़ी सेवा परियोजनाएं पूरी की होंगी, जिनकी कुल लागत करीब ₹12 करोड़ रही होगी।

रोटरी फाउंडेशन के लिए उन्होंने 2,62,000 डॉलर का योगदान दिया। उनके प्रयासों से मंडल को पहला KS सदस्य मिला। इसके अलावा 12 नए मेजर डोनर, 565 नए पॉल हैरिस फेलो और पॉल हैरिस सोसाइटी के 31 नए सदस्य जुड़े। वे मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''मैंने 25,000 डॉलर के दो एंडोमेंट फंड भी शुरू किए हैं।''

2002 में रोटरी से जुड़े त्रिपाठी का मानना है कि वंचित समुदायों का जीवन बेहतर बनाने के लिए लंबे समय तक चलने वाली, टिकाऊ परियोजनाएं जरूरी हैं। वे कहते हैं, ''रोटरी के काम और दुनिया भर में उसकी पहुंच के बारे में आम लोगों को बताने के लिए जनसंपर्क की पहल भी नियमित रूप से होनी चाहिए।'' उनकी पत्नी मधुस्मिता पिछले वर्ष रो ई मंडल 326 के इनर व्हील की अध्यक्ष थीं। ■

संगीत के सुरों से जुड़ते रोटेरियन

रशीदा भगत

रोटेरियनों में संगीत के शौकीनों की कमी नहीं है। कुछ लोग गाते हैं, कुछ संगीत कार्यक्रमों में प्रस्तुति भी देते हैं, लेकिन ज्यादातर लोगों को अपनी आवाज़ दूसरों तक पहुंचाने का मौका नहीं मिल पाता। ऐसे ही संगीत प्रेमियों के लिए *International Fellowship of Rotarian Musicians (IFRM)* एक ऐसा मंच है, जहां वे अपनी प्रतिभा साझा कर सकते हैं।

रो ई मंडल 3191 में रोटरी क्लब बेंगलुरु साउथ परेड के पूर्व अध्यक्ष रवि चक्रवर्ती कहते हैं, हममें से कुछ खुद गाते हैं, कुछ किसी न किसी रूप में संगीत कार्यक्रमों में प्रस्तुति देते हैं। लेकिन बहुत कम लोगों को ऐसा करने का नियमित अवसर मिलता है। IFRM ऐसे लोगों को संगीत पसंद करने वाले दूसरे रोटेरियनों के साथ अपनी प्रतिभा साझा करने का बेहतरीन मंच देता है।

IFRM की शुरुआत 1972 में अमेरिका में हुई थी। इसका उद्देश्य रोटरी क्लबों में संगीत के प्रति रुचि और उसकी सराहना को बढ़ावा देना तथा संगीत के माध्यम से आपसी समझ और दोस्ती को मजबूत करना था।

भारत में IFRM की शुरुआत 2010 में रो ई मंडल 3190 में बेंगलुरु के रोटेरियन नागेश सिद्धांती ने की। आज यह फेलोशिप देश के कई मंडलों तक पहुंच चुकी है। IFRM का मकसद सिर्फ गाना-बजाना नहीं, बल्कि संगीत के जरिए रोटेरियनों को जोड़ना है। इसमें समूह में गायन, संगीत कार्यक्रम, वाद्य यंत्र बजाना, नृत्य और लाइव ऑर्केस्ट्रा जैसी गतिविधियां होती हैं। फेलोशिप के सदस्य दुनिया भर में संगीत से जुड़े प्रोजेक्ट भी करते हैं और रोटरी आयोजनों में संगीत प्रस्तुतियां देते हैं।

IFRM के ग्लोबल चेयर पद्मनाभन (पैडी) अय्यर कहते हैं कि यह फेलोशिप रोटेरियनों, रोटरी एलुमनी, उनके जीवनसाथियों और दोस्तों को संगीत का आनंद साथ मिलकर लेने का अवसर देती है। संगीत सुनने से लेकर प्रस्तुति देने तक, IFRM संगीत से प्रेम करने वालों के लिए एक मंच है। हम एक नई रोटरी सॉन्गबुक पर भी

~E g: पीडीजी कैलाश जेठानी, आईएफआरएम वापी चैप्टर के क्षेत्रीय अध्यक्ष, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, आईएफआरएम के वैश्विक अध्यक्ष पद्मनाभन अय्यर, आईएफआरएम वापी की सचिव अमीषा मेहता, अध्यक्ष रूपल दमानी और रो ई मंडल 3060 के डीजीएन विपुल पटेल।





बेंगलुरु में एक संगीत कार्यक्रम में आईएफआरएम क्षेत्रीय समन्वयक (ज़ोन 7) रवि चक्रवर्ती (बीच में, काली शर्ट में) रो ई मंडल 3191 के आईएफआरएम सदस्यों के साथ।

काम कर रहे हैं। वेबसाइट और सोशल मीडिया के जरिए सदस्य पूरे साल जुड़े रहते हैं। हमारी वर्चुअल ज़ूम क्वायर IFRM Sings भी है। इसके अलावा *Stacatto* और Music Notes न्यूज़लेटर के जरिए सदस्यों को गतिविधियों की जानकारी मिलती रहती है। चक्रवर्ती के अनुसार, तीन साल की सदस्यता शुल्क सिर्फ 35 डॉलर है और इससे दुनिया भर के संगीत प्रेमी रोटेरियनों से मिलने और दोस्ती करने का मौका मिलता है। उन्होंने 2020 में रोटरी से जुड़ने के कुछ ही महीनों बाद IFRM की सदस्यता ले ली थी। आज वह इसके रीजनल कोऑर्डिनेटर हैं।

भारत में IFRM की शुरुआत के बाद शुरुआती सात-आठ वर्षों तक इसकी गतिविधियां मुख्य रूप से रो ई मंडल 3190 तक सीमित रहीं। बाद में ठाणे के रोटेरियन पैडी अय्यर ने इसे रो ई मंडल 3142 तक पहुंचाया और IFRM इंडिया के वाइस चेयर के रूप में देश में इसका विस्तार शुरू किया।



काफी पुनर्गठन के बाद आज IFRM भारत के कई मंडलों में सक्रिय है। देश में इसके 54 चैप्टर और करीब 1,800 सदस्य हैं। दुनिया भर में IFRM के लगभग 3,400 सदस्य हैं-यानी आधे से ज्यादा सदस्य भारत में हैं।

बेंगलुरु चैप्टर में 85 से ज्यादा सदस्य हैं और हर महीने एक बैठक होती है। चक्रवर्ती बताते हैं, बैठक कभी होटल में तो कभी किसी दूसरी जगह होती है। करीब पांच-छह घंटे तक गाना, संगीत, खाना और खूब मस्ती होती है। आमतौर पर रविवार की सुबह होने वाले इन कार्यक्रमों में 40-45 सदस्य शामिल होते हैं। बॉलीवुड और दक्षिण भारतीय फिल्मों के लोकप्रिय गीत गाए जाते हैं। ज्यादातर प्रस्तुतियां कराओके पर होती हैं, जबकि साल में दो बार लाइव संगीत की व्यवस्था भी की जाती है।

मूल विचार यही है कि हर सदस्य को दूसरों के सामने गाने का मौका मिले। लाइव संगीत के साथ गाने का अपना ही आनंद है। रोटरी और फेलोशिप की बात करें तो यह ऐसा मंच है जहां

हम अपनी साझा रुचि-संगीत-के जरिए एक-दूसरे से जुड़ते हैं, चक्रवर्ती कहते हैं।

कर्नाटक में होने के कारण स्वाभाविक रूप से सवाल उठता है कि क्या IFRM में शास्त्रीय या कर्नाटक संगीत के लिए भी जगह है। चक्रवर्ती बताते हैं कि इस साल की शुरुआत में शास्त्रीय संगीत के लिए एक नया चैप्टर शुरू किया गया है। हालांकि अभी सदस्यों से शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करने के लिए नहीं कहा जाता, क्योंकि उनमें से बहुत कम लोग इसके प्रशिक्षित कलाकार हैं। बेंगलुरु चैप्टर कभी-कभी दो घंटे के संगीत कार्यक्रम भी आयोजित करता है, जिनमें पेशेवर गायक प्रस्तुति देते हैं। दिसंबर के मशहूर चेन्नई संगीत सत्र में अभी तक चैप्टर की पहुंच नहीं बनी है, लेकिन दिसंबर 2024 में लोनावाला में दो दिन का एक विशेष आयोजन किया गया था। इसमें सभी IFRM चैप्टरों को आमंत्रित किया गया था और 100 से ज्यादा लोग इसमें शामिल हुए।

जून 2026 में बेंगलुरु चैप्टर ने डीहि नेपश IFRM खवेश्र प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें दक्षिण भारत के आठ चैप्टरों से करीब 40 सदस्य शामिल हुए। इसी दौरान रो ई मंडल 3190 से अलग होकर 3191 और 3192 बने। पिछले एक साल में इन दोनों मंडलों में IFRM के छह नए चैप्टर जुड़े हैं। इस तरह अब दोनों मंडलों में कुल आठ म्यूजिशियन फेलोशिप चैप्टर हैं। चक्रवर्ती के अनुमान के मुताबिक भारत में IFRM के 1,800 सदस्यों में करीब एक-चौथाई महिलाएं हैं। वे बताते हैं कि महिलाएं बैठकों में सक्रिय रूप से हिस्सा लेती हैं। हम उन्हें प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि युगल गीतों के लिए महिला गायिकाओं की भी जरूरत होती है, वे मुस्कुराते हुए कहते हैं।

भारत में IFRM का सबसे नया चैप्टर अगस्त 2026 में वलसाड जिले के वापी, रो ई मंडल 3060 में शुरू हुआ। इसके गठन में डीजीएन विपुल पटेल और पीडीजी कैलाश जेठानी की अहम भूमिका रही। इस नए चैप्टर का नाम *Sur Maitri* रखा गया है। 75 सदस्यों वाले इस चैप्टर ने पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी का आजीवन सदस्य के रूप में स्वागत किया। पटेल बताते हैं कि सदस्य हर तीन महीने में मिलेंगे। हमारा रो ई मंडल बहुत बड़ा है, इसलिए हम अलग-अलग शहरों में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना रहे हैं, ताकि ज्यादा से ज्यादा सदस्य इसमें शामिल हो सकें



और संगीत, नृत्य और गायन से भरी शाम का आनंद ले सकें।

3 अक्टूबर को सूरत में हुए चैप्टर के पहले कार्यक्रम में गुजरात की जीवंत गरबा संस्कृति की झलक देखने को मिली। पारंपरिक संगीत और नृत्य से सजी यह शाम यादगार बन गई। पटेल कहते हैं कि IFRM की पूरी भावना इसी विचार पर टिकी है-जहां शब्द साथ छोड़ देते हैं, वहां संगीत बोलता है और जहां दिलों में दूरी होती है, संगीत उन्हें करीब लाता है। आज हम सिर्फ एक संगठन का जश्न नहीं मना रहे, बल्कि 1972 में जन्मे उस खूबसूरत विचार का उत्सव मना रहे हैं कि संगीत दोस्ती, फेलोशिप और दुनिया को समझने की एक सार्वभौमिक भाषा बन सकता है। पांच दशकों से अधिक समय से IFRM ने अलग-अलग देशों, संस्कृतियों और महाद्वीपों के रोटेरियनों और संगीत प्रेमियों को जोड़ा है।

पीडीजी कैलाश जेठानी कहते हैं कि IFRM की असली खूबसूरती यही है कि इसका हिस्सा बनने के लिए पेशेवर संगीतकार होना जरूरी नहीं। बस संगीत से प्यार होना चाहिए। चार्टर मीट में शामिल पैडी अय्यर ने भी कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि यह शाम खुशियों, फेलोशिप और शानदार संगीत से भरी थी। बेहतरीन प्रस्तुतियों और दिल को छू लेने वाले गीतों ने इस शाम को यादगार बना दिया। ■



रोटरी कन्वेंशन में प्रस्तुति देते आईएफआरएम सदस्य।

बेंगलुरु में कैंसर जागरूकता दौड़

टीम रोटरी न्यूज़

गांधी जयंती (2 अक्टूबर) पर बेंगलुरु में आयोजित छठी रोटरी 5के कैंसर जागरूकता पीस रन में 500 से अधिक विद्यार्थियों, युवाओं, रोटेरियन और रोटरेक्टरों ने हिस्सा लेकर कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ शांति, स्वस्थ जीवनशैली और सामुदायिक एकजुटता का संदेश दिया।



रो ई मंडल 3192 के डी जी रविशंकर डाकोजू (दाएं से तीसरे) पीस रन का उद्घाटन करते हुए।

इस वार्षिक दौड़ का आयोजन रोटरी क्लब बेंगलुरु जलाहल्ली, रो ई मंडल 3192 ने इंडियन कैंसर सोसाइटी, सेंट क्लेरेट कॉलेज और कॉलेज के रोटरेक्टरों के सहयोग से किया।

डीजी रविशंकर डाकोजू और डीजीएन रेणुकेश्वरस्वामी एस आर ने कॉलेज के प्राचार्य थॉमस थेनाडियिल, इंडियन कैंसर सोसाइटी की डॉ एस पवित्रा और क्लब अध्यक्ष नील राजन की मौजूदगी में दौड़ को संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाई।

रोटरी क्लब ने राष्ट्रीय तैराक चित्रा और पेंटाथलॉन विश्व चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता धैर्य नवीन को सम्मानित किया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सेवा के साथ रजत जयंती का उत्सव

रशीदा भगत

मुंबई के इस रोटरी क्लब ने अपनी रजत जयंती को 25 खास सेवा परियोजनाओं के जरिए यादगार बनाने की पहल की है।

सेवा के क्षेत्र में नए प्रयोगों के लिए पहचाने जाने वाले मुंबई के रोटरी क्लब बॉम्बे बे व्यू, रोई मंडल 3141 के 150 से अधिक सदस्य इस साल अपनी रजत जयंती मना रहे हैं। इस खास वर्ष के लिए क्लब ने एक सरल और आकर्षक थीम चुनी है - बे व्यू केयर्स।

जयंती का उत्सव पूरे साल मनाने के लिए क्लब नेतृत्व ने सदस्यों से अपील की है कि वे अपने जन्मदिन पर एक छोटा-सा अतिरिक्त कदम उठाएं। वे चाहें तो क्लब की किसी सामुदायिक सेवा परियोजना में सहयोग के लिए ₹2,500 का योगदान दे सकते हैं। विचार सीधा है - जन्मदिन की मेज पर एक अतिरिक्त व्यक्ति के लिए जगह बनाने जितने छोटे प्रयास से भी समाज में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। सदस्यों का यह योगदान रजत जयंती के अवसर पर आयोजित की जा रही 25 विशेष सेवा गतिविधियों के लिए किट, सामग्री और जनसंपर्क कार्यक्रमों का खर्च उठाने में मदद करेगा।

क्लब की पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान पीआर निदेशक राखी मेहता ने इस पहल की रूपरेखा तैयार की है। वह कहती हैं, हम चाहते थे कि रजत जयंती केवल 25 वर्षों की सेवा का उत्सव न हो, बल्कि यह भी एक अवसर बने कि हमारे सदस्य रोटरी से जुड़ने और सेवा करने के अनुभव को नए नजरिए से देखें।

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दिवसों के अवसर पर आयोजित इन 25 कार्यक्रमों के जरिए क्लब अपने सदस्यों को एक सरल संदेश देना चाहता है - आज कोई एक अच्छा काम कीजिए, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। देखिए, वह आपके व्यक्तित्व को कितना बदल सकता है। किसी संस्था का दौरा करना, समुदायों से बातचीत करना, जरूरतमंदों के लिए किट तैयार करना, हाथ से संदेश लिखना, युवाओं के साथ अपने पेशेवर अनुभव साझा करना या किसी गतिविधि में स्वयं भाग लेना - ये सभी ऐसे छोटे प्रयास हैं, जिनसे सेवा का अनुभव और भी सार्थक बन सकता है।

राष्ट्रीय डॉक्टर्स डे पर क्लब के सदस्यों ने कामा एंड अल्बलेस अस्पताल में डॉक्टरों के साथ यह दिन मनाया। उन्होंने एमबीबीएस के विद्यार्थियों, रेजिडेंट डॉक्टरों और फैकल्टी सदस्यों से बातचीत की और सफेद कोट के पीछे छिपी करुणा तथा सेवा भावना का सम्मान किया।

विश्व जनसंख्या दिवस पर क्लब ने स्त्री मंडल और नवजीवन सेंटर के जरिए जरूरतमंद महिलाओं और बच्चों तक पहुंच बनाई। छाते, स्कूल बैग, स्टेशनरी और स्वास्थ्य किट बांटने के साथ बच्चों के लिए बातचीत और मनोरंजन से भरा एक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

स्वतंत्रता दिवस पर क्लब ने सैल्यूट टू द सी कार्यक्रम आयोजित किया। इसके तहत 50 सदस्यों को नौसेना मुख्यालय जाने और भारतीय नौसेना के युद्धपोत आईएनएस चेन्नई पर सवार होने का दुर्लभ अवसर मिला। नौसेना के अधिकारियों और जवानों ने उन्हें भारत की समुद्री सुरक्षा से जुड़ी अहम जानकारियां दीं।

राखी बताती हैं, ''मेरे पति के मित्र वाइस एडमिरल राहुल विलास गोखले वहां मौजूद थे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि हमें पूरे जहाज को देखने और नौसैनिकों से बातचीत करने का शानदार अनुभव मिले। लेकिन इस दिन का सबसे खास पल लेफ्टिनेंट कमांडर दिलना से मिलना था। उन्होंने 268 दिनों तक दुनिया का चक्कर लगाने की अपनी असाधारण यात्रा के अनुभव साझा किए। उनकी पूरी समुद्री यात्रा सुनकर हमने उनके साहस को सलाम किया। हम 50 सदस्यों के लिए यह बातचीत बेहद प्रेरणादायक रही।''

सितंबर में अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर क्लब ने सात स्कूलों के 1,500 विद्यार्थियों को कला के जरिए शांति का अर्थ समझने का अवसर दिया। पेंटिंग पीस नामक इस कार्यक्रम में कक्षा 5 से 8 तक के बच्चों ने चित्रों के माध्यम से बताया कि उनके रोजमर्रा के जीवन में शांति का क्या अर्थ है। उनके लिए शांति का मतलब था - दया, दोस्ती, सबको साथ लेकर चलना, सुरक्षा, सद्भाव, एकता और उम्मीद।

क्लब अध्यक्ष प्रणित नाहेटा कहते हैं, ''हर युवा कलाकार ने इस विषय को अपने अनूठे नजरिए से देखा। कागज की एक साधारण शीट पर बने चित्र उस दुनिया की अभिव्यक्ति बन गए, जिसमें वे रहना चाहते हैं।''

1 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर क्लब ने लोअर परेल स्थित किंग जॉर्ज मेमोरियल में बुजुर्गों और उपशामक देखभाल प्राप्त कर रहे मरीजों के लिए मेलोडीज एंड मोमेंट्स नाम से संगीत और नृत्य की शाम आयोजित की। इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ रोटेरियन म्यूजिशियंस के दक्षिण मुंबई चैप्टर ने लाइव संगीत से कार्यक्रम को जीवंत बना दिया।

राखी बताती हैं, बुजुर्गों ने गीतों के साथ गुनगुनाया, नृत्य किया और कलाकारों से बातचीत की। हर धुन के साथ उनके चेहरों पर खुशी झलक रही थी। इस शाम ने लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने और साथ बिताए पलों का आनंद लेने का अवसर दिया।

इस अवसर पर जन्मदिन का केक काटा गया, विशेष भोजन की व्यवस्था की गई और बुजुर्गों को



कश्मीर के कुपवाड़ा स्थित माछल घाटी के एक गांव में लगाया गया सौर ऊर्जा से चलने वाला स्ट्रीट लैंप के आगे खडी स्थानीय निवासी।

किराना सामग्री, चादरें, तकिए के कवर तथा अन्य जरूरी सामान बांटे गए। _am dra ^mB: सरहद पर तैनात जवानों के नाम राखियां क्लब के सदस्यों के लिए सबसे भावुक और यादगार पहलों में से एक रहा मेरा वीर भाई कार्यक्रम। इसके तहत जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में तैनात भारतीय सेना के 1,200 जवानों को राखियां भेजी गईं।

राखी कहती हैं, कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पास दुर्गम पहाड़, कड़ाके की ठंड और एकांत जवानों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा हैं। ऐसे में एक छोटी-सी पहल भी उन सैनिकों और वहां रहने वाले ग्रामीणों के लिए बहुत मायने रख सकती है।

जय जवान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को केवल शब्दों तक सीमित न रखते हुए, राखी और क्लब अध्यक्ष सहित आठ सदस्यों ने कश्मीर के कुपवाड़ा जिले की दुर्गम माछल घाटी में तीन महत्वपूर्ण पहल कीं। इनमें गांवों में सोलर स्ट्रीट लाइट लगाना, जवानों के लिए फिटनेस और पुनर्वास केंद्र स्थापित करना तथा 1,200 महिलाओं और 1,200 सैनिकों के बीच रक्षाबंधन के जरिए भावनात्मक रिश्ता कायम करना शामिल था।

क्लब सदस्य विमल शाह के नेतृत्व में शुरू की गई प्रोजेक्ट उजाला के तहत नियंत्रण रेखा के पास के गांवों में 120 सौर ऊर्जा से चलने वाली स्ट्रीट लाइट लगाई गईं। इनका लाभ सीमा की रक्षा



बे-व्यू केयर्स की प्रमुख राखी मेहता, कनन नाहटा, जयेश विडानी, क्लब अध्यक्ष प्रनीत नाहटा, जय जवान परियोजना प्रमुख विमल शाह, पवन बरासिया, रजनी बरासिया और यूथ सर्विसेज निदेशक नम्रता पारिख, माछल घाटी स्थित सेना शिविर में स्थापित फिटनेस सेंटर में।





कनन और रजनी एक महिला को छाते भेंट करते हुए।



क्लब द्वारा आयोजित शांति विषयक कला प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी।



कुपवाड़ा में सैनिकों के साथ रक्षाबंधन मनाते हुए।
~ME: नवजीवन केंद्र में बच्चों से बातचीत करते क्लब के सदस्य।

करने वाले जवानों के साथ-साथ स्थानीय निवासियों को भी मिलेगा।

माछल घाटी की 15 बस्तियों में लगाई गई इन लाइटों से करीब 25,000 ग्रामीणों को लाभ होगा। परियोजना पर लगभग ₹7.56 लाख खर्च किए गए। वहां पहुंचे आठ सदस्यों की मौजूदगी में पुषवारी गांव में पहली 10 सोलर लाइटों का उद्घाटन किया गया।

नाहेटा कहते हैं, इन दुर्गम इलाकों में अंधेरा केवल असुविधा नहीं है। ऊबड़-खाबड़ रास्तों और रोशनी की कमी के कारण सूर्यास्त के बाद जरूरी आवाजाही भी मुश्किल और असुरक्षित हो सकती है। सोलर लाइटों से लोगों को भरोसेमंद रोशनी मिलेगी और उनकी सुरक्षा, आवाजाही तथा आत्मविश्वास बढ़ेगा।

क्लब को उम्मीद है कि इस पहल से गांवों में व्यवहारगत बदलाव भी आएगा और लोग स्वच्छता बनाए रखने तथा स्वच्छ भारत के सिद्धांतों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित होंगे।

राखी बताती हैं, लाइटों के उद्घाटन का कार्यक्रम पूरे समुदाय के लिए एक यादगार उत्सव बन गया। ग्रामीणों, बच्चों, स्थानीय मौलवी और



सरपंच ने जिस गर्मजोशी से हमारा स्वागत किया, उससे पता चला कि यह छोटी-सी पहल उनके लिए कितनी मायने रखती है।

क्लब ने माछल घाटी में जवानों के लिए एक समर्पित फिटनेस और पुनर्वास केंद्र स्थापित करने में ₹8.73 लाख का योगदान दिया। केंद्र में बाइसेप कर्ल मशीन, स्टेयरमास्टर, लेग पुलडाउन और रोइंग मशीन,

देश की रक्षा करने वालों को यह एहसास होना चाहिए कि पूरा देश उनके साथ खड़ा है।

प्रणित नाहेटा

AÜ`j, amQar Šb~ ~må~ ~ ì`

ओलंपिक वेट बार, क्रॉस ट्रेनर सहित कई तरह के व्यायाम और शक्ति प्रशिक्षण उपकरण लगाए गए हैं। यहां तैनात करीब 300 सैनिकों को नियमित व्यायाम के साथ चोट के बाद पुनर्वास की सुविधा भी मिलेगी।

हालांकि, बे व्यू के सदस्यों की एक भावुक पहल ने जवानों के दिलों को खास तौर पर छुआ। उन्होंने अपने हाथों से 1,200 जवानों के लिए



~ME g: राखी मेहता, कनन नाहेटा, रजनी बरासिया और नम्रता पारीख माछल घाटी में भारतीय सेना के जवानों के साथ रक्षाबंधन मनाते हुए।

राखियां बनाईं और उनके साथ पत्र भी भेजे। इस बार पत्रों के साथ पहले से डाक-खर्च चुकाए गए पोस्टकार्ड भी रखे गए, जिन पर जवान अपनी राखी बहनों को जवाब लिख सकें।

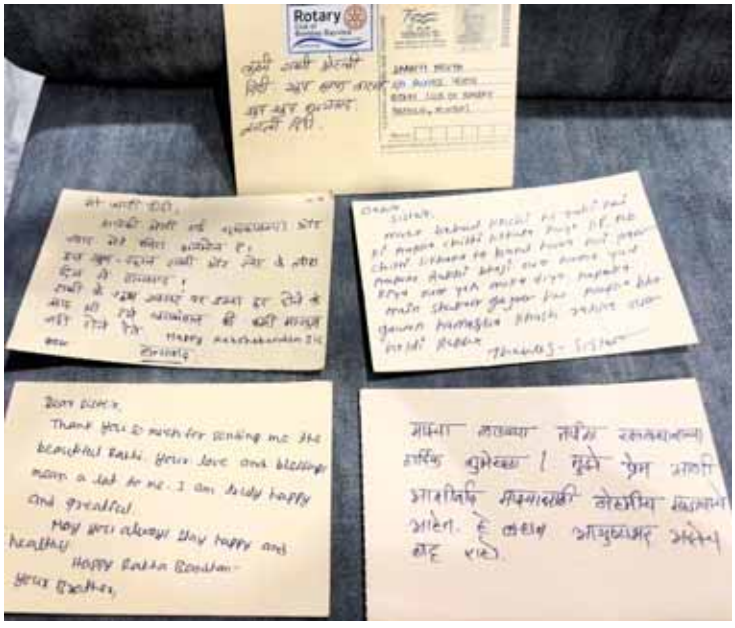
जवानों ने रोटेरियंस को बताया कि उन्हें देश के कई हिस्सों से राखियां और पत्र मिलते रहते हैं, लेकिन इस बार जवाब भेजने की व्यवस्था ने इस पहल को और खास बना दिया।

एक विशेष समारोह में क्लब के सदस्यों ने करीब 100 जवानों की कलाई पर राखियां बांधीं और बाकी राखियां उन्हें सौंप दीं।

राखी कहती हैं, हम उन्हें यह भरोसा दिलाना चाहते थे कि इस कठिन क्षेत्र में वे अकेले नहीं हैं। 1,200 महिलाएं उनके बारे में सोच रही हैं, उनके साथ खड़ी हैं और देश की रक्षा करने के लिए उन्हें सलाम करती हैं। जवानों ने हमें जवाब लिखने का वादा किया - और उन्होंने अपना वादा निभाया।

हिंदी, मराठी और अंग्रेजी में लिखे इन पोस्टकार्डों में जवानों ने अपनी राखी बहनों के प्रति स्नेह और आभार व्यक्त किया। कश्मीर से मुंबई पहुंचे ये संदेश उन महिलाओं तक पहुंचाए गए, जिन्होंने जवानों को राखियां भेजी थीं।

'सैल्यूट टू द सी' कार्यक्रम के तहत नौसेना के जहाज़ आईएनएस चेन्नई पर क्लब के सदस्य।



राखी बहनों को धन्यवाद देते सेना के जवानों के पोस्टकार्ड।

राखी कहती हैं, कई महिलाओं के लिए ये पोस्टकार्ड अनमोल यादगार बन गए हैं। ये उन वीर भाइयों से जुड़ाव का एक ठोस प्रतीक हैं, जिनसे शायद वे कभी मिल भी न पाएं। कुछ महिलाओं ने तो इन पोस्टकार्डों को फ्रेम करवाकर रख लिया है।

क्लब अध्यक्ष नाहेटा कहते हैं, रोटरी क्लब बॉम्बे बे व्यू के लिए माछल घाटी की यात्रा केवल परियोजनाएं पूरी करने तक सीमित नहीं थी। इसका उद्देश्य भारत के सबसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में से एक में रहने वाले समुदायों और तैनात सैनिकों की जरूरतों को समझना और उनके लिए सार्थक, टिकाऊ तथा संवेदनशील पहल करना था। पहाड़ी बस्ती को रोशन करने वाली सोलर लाइट हो या राखी पाकर मुस्कुराता जवान - संदेश एक ही है: जो देश की रक्षा में खड़े हैं, उन्हें यह एहसास होना चाहिए कि पूरा देश उनके साथ खड़ा है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

जीवविज्ञान को करीब से जानने का मौका

जयश्री

नासिक के आदर्श विद्या मंदिर स्कूल की कक्षा 9 के 25 विद्यार्थियों के लिए जीवविज्ञान अब सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं रहा। रोटरी क्लब नासिक वेस्ट, रो ई मंडल 3030 ने आचार्य क्लासेज के सहयोग से बायो डिस्कवर कैंप आयोजित किया, जहां विद्यार्थियों ने बीज और भ्रूण देखे, माइक्रोस्कोप से सूक्ष्मजीवों का अध्ययन किया, लाखों साल पुराने जीवाश्मों को छुआ और मानव शरीर की संरचना को समझा।

पांच दशक से जीवविज्ञान पढ़ा रहे प्रो एस एल आचार्य के मार्गदर्शन में आयोजित इस कैंप का उद्देश्य प्रयोगों और प्रत्यक्ष अनुभव के जरिए विज्ञान को रोचक बनाना था।

बीजों और अंकुरण के सत्र में विद्यार्थियों ने बीज के विभिन्न हिस्सों और भ्रूण का अध्ययन किया तथा एकबीजपत्री और द्विबीजपत्री बीजों में अंतर जाना। जामुन के एक पौधे को देखकर वे खासे रोमांचित हुए। इस पौधे में एक बीज से एक से अधिक भ्रूण विकसित होते हैं। यह विद्यार्थियों के लिए बिल्कुल नई खोज थी, प्रोजेक्ट चेयरमैन उदय खेडकर बताते हैं।

माइक्रोस्कोप के जरिए विद्यार्थियों ने फफूंद, बैक्टीरिया, यीस्ट और पैरामीशियम देखे। उन्होंने बैक्टीरिया की कॉलोनियों, कल्चर मीडिया और दूषित पानी से फैलने वाली बीमारियों के बारे में भी जाना। पानी में संभावित प्रदूषण की जांच करने वाली टेस्ट किट का इस्तेमाल भी समझा।



बायो डिस्कवर कैंप में स्कूली विद्यार्थियों को जीवविज्ञान पढ़ाते प्रो एस एल आचार्य।

दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से लाए गए जीवाश्मों में कुछ करीब 30 करोड़ साल पुराने माने जाते हैं। हड्डियों और कंकालों के जरिए विद्यार्थियों ने मानव शरीर की संरचना समझी। बकरी की आंख, दिल, मस्तिष्क और गुर्दे जैसे अंगों के नमूनों के अलावा पित्त की पथरी, एयर ब्लैडर, सौम्य ट्यूमर और मानव प्रजनन अंगों को भी देखा। संतुलित आहार और जंक फूड के अधिक सेवन के नुकसान पर भी चर्चा हुई।

सेवानिवृत्त माइक्रोबायोलॉजी प्रोफेसर स्मिता खेडकर और नासिक के इनसाइट साइंस सेंटर के सह-संस्थापक कौस्तुभ सुनील हिराय ने भी सत्रों में योगदान दिया।

उदय स्मिता कहती हैं, स्कूलों में माइक्रोस्कोप और दूसरे उपकरण सीमित होते हैं। अक्सर शिक्षक प्रयोग करके दिखाते हैं और बच्चे सिर्फ देखते हैं। जब बच्चे खुद नमूनों को छूकर और उपकरणों का इस्तेमाल करके सीखते हैं, तो विषय बेहतर समझ में आता है और उसमें उनकी रुचि भी बढ़ती है।

''विद्यार्थियों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया के बाद स्कूल के प्रिंसिपल ने कक्षा 10 के करीब 100 विद्यार्थियों के लिए भी ऐसा कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया है। अब स्कूल की जीवविज्ञान प्रयोगशाला में यह सत्र आयोजित करने की तैयारी है। आयोजक माइक्रोस्कोप, जीवाश्म और हड्डियों के सेट स्कूल ले जाएंगे, ताकि सभी विद्यार्थी प्रयोगों में हिस्सा ले सकें।''

शिक्षकों के लिए भी एक कार्यशाला आयोजित करने की योजना है, जिससे वे कक्षा में पढ़ाई को अधिक संवादात्मक और प्रयोग-आधारित बना सकें तथा विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर जीवविज्ञान समझने के लिए प्रेरित कर सकें। ■

AmnH$ JdZg g {_{bE

वी मुत्तुकुमारन

_Ü` àXe _ {demb amhV {e{da

चार्टर्ड अकाउंटेंट बृज अग्रवाल कई कॉरपोरेट कंपनियों के वित्तीय मामलों को संभालते हैं। अपने कार्यकाल में अग्रवाल 4-5 नए क्लब बनाने और सदस्यता में 10 प्रतिशत की शुद्ध वृद्धि का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। इससे 30 जून तक मंडल में क्लबों की संख्या 85 और रोटेरियन्स की संख्या लगभग 3,800 तक पहुंचने की उम्मीद है।

जोधपुर के मथुरादास माथुर अस्पताल की कार्डियोलॉजी यूनिट को 35,000 डॉलर के ग्लोबल ग्रांट से चिकित्सा उपकरण दिए गए हैं। अलवर और जोधपुर के शुष्क गांवों में सिंचाई और पेयजल की जरूरतें पूरी करने के लिए 50,000 डॉलर के ग्लोबल ग्रांट से 8-10 चेक डैम बनाए जा रहे हैं। सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए एचपीवी टीकाकरण अभियान के तहत स्कूलों और कॉलेजों की 5,000 छात्राओं तक पहुंचने का लक्ष्य है। इसके लिए `25 लाख के सीएसआर अनुदान से 10-12 चिकित्सा शिविर लगाए जा रहे हैं। रोटरी के प्रमुख राहत कार्यक्रम के तहत फरवरी-मार्च 2027 में मध्य प्रदेश के मुरैना या शिवपुरी में एक सप्ताह का चिकित्सा अभियान आयोजित किया जाएगा। इस विशाल राहत शिविर को मध्य प्रदेश सरकार और रो ई मंडल 3060 से आंशिक वित्तीय सहायता मिल रही है। मंडल 3060 इस आयोजन के लिए डॉक्टर, उपकरण और स्वयंसेवक भी उपलब्ध कराएगा। अग्रवाल कहते हैं, `40 लाख की लागत वाले इस शिविर में लगभग 3,500 सर्जरी की जाएंगी और ओपीडी में एक लाख से अधिक मरीजों की जांच होगी। अग्रवाल का लक्ष्य टीआरएफ के लिए 300,000 डॉलर जुटाना है। वे दिसंबर 1998 में रोटरी से जुड़े थे।



~O _mhZ AJdmb
चार्टर्ड अकाउंटेंट
रोटरी क्लब भिवाड़ी
रो ई मंडल 3053



nr H$ed aÈr
पेट्रोलियम रिटेल
रोटरी क्लब अनंतपुर सेंट्रल
रो ई मंडल 3160

~rXa _ amQar ãbS ~H$

केशव रेड्डी 2002 में रोटरी से जुड़े थे। वे कहते हैं, यह सफर मेरे जीवन को बदलने वाला रहा है। हर सेवा परियोजना, हर मेल-मिलाप का आयोजन और सामूहिक प्रयासों से छुआ गया हर जीवन समुदायों में बदलाव लाने की ताकत रखता है। उनका लक्ष्य सदस्यता में 250 की शुद्ध वृद्धि करना और 3-4 नए क्लब शुरू करना है। इससे 30 जून तक मंडल में रोटेरियन्स की संख्या 2,850 से अधिक और रोटरी क्लबों की संख्या लगभग 85 हो जाएगी।

स्थानीय अस्पतालों में रक्त के विभिन्न घटकों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए जनवरी तक बीदर में 30,000 डॉलर के ग्लोबल ग्रांट से रोटरी ब्लड बैंक स्थापित किया जाएगा।

लड़कियों और ग्रामीण महिलाओं को पर्यावरण के अनुकूल मासिक धर्म स्वच्छता उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए गुलबर्गा में 60,000 डॉलर के ग्लोबल ग्रांट से सैनिटरी पैड निर्माण इकाई शुरू की जाएगी। रेड्डी बताते हैं, अगले 2-3 महीनों में शुरू होने वाला यह संयंत्र स्कूल-कॉलेज की छात्राओं और ग्रामीण महिलाओं के लिए बहुत लाभकारी साबित होगा।

मंडल की वार्षिक थीम 'बदलाव के सूत्रधार' है, जो रो ई की थीम 'स्थायी प्रभाव पैदा करना' के अनुरूप है। रेड्डी कहते हैं, मेरे मंडल का हर रोटेरियन सकारात्मक बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाएगा। यही विश्वास मुझे हर दिन पूरे उत्साह, विनम्रता और प्रतिबद्धता के साथ सेवा करने की प्रेरणा देता है।

रो ई का वैश्विक आदर्श वाक्य 'स्वयं से ऊपर सेवा' और संस्था के नैतिक मूल्य, खासकर ईमानदारी, उन्हें समाज में सार्थक बदलाव लाने के लिए अपना समय, ऊर्जा और संसाधन समर्पित करने की प्रेरणा देते हैं। उनके कार्यकाल में मंडल के क्लब ग्लोबल ग्रांट और सीएसआर से वित्तपोषित कार्यक्रमों सहित 650-700 सेवा परियोजनाएं चलाएंगे। इन पर कुल `3.5-4 करोड़ खर्च किए जाएंगे। रेड्डी का लक्ष्य टीआरएफ के लिए 100,000 डॉलर जुटाना है।

_{hbmAm H$m AmQm Ama {gbmB _erZ

दक्षिण तमिलनाडु के सात राजस्व जिलों वाले रो ई मंडल 3212 में जुलाई तक 124 क्लब और 4,600 सदस्य थे। गांधी कृष्णन कहते हैं, मेरा लक्ष्य हर महीने एक, यानी सालभर में 12 नए क्लब शुरू करना और कम से कम 500 नए रोटेरियन्स को जोड़ना है। उन्होंने क्लबों से ग्लोबल ग्रांट के लिए परियोजनाओं के प्रस्ताव तैयार करने को कहा है और वे इस दिशा में काम कर रहे हैं।

अपनी कार्यकारी टीम से विचार-विमर्श के बाद उन्होंने इस वर्ष के लिए तीन प्रमुख परियोजनाएं तय की हैं। पहली परियोजना के तहत सिलाई में कुशल 1,000 से अधिक जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीनें दी जा रही हैं। प्रायोजकों और सीएसआर फंड से `60 लाख की सहायता से शुरू की गई इस पहल का उद्देश्य महिलाओं को नियमित आय अर्जित करने और अपने परिवारों का भरण-पोषण करने में मदद देना है।

दूसरी परियोजना के तहत 124 महिलाओं को गुलाबी ऑटोरिक्शा दिए जाएंगे। इसके लिए ग्लोबल ग्रांट और सीएसआर से `2.5 करोड़ जुटाए गए हैं। स्थानीय गैर-सरकारी संगठन से ड्राइविंग प्रशिक्षण पूरा करने के बाद महिलाओं को ये ऑटो दिए जाएंगे। सार्वजनिक स्वच्छता और साफ-सफाई को बढ़ावा देने के लिए तीसरी परियोजना के तहत `1 करोड़ के ग्लोबल ग्रांट और सीएसआर अनुदान से 100 ग्रामीण घरों में प्रीफैब्रिकेटेड शौचालय बनाए जाएंगे। इनमें पानी की टंकियां भी होंगी। इन घरों में अब तक शौचालय जैसी बुनियादी सुविधा उपलब्ध नहीं है। टीआरएफ के लिए कृष्णन का लक्ष्य 1.2 मिलियन डॉलर जुटाना है। वे 1991 से एक समुदाय-आधारित रोटरेक्ट क्लब में रोटरेक्टर थे और वर्ष 2000 में रोटरी से जुड़े। वे कहते हैं, मित्रता और सेवा रोटरी के दो स्तंभ हैं। यही मुझे अपने स्वैच्छिक कार्यों में बेहतर करने की प्रेरणा देते हैं।



JmYr H$îUZ
सिविल इंजीनियर
रोटरी क्लब रामनाड़
रो ई मंडल 3212

सालभर स्थानीय क्लबों द्वारा 200-250 चिकित्सा शिविर लगाए जाते हैं, जिनमें पुरानी बीमारियों और अन्य रोगों के लिए 25,000 मरीजों की जांच की जाती है। इन शिविरों के लिए क्लबों के योगदान, प्रायोजकों और CSR अनुदान से धन जुटाया जाता है।

डीजी जसबीर सिंह भाटिया
am B _Sb 3110



Oñ~ra qgh ^m{Q`m
चार्टर्ड अकाउंटेंट
रोटरी क्लब कानपुर साउथ
रो ई मंडल 3110

í_emZ KmQm H$m n`mdaU H$ AZH$b ~ZmZm

जस्बीर भाटिया कहते हैं, मैंने 2002 में अपनी सेवा का दायरा बढ़ाने के लिए रोटरी जॉइन किया था। जब उन्होंने डिस्ट्रिक्ट गवर्नर का पद संभाला, तब 130 क्लब और 3,600 सदस्य थे। उन्हें विश्वास है कि 30 जून तक 10 नए क्लब बनाए जाएंगे और 400 नए रोटेरियन्स को जोड़ा जाएगा।

मंडल के विभिन्न राजस्व जिलों में लगभग 400 जल केंद्र बनाए जा रहे हैं। इनमें से प्रत्येक केंद्र पर आरओ यूनिट और वाटर कूलर होगा। इस परियोजना के लिए `2 करोड़ का ग्लोबल ग्रांट दिया गया है। दस श्मशान घाटों पर `4 करोड़ के ग्लोबल ग्रांट से विशेष मशीनें लगाई जाएंगी। भाटिया बताते हैं, ये आधुनिक मशीनें सामान्य प्रक्रिया की तुलना में केवल 20 प्रतिशत लकड़ी का इस्तेमाल करेंगी और इनसे प्रदूषण भी नहीं होगा। पूरे साल स्थानीय क्लब 200-250 चिकित्सा शिविर आयोजित कर रहे हैं। इनमें पुरानी बीमारियों और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित 25,000 मरीजों की जांच की जाएगी। इन शिविरों पर `3.5 करोड़ खर्च होंगे, जिसका इंतजाम क्लबों के योगदान, निजी प्रायोजकों और सीएसआर अनुदान से किया जाएगा।

शिक्षा के क्षेत्र में 20 हैप्पी स्कूल परियोजनाओं के जरिए ग्रामीण इलाकों के सरकारी स्कूलों की सुविधाओं और सुंदरता में सुधार किया जाएगा। इन परियोजनाओं के लिए क्लबों के योगदान और सीएसआर अनुदान से `1.5 करोड़ जुटाए गए हैं। टीआरएफ के लिए भाटिया का लक्ष्य 500,000 डॉलर जुटाना है। ■

लेह में रोटरी ने हिमालय की ऊंचाइयों तक पहुंच बनाई

टीम रोटरी न्यूज़

लेह, लद्दाख में पहले रोटरी क्लब - रोटरी क्लब लेह लद्दाख, रो ई मंडल 3070 - की स्थापना के साथ रोटरी ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है।

क्लब का चार्टर और पदस्थापना समारोह रो ई निदेशक के. पी. नागेश ने संपन्न कराया। इस अवसर पर रो ई मंडल 3070 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अनिल सिंघल, ज़ोन 4 के रोटरी मेंबरशिप कोऑर्डिनेटर, पीडीजी दुष्यंत चौधरी और पीडीजी जीतेंद्र अनेजा उपस्थित थे।

लेह-लद्दाख के पुलिस महानिदेशक आनंद जैन भी समारोह में शामिल हुए। रो ई निदेशक नागेश ने कहा, यह रोटरी की बढ़ती उपस्थिति और क्षेत्र में सार्थक योगदान देने की उसकी क्षमता को रेखांकित करता है। ''कई मायनों में लेह लधाक क्लब की स्थापना विशेष है। हिमालय की भव्य पर्वतशृंखलाओं से घिरा लेह अत्यधिक ऊंचाई पर स्थित है, जहां भौगोलिक और जलवायु संबंधी चुनौतियां अनूठी हैं। इस दूरस्थ और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में रोटरी की पहुंच सेवा के एक मूल विश्वास को दोहराती है - सेवा की भावना की कोई सीमा नहीं होती। इस क्लब की स्थापना के साथ लद्दाख में 'स्वयं से ऊपर सेवा', मित्रता और सामुदायिक नेतृत्व के आदर्शों को नई जमीन मिली



रो ई मंडल 3070 के डीजी अनिल सहगल, लेह-लद्दाख के डीजीपी आनंद जैन को रोटरी पिन लगाते हुए। रो ई निदेशक के पी नागेश। पीडीजी दुष्यंत चौधरी (दाएं) और पीडीजी जीतेंद्र अनेजा (दाएं से तीसरे) भी मौजूद हैं।


नवगठित रोटरी क्लब लेह लद्दाख के सदस्य डीजीपी जैन और डीजी सहगल के साथ।

इस दूरदराज और सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र में रोटरी की पहुंच यह विश्वास दोहराती है कि सेवा की भावना की कोई सीमा नहीं होती।

के पी नागेश
am B {ZXeH$



निदेशक नागेश, रोटरी क्लब लेह लद्दाख के अध्यक्ष फुंत्सोग वांगडॉन को रोटरी पिन लगाते हुए। डीजी सिंघल और उमा नागेश भी चित्र में शामिल हैं।



है। अब क्लब के पास स्थानीय जरूरतों को समझने और ऐसी टिकाऊ पहल विकसित करने का अवसर है, जिनसे सार्थक और दीर्घकालिक बदलाव आए।'' नागेश के अनुसार, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, स्वच्छता, युवा विकास, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तीकरण और सामुदायिक कल्याण सेवा के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। स्थानीय समुदायों और संबंधित पक्षों के साथ मिलकर क्लब नए और टिकाऊ समाधानों के जरिए क्षेत्र की चुनौतियों से निपटने में मदद कर सकता है।

नागेश ने कहा कि स्थानीय नेतृत्व को बढ़ावा देकर और समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करके क्लब ऐसी पहल कर सकता है, जो लद्दाख की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के साथ रोटरी के वैश्विक सेवा दृष्टिकोण के अनुरूप हों। उन्होंने कहा, लेह के पहले रोटरी क्लब की स्थापना तो बस शुरुआत है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि की असली कसौटी आने वाले वर्षों में इसका प्रभाव होगा - कितने लोगों के जीवन में बदलाव आता है, समुदाय कितने मजबूत बनते हैं, कितने युवा प्रेरित होते हैं और कितनी साझेदारियां विकसित होती हैं।

डिस्ट्रिक्ट गवर्नर अनिल सिंघल ने कहा कि यह रोटरी परिवार और रो ई मंडल 3070, दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा, लेह क्लब के गठन से मंडल का भौगोलिक दायरा बढ़ा है और जम्मू, कश्मीर तथा लद्दाख में सहयोग, मित्रता और सामुदायिक भागीदारी के नए अवसर खुले हैं। यह क्लब मंडल के विभिन्न हिस्सों के रोटेरियन्स को एक मंच पर लाने, विचारों के आदान-प्रदान और हिमालयी क्षेत्र के समुदायों के लाभ के लिए साझेदारियां बनाने का अवसर भी देगा।

उन्होंने आगे कहा कि इस सफर में प्रतिबद्धता, टीमवर्क और मजबूत स्थानीय नेतृत्व की जरूरत होगी। किसी रोटरी क्लब की सफलता केवल चार्टर प्राप्त करने में नहीं, बल्कि सेवा की जीवंत संस्कृति विकसित करने, सदस्यों को सक्रिय रूप से जोड़ने, प्रभावशाली परियोजनाएं चलाने और समुदाय के साथ मजबूत संबंध बनाने में है।

पीडीजी दुष्यंत चौधरी ने कहा कि रोटरी क्लब लेह केवल एक संगठन बनकर नहीं रहेगा, बल्कि सेवा, मित्रता, नेतृत्व और सकारात्मक बदलाव का केंद्र बन सकता है।

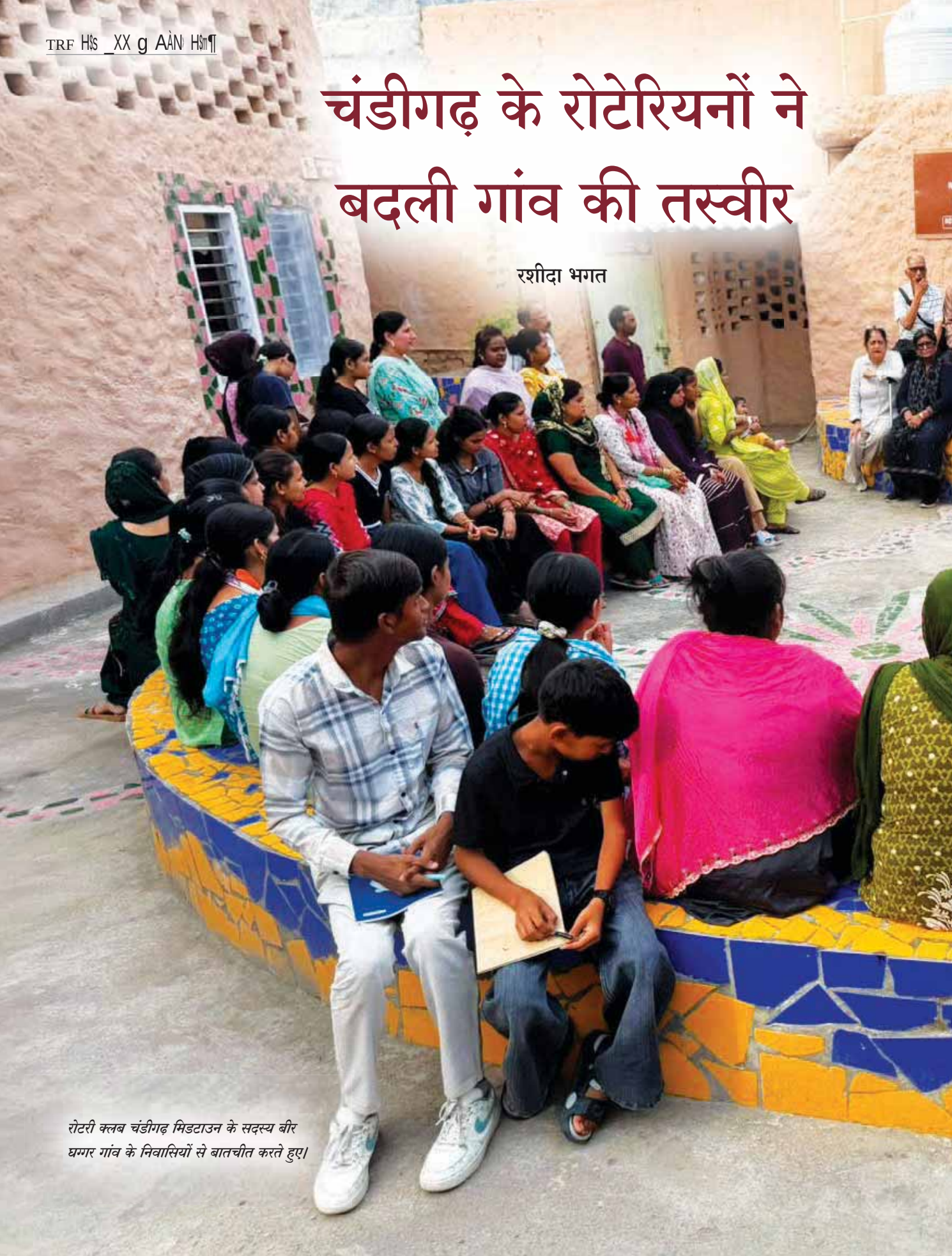
उन्होंने कहा, लद्दाख का विशिष्ट पारिस्थितिक परिदृश्य रोटरी के लिए पर्यावरणीय स्थिरता, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, जिम्मेदार पर्यटन, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और युवाओं की शिक्षा के क्षेत्र में काम करने के कई अवसर प्रस्तुत करता है।

उन्होंने स्थानीय पेशेवरों, उद्यमियों, शिक्षकों, सामुदायिक नेताओं और युवाओं को समाज की सेवा और स्थायी प्रभाव पैदा करने के साझा उद्देश्य से जोड़ने के महत्व पर भी जोर दिया।

चौधरी ने कहा, ''इस क्लब की स्थापना एक सशक्त संदेश देती है - जहां भी कोई समुदाय है, वहां सेवा का अवसर है। मैदानी इलाकों से पहाड़ों तक, व्यस्त शहरों से लेकर हिमालय की दूरस्थ बस्तियों तक, रोटरी एक साझा उद्देश्य के साथ अपनी पहुंच बढ़ा रही है - लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना।'' ■

चंडीगढ़ के रोटेरियनों ने बदली गांव की तस्वीर

रशीदा भगत



रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन के सदस्य बीर घग्गर गांव के निवासियों से बातचीत करते हुए।



2022-23 में जब वेद प्रकाश कालरा रो ई मंडल 3080 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर थे, तब उन्होंने *रोटरी चले गांव की ओर* का आह्वान किया। रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन ने इस संदेश को गंभीरता से लेते हुए गांवों की तस्वीर बदलने की दिशा में कदम बढ़ाया।

अध्यक्ष संजय कालरा के नेतृत्व में क्लब ने चंडीगढ़ से करीब 20 किमी दूर बीर घग्गर गांव में व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास केंद्र खोलने का फैसला किया। क्लब पहले भी यहां कई सामुदायिक सेवा परियोजनाएं चला चुका था। डिस्ट्रिक्ट गवर्नर ने मंडल के हर क्लब से एक गांव गोद लेकर वहां लोगों का जीवन बेहतर बनाने की अपील की थी।

क्लब के तत्कालीन उपाध्यक्ष प्रदीप सिसोदिया कहते हैं, ''हमने इस गांव को सिर्फ इसलिए नहीं चुना कि यह चंडीगढ़ के पास है। यहां पहले भी काम करने के कारण हम इसकी जरूरतों से परिचित थे।''

चंडीगढ़ के इतने करीब होने के बावजूद बीर घग्गर में बिजली जैसी बुनियादी सुविधा तक नहीं थी। यहां स्ट्रीट लाइटें भी नहीं थीं। संजय कालरा बताते हैं कि क्लब ने सबसे पहले सौर ऊर्जा से

बिजली पहुंचाने की परियोजना शुरू की। इसके बाद गांव की जरूरतों के अनुसार कई अन्य काम किए गए।

चंडीगढ़ जैसे बड़े और आधुनिक शहर के पास होने के कारण गांव की आबादी में किसान, खेतिहर मजदूर, दिहाड़ी कामगार और घरों में काम करने वाली महिलाएं शामिल हैं। क्लब ने यहां वर्षा जल संचयन, स्थानीय स्कूल में पार्क के विकास और आंगनवाड़ी की स्थापना जैसे कई काम किए। लेकिन गांव के नेताओं और तहसीलदार के साथ जरूरतों का आकलन करने पर युवाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण केंद्र खोलने की मांग प्रमुखता से सामने आई।

तहसीलदार और नगर पार्षद ने रोटेरियंस को बताया कि गांव में नशे की समस्या गंभीर थी और कई युवा इसकी गिरफ्त में आ रहे थे। हाई स्कूल के बाद बहुत कम युवा आगे पढ़ाई करने में रुचि दिखाते थे। पढ़ाई और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण कुछ युवा नशे और चोरी जैसी गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल हो रहे थे।

संजय कालरा कहते हैं, ''हमें बताया गया कि युवाओं को व्यवस्थित व्यावसायिक प्रशिक्षण देना जरूरी है। इससे खासकर महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने और युवाओं को अपना समय सही दिशा में लगाने का अवसर मिलता।''



गांव में क्लब द्वारा स्थापित व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र में अखबारों से कटिंग करना सीखती महिलाएं।









केंद्र में कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

क्लब ने गांव में एक कौशल केंद्र खोलने की योजना बनाई। महिलाओं के लिए सिलाई और ब्यूटी केयर के पाठ्यक्रम शुरू करने का फैसला हुआ, जबकि लड़के और लड़कियां दोनों कंप्यूटर सीख सकते थे। संगीत की कक्षाएं भी शुरू की गईं। इसके लिए तबला, हारमोनियम और कीबोर्ड जैसे वाद्य यंत्र खरीदे गए और गायन सिखाने के लिए शिक्षक नियुक्त किया गया।

लेकिन योजना को हकीकत में बदलना आसान नहीं था। सिसोदिया बताते हैं, इस सपने को साकार करने के लिए प्रतिबद्धता, लगातार प्रयास और जिम्मेदारी लेने की जरूरत थी। क्लब के पूर्व अध्यक्ष अशोक पुरी ने इसमें अहम भूमि का निभाई। उन्होंने बीर घग्गर की पहचान करने, समुदाय की जरूरतें समझने और परियोजना के लिए जरूरी संसाधन व साझेदार जुटाने तक हर कदम पर योगदान दिया।

रोटेरियंस ने इस केंद्र का नाम हुनर वोकेशनल सेंटर रखा। इसके लिए धन जुटाने के वास्ते अशोक पुरी ने अमेरिका में रहने वाले अपने भाई अनिल पुरी से संपर्क किया, जो वहां रोटरी क्लब ऑफ ट्विन सिटीज (सेंट्रेलिया-चेहेलिस), रो ई मंडल 5020 के पूर्व अध्यक्ष हैं।

इसके बाद परियोजना को रोटरी ग्लोबल ग्रांट का सहयोग मिला। इसमें रोटरी क्लबों, डिस्ट्रिक्ट डेजिग्नेटेड फंड्स और रोटरी फाउंडेशन के वर्ल्ड फंड का योगदान शामिल था। कुल 40,000 डॉलर की मदद से यह परियोजना साकार हुई।

सिसोदिया कहते हैं, यह इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि स्थानीय स्तर पर शुरू हुई एक अच्छी पहल को रोटरी की साझेदारी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से किस तरह मजबूती मिल सकती है।

केंद्र के लिए पंचायत भवन चुना गया, जो काफी जर्जर हालत में था। रोटेरियंस ने उसकी मरम्मत कर उसे प्रशिक्षण के लायक बनाया। यहां अब तीन व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू हो चुके हैं-20-20 विद्यार्थियों के लिए सिलाई और कंप्यूटर प्रशिक्षण तथा 10 महिलाओं के लिए ब्यूटी केयर कोर्स। इसके अलावा गायन की कक्षाएं भी चल रही हैं।

तीनों व्यावसायिक पाठ्यक्रम तीन महीने के हैं और हर प्रशिक्षु को ₹100 मासिक शुल्क देना होता है। पूर्व अध्यक्ष संजय कालरा कहते हैं, जो लोग यह रकम नहीं दे सकते, उनका शुल्क माफ कर दिया जाता है। हालांकि, हम सभी को पूरी तरह मुफ्त प्रशिक्षण नहीं देते, क्योंकि मुफ्त में मिली चीजों की अक्सर कद्र नहीं होती।

कुल 40,000 डॉलर की फंडिंग से यह परियोजना इस बात की प्रेरक मिसाल बनी कि रोटरी की साझेदारी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भावना से स्थानीय सोच को कैसे मजबूती मिल सकती है।



इस केंद्र का उद्घाटन 1 जुलाई को हुआ। कार्यक्रम में रो ई मंडल 3080 की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रीता कालरा, क्लब अध्यक्ष रेनू चोपड़ा, तत्कालीन पूर्व अध्यक्ष जगविंदर बावा, संजय कालरा, अशोक पुरी, प्रदीप सिसोदिया सहित गांव के कई नेता और लाभार्थी मौजूद थे।

सिसोदिया कहते हैं, योजना बनाकर और मिलकर काम करते हुए हमने एक सरल, लेकिन असरदार विचार को साकार किया है। केवल तात्कालिक जरूरतें पूरी करने के बजाय हमने महिलाओं और युवाओं के लिए ऐसे अवसर बनाए हैं, जहां वे व्यावहारिक कौशल सीख सकें, आत्मविश्वास बढ़ा सकें और आत्मनिर्भर बन सकें।

वे आगे कहते हैं, यह केंद्र सिर्फ मरम्मत किया हुआ एक भवन नहीं है। यहां तीन पाठ्यक्रमों के पहले बैच के 50 विद्यार्थियों की ऊर्जा, उम्मीदें और सपने आकार लेने लगे हैं।

इस बदलाव की मिसाल हैं 28 वर्षीय शशि बाला, जो पूरे उत्साह और लगन से सिलाई का प्रशिक्षण ले रही हैं। सिसोदिया कहते हैं, शशि और उनके साथी विद्यार्थियों के लिए ये कक्षाएं महज प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं हैं। ये रोजगार पाने, अपना काम शुरू करने और बेहतर भविष्य बनाने की राह हैं। इससे न केवल उनकी, बल्कि उनके पूरे परिवार की जिंदगी बदल सकती है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा



पटना में रोटरी का क्लॉक टावर

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पाटलिपुत्र, रो ई मंडल 3250 के स्वर्ण जयंती वर्ष के अवसर पर पटना के व्यस्त डाक बंगला चौराहे पर रोटरी क्लॉक टावर लगाया गया। चारों दिशाओं में लगी 42 इंच की GPS-सक्षम घड़ियों में रोशनी वाले डायल हैं। मजबूत कास्ट आयरन से बने इस टावर में 24 घंटे बिजली के लिए णझड बैकअप भी है।

इस पब्लिक इमेज प्रोजेक्ट की परिकल्पना क्लब की पूर्व अध्यक्ष स्वाति मोदी ने की। प्रोजेक्ट चेयर नवीन गुप्ता और पीडीजी बिपिन चाचन के नेतृत्व में इसे पूरा किया गया।

गुप्ता बताते हैं कि व्यस्त चौराहे पर टावर लगाने के लिए कई सरकारी विभागों से मंजूरी लेनी पड़ी। बिहार के गृह विभाग, पुलिस महानिदेशक, ट्रैफिक एवं सौंदर्यीकरण विभाग के एडीजी, पटना नगर निगम और नगर आयुक्त से स्वीकृति हासिल करने में करीब तीन महीने लगे। एक स्थानीय विज्ञापनदाता ने भी टावर का विरोध किया, क्योंकि चौराहे पर लगे होर्डिंग से उसे अच्छी कमाई होती थी। गुप्ता कहते हैं कि क्लब की प्रोजेक्ट टीम के लगातार प्रयासों से इन चुनौतियों को पार किया गया।

अगस्त 2025 में तत्कालीन शहरी विकास राज्य मंत्री जीवेश कुमार ने टावर का उद्घाटन किया। इसकी उल्लेखनीय दृश्यता और जनसंपर्क प्रभाव के लिए इसे रो ई मंडल 3250 के सर्वश्रेष्ठ पब्लिक इमेज प्रोजेक्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ■

पीडीजी प्रेम अग्रवाल को मिला प्रतिष्ठित सम्मान

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3090 के पुरस्कार समारोह जश्न-ए-चैंपियंस में रो ई निदेशक के पी नागेश ने पीडीजी प्रेम अग्रवाल को रो ई के प्रतिष्ठित 'सर्विस अबव सेल्फ अवॉर्ड' से सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता आईपीडीजी भूपेश मेहता ने की।

पीडीजी अग्रवाल 2025-28 के लिए मंडल के डीआरएफसी भी हैं। इस रंगारंग समारोह में रोटरी वर्ष 2025-26 के दौरान उल्लेखनीय योगदान देने वाले पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के विभिन्न रोटरी क्लबों के सदस्यों को सम्मानित किया गया।



रो ई निदेशक के पी नागेश, पीडीजी प्रेम अग्रवाल को सम्मानित करते हुए। (बाएं से) पीडीजी भूपेश मेहता, दुष्यंत चौधरी, उमा नागेश और मधु मेहता।

हर रो ई मंडल साल में एक रोटेरियन को इस पुरस्कार के लिए नामांकित कर सकता है। दुनिया भर में यह सर्वोच्च सम्मान केवल 150 रोटेरियंस को दिया जाता है।

रोटरी क्लब मानसा रॉयल के सदस्य अग्रवाल कहते हैं, ''रो ई का यह सर्वोच्च व्यक्तिगत सम्मान पाकर मैं अभिभूत हूं। रो ई निदेशक नागेश का भी आभारी हूं, जिनके साथ मैंने अप्रैल 2022 में शिकागो में हुई काउंसिल ऑन लेजिस्लेशन में हिस्सा लिया था। हम दोनों एक ही बैच के थे।'' ■

अंतरिक्ष वैज्ञानिक तैयार करने की पहल

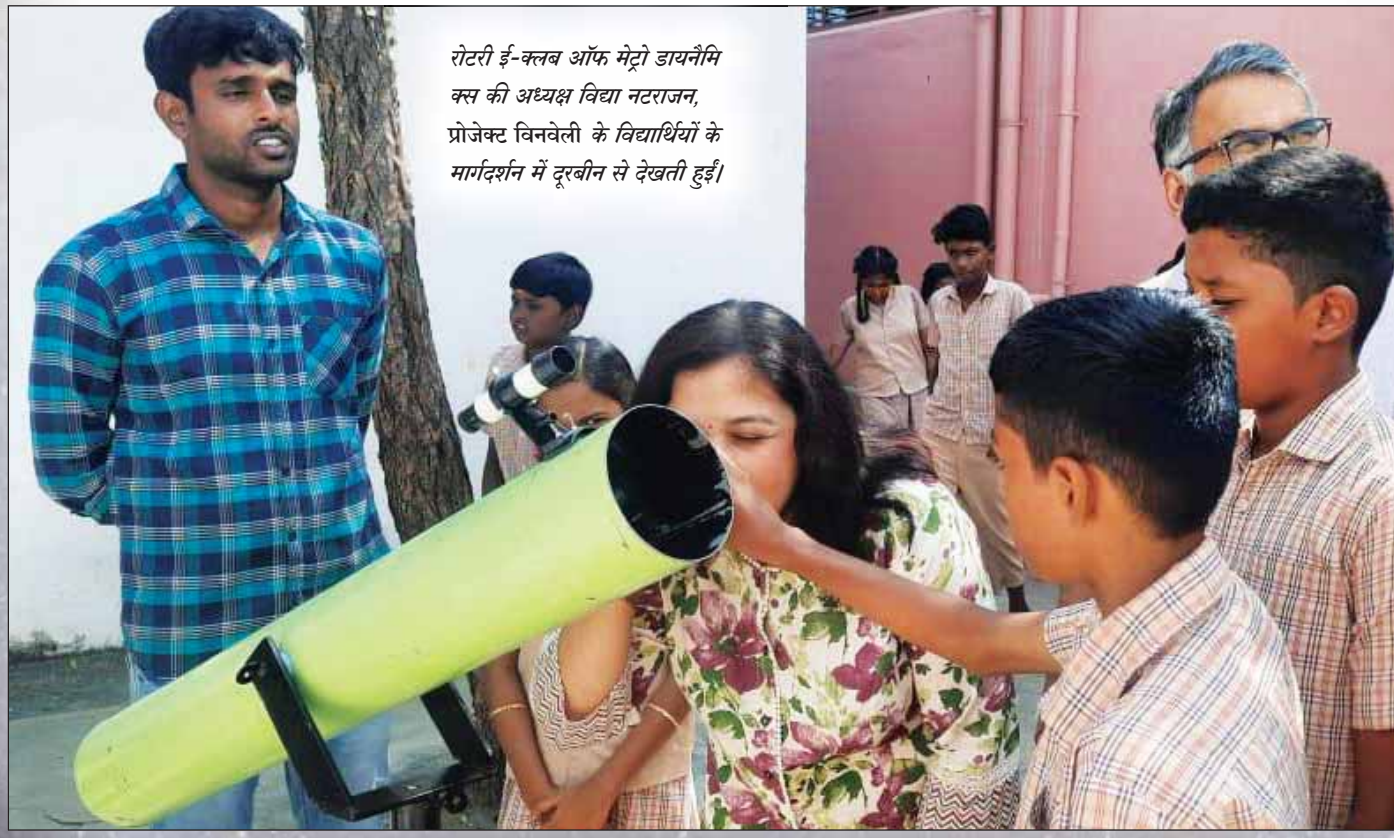
वी मुत्तुकुमारन

कोयंबटूर के सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों ने एक अनोखे प्रयोग के जरिए अंतरिक्ष विज्ञान की दुनिया में कदम रखा है। शहर के 11 सरकारी स्कूलों की छठी से आठवीं कक्षा के 55 विद्यार्थियों ने मिलकर दो किलोग्राम का एक मिनी-सैटेलाइट पेलोड तैयार किया। हीलियम से भरे एक गुब्बारे की मदद से इसे 34,000 फीट से अधिक की ऊंचाई तक भेजा गया, ताकि कोयंबटूर के ऊपर क्षोभमंडल में बढ़ते प्रदूषण का अध्ययन किया जा सके।

रोटरी ई-क्लब ऑफ मेट्रो डायनामिक्स, रो ई मंडल 3206 की अध्यक्ष और परियोजना प्रमुख विद्या नटराजन बताती हैं कि इस पेलोड को विद्यार्थियों ने ओपन स्पेस फाउंडेशन (OSF) के विशेषज्ञों और परियोजना सहयोगियों के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यशालाओं के दौरान डिजाइन किया और तैयार किया। यह प्रयोग *प्रोजेक्ट उयर्वु* (प्रगति) के तहत किया गया। यह परियोजना क्लब की दो साल पुरानी *प्रोजेक्ट विनवेली* का अगला कदम है। *विनवेली* के तहत विद्यार्थियों को दूरस्थ तारों के अध्ययन के लिए टेलीस्कोप बनाने और खगोल विज्ञान से जुड़ी कार्यशालाओं में भाग लेने का अवसर दिया गया था।

विद्या बताती हैं कि सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों में खगोल विज्ञान के प्रति रुचि जगाने के लिए शुरू की गई यह अपनी तरह की पहली पहल है। ओपन स्पेस फाउंडेशन के विशेषज्ञों ने 40 सरकारी स्कूलों में एक व्यवस्थित पाठ्यक्रम के तहत खगोल विज्ञान से जुड़ी गतिविधियां आयोजित कीं। इनमें करीब 1,600 विद्यार्थियों ने तारों को देखने के लिए टेलीस्कोप बनाना सीखा। इससे अंतरिक्ष और खगोलीय घटनाओं के बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ी। विद्यार्थियों को खगोल भौतिकी और अंतरिक्ष विज्ञान की बुनियादी जानकारी देने के साथ-साथ आकाशगंगाओं के बारे में व्यावहारिक अनुभव भी दिया गया। इनमें से प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ISRO की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

क्लब की मदद से कुछ विद्यार्थियों ने अंतरिक्ष से जुड़ी प्रतियोगिताओं में नए धूमकेतुओं और क्षुद्रग्रहों की खोज की। विद्या कहती हैं, ISRO इन खगोलीय पिंडों के नाम सरकारी स्कूलों के इन उभरते अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के नाम पर रखने की प्रक्रिया में है।



रोटरी ई-क्लब ऑफ मेट्रो डायनैमिक्स की अध्यक्ष विद्या नटराजन, प्रोजेक्ट विनवेली के विद्यार्थियों के मार्गदर्शन में दूरबीन से देखती हुईं।



मेट्रो डायनैमिक्स के सदस्य और वॉकरू फाउंडेशन के सीएसआर साझेदार कोयंबटूर के सरकारी स्कूलों को दूरबीन सौंपते हुए।



अब *प्रोजेक्ट उयर्वु* के तहत 330 विद्यार्थी मिनी-सैटेलाइट से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करेंगे। ये आंकड़े वायुमंडल की ऊपरी परतों में मौजूद एयरोसोल यानी हवा में तैरते सूक्ष्म कणों के स्तर को दर्ज करेंगे। विद्या बताती हैं, विनवेली कार्यशालाओं के जरिए हम 4,000 से अधिक विद्यार्थियों तक पहुंच चुके हैं। ये विद्यार्थी हमारे प्रशिक्षण में शामिल बच्चों से भी बातचीत करते हैं। वे अपनी प्रयोगशालाओं में लगाए गए टेलीस्कोप का इस्तेमाल भी करते हैं। रो ई मंडल 3201, जो अब कोयंबटूर और आसपास के क्षेत्रों को शामिल करने वाला रो ई मंडल 3206 है, में मेट्रो डायनामिक्स पहला ई-क्लब था। इसके चार्टर सदस्य रोटरी क्लब कोयंबटूर मेट्रोपोलिस से जुड़े एनट्स थे।

विद्या कहती हैं, हम दुनिया भर में बसे रोटेरियंस की तीसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। हमारे अधिकांश सदस्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, नीदरलैंड, मुंबई और हमारे जन्मस्थान कोयंबटूर जैसे प्रमुख शहरों में रहते हैं। क्लब ने सात निगम स्कूलों को इंटरैक्टिव स्मार्ट बोर्ड उपलब्ध कराए। इनकी मदद से 350 विद्यार्थियों के लिए आठ ऑनलाइन सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों में जीवनशैली, संस्कृति, प्रकृति, वन्यजीव, यात्रा और मनोरंजन जैसे विषयों पर चर्चा हुई। विद्यार्थियों को उनके करियर और पेशेवर विकास के लिए भी मार्गदर्शन दिया गया।

कम्युनिटी ऑफ प्रैक्टिस नाम से आयोजित इन ऑनलाइन सत्रों का संचालन विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ करते हैं। इनमें दूसरे रोटरी क्लबों के सदस्य भी शामिल हैं, जिन्हें मानव संसाधन, उच्च शिक्षा और वित्तीय नियोजन जैसे विषयों का विशेष ज्ञान है।

हाल ही में क्लब ने स्वर्गा फाउंडेशन द्वारा संचालित सौख्य पेन रिहैबिलिटेशन क्लिनिक को ₹1 लाख के व्यावसायिक चिकित्सा उपकरण दान किए। प्रोजेक्ट स्पार्क के तहत दिए गए इन उपकरणों से ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी और अन्य संज्ञानात्मक दिव्यांगताओं से जूझ रहे बच्चों के उपचार के लिए एक संवेदी गतिविधि क्षेत्र तैयार किया जाएगा। क्लब के कोषाध्यक्ष एम सेतुरामन बताते हैं कि इस परियोजना के लिए निजी दानदाताओं और प्रायोजकों ने धन उपलब्ध कराया।

~ f m _ Sm `{~QrO H$ à{V OmJêHVm

नवंबर में क्लब का प्रमुख कार्यक्रम *किड-ए-थॉन* आयोजित किया जाएगा। चार साल से चल रहे इस वॉकथॉन में 15 वर्ष तक के बच्चे हिस्सा लेते हैं। इसका उद्देश्य बच्चों में होने वाली डायबिटीज के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना है। सेतुरामन बताते हैं, पिछले तीन वर्षों में हर बार करीब 1,250 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस साल, 15 नवंबर को कोयंबटूर में 2,000 से अधिक बच्चों के शामिल होने की उम्मीद है।

पिछले वॉकथॉन से जुटाई गई राशि से इदयंगल्स चैरिटेबल ट्रस्ट को इंसुलिन पंप और डायबिटीज से पीड़ित बच्चों के उपचार में इस्तेमाल होने वाली अन्य सामग्री दी गई। विद्या कहती हैं, *किड-ए-थॉन* और अन्य धन-संग्रह कार्यक्रमों के जरिए, सीएसआर फंड और समाजसेवियों के सहयोग से हमने अब तक करीब ₹2 करोड़ के उपकरण और चिकित्सा सामग्री दान की है। क्लब ने चिदंबरम के सरकारी मेडिकल कॉलेज में एक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने में भी सहयोग दिया है। यहां टाइप-1 डायबिटीज से पीड़ित 100 से अधिक बच्चों को तत्काल चिकित्सा सहायता और हर महीने दवाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

कोविड महामारी के दौरान क्लब ने *प्रोजेक्ट ब्रिंग अ स्माइल* के तहत एक और पहल की। दुनिया भर के 250 स्वयंसेवकों ने ऑनलाइन माध्यम से एक-एक घंटे के सत्र आयोजित किए। इनमें उन बच्चों को शामिल किया गया, जिनकी जिंदगी महामारी के कारण बुरी तरह प्रभावित हुई थी। कुछ बच्चों ने अपने माता-पिता खो दिए थे, जबकि कुछ लंबे समय तक घरों में सीमित रहने के कारण अकेलेपन से जूझ रहे थे। विद्या याद करती हैं, हमारे अतिथि स्वयंसेवकों और क्लब सदस्यों ने 100 से अधिक बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रखा। उनके मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक खुशहाली को प्राथमिकता दी गई।



क्लब अध्यक्ष विद्या नटराजन, कनाडा के टोरंटो स्थित रोटरी क्लबों के साथ संयुक्त परियोजना के तहत आपदा और बाढ़ प्रभावित देशों में भेजने के लिए सूखा राशन पैक करती हुईं।

gr_ Am g na gd

दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में रहने वाले मेट्रो डायनामिक्स के 33 सदस्य भौगोलिक दूरी को जरूरतमंदों की मदद करने में बाधा नहीं बनने देते। विद्या बताती हैं, हम जिस देश में रहते हैं, वहां के स्थानीय रोटरी क्लबों के साथ मिलकर समाज को कुछ लौटाने की कोशिश करते हैं। मैं खुद टोरंटो में ऐसा करती हूं। साथ ही, हम कोयंबटूर के लोगों तक भी पहुंचते हैं, जहां हमने पढ़ाई की और जहां आज भी हमारे परिवारों की जड़ें हैं।

क्लब के जमीनी कार्यक्रमों का लाभ मुख्य रूप से स्कूली विद्यार्थियों को मिलता है। स्वास्थ्य, प्राथमिक शिक्षा और मानवीय सेवा इसके प्रमुख क्षेत्र हैं। कुछ महीने पहले मुंबई, कोयंबटूर, नॉर्थ कैरोलाइना और फ्लोरिडा में रहने वाले क्लब के एनर्ट्स ने एक ही दिन अनाथालयों और विशेष देखभाल केंद्रों में अच्छी हालत वाले, कम इस्तेमाल किए गए कपड़े बांटे। इसके अलावा, कोयंबटूर में कम आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए शांति आश्रम द्वारा संचालित आठ बाल शांति केंद्रों यानी प्राथमिक विद्यालयों को ₹18,000 की स्टेशनरी और अन्य शैक्षणिक सामग्री दी गई।

विद्या के अनुसार, क्लब दुनिया भर में हर साल औसतन कम से कम 20 सेवा परियोजनाएं चलाता है, जिन पर करीब ₹40 लाख खर्च होते हैं। इन गतिविधियों के लिए अधिकांश धन दानदाताओं, प्रायोजकों और सीएसआर अनुदानों से जुटाया जाता है। नवंबर 2020 में कोविड महामारी के दौरान शुरू हुआ यह क्लब अब सेवा के प्रभाव और पहुंच के मामले में काफी आगे बढ़ चुका है। विद्या कहती हैं, अब हमारा क्लब शत-प्रतिशत टीआरएफ योगदान देने वाला क्लब है। पिछले दो वर्षों से हमारे सभी सदस्य पोलियो फंड में भी योगदान दे रहे हैं। हर सदस्य सालाना कम से कम 30 डॉलर देता है। क्लब में 18 पॉल हैरिस फेलो और एक मेजर डोनर हैं। रोटरी फाउंडेशन (टीआरएफ) को क्लब का कुल योगदान अब तक 23,600 डॉलर हो चुका है।

थुडियालुर के निगम मिडिल स्कूल की शिक्षिका एस. चित्रा के शब्द इस पहल के प्रभाव को बखूबी बयान करते हैं। वह कहती हैं, *प्रोजेक्ट विनवेली* के तहत टेलीस्कोप बनाने के व्यावहारिक अनुभव और खगोल विज्ञान की संवादात्मक कक्षाओं से विद्यार्थियों ने नए कौशल सीखे और तारों को देखने के प्रति उनमें गहरी रुचि पैदा हुई। अब प्रस्तावित क्यूबसैट प्रक्षेपण के जरिए उन्हें एयरोस्पेस इंजीनियरिंग से परिचित होने का अवसर मिलेगा। इस तरह उनकी जिज्ञासा भविष्य में पूरे किए जा सकने वाले सपनों में बदल रही है। ■



क्लब सचिव दिव्या हरिकृष्णन (दाएं), स्वर्णलता और राज सिद्धार्थ प्रोजेक्ट बुक नुक *के तहत सरकारी स्कूलों को बुकशेल्फ और किताबें दी जाती हैं।*

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

आत्मरक्षा का प्रशिक्षण

रोटरी क्लब इंदौर अपटाउन, रो ई मंडल 3040 ने अपनी संकल्प सुरक्षा पहल के तहत तीन स्कूलों की 1,245 छात्राओं को आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया। इनमें 52 दृष्टिबाधित छात्राएं भी शामिल थीं। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को व्यक्तिगत सुरक्षा, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के लिए तैयार करना था। दृष्टिबाधित छात्राओं के लिए विशेष और समावेशी प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।



आत्मरक्षा प्रशिक्षण सत्र।

gdmBH$b H$ga H$ à{V OmJêHVm

रोटरी क्लब ह्यूमैनिटी कोलकाता, रो ई मंडल 3291 ने व्हीलर डायरी के साथ मिलकर व्हील्स ऑफ वेलनेस अभियान शुरू किया। कोलकाता से लद्दाख तक आयोजित इस जागरूकता राइड का उद्देश्य सर्वाइकल कैंसर से बचाव और एचपीवी टीकाकरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था।



लद्दाख के खारदुंग ला दर्रे पर राइडर्स।

_mVmAm Z ñVZXY XmZ H$m [aH$mS> ~Zm`m

रोटरी क्लब इरोड नेक्सस, रो ई मंडल 3203 ने वरम ब्रेस्टमिल्क बैंक के सहयोग से लोटस अस्पताल में स्तनदूध दान अभियान आयोजित किया। इसमें 153 माताओं ने भाग लिया। इस पहल ने एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान बनाकर एक उपलब्धि हासिल की।



पीडीजी ई के सगदेवन, ए कार्तिकेयन, क्लब सदस्य और अस्पताल के स्वयंसेवक एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स का प्रमाणपत्र थामे हुए।

gmdO{ZH$ nmH$ {H$¶m {dH${gV

रोटरी क्लब तुरुवेकेरे, रो ई मंडल 3192 ने सैकड़ों पेड़ों, पैदल चलने के रास्तों और मनोरंजन सुविधाओं से युक्त एक सार्वजनिक पार्क विकसित किया। रोटरी ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष टी. एस. प्रकाश गुप्ता ने बच्चों के खेलने के उपकरणों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए व्यायाम सुविधाओं पर लगभग ₹8 लाख खर्च किए। पार्क में पुरुषों और महिलाओं के लिए आने-जाने का अलग-अलग समय निर्धारित किया गया है।





हार्टफुलनेस आंदोलन के संस्थापक कमलेश पटेल (बीच में) कान्हा शांति वनम में पीस पोल का अनावरण करते हुए। (दाएं से) डीजी उदय पिलानी, शांति एवं संघर्ष समाधान की मंडल चेयर झांसी प्रेमानंद, मंडल पब्लिक इमेज चेयर के शेषसाई कुमार, रोटरी क्लब हैदराबाद एलीट के अध्यक्ष विजय मद्दिरेड्डी और मंडल सचिव-इवेंट्स रंजीत ठाकुर मौजूद हैं।

शांति की राह पर रोटरी और हार्टफुलनेस

रशीदा भगत

अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर रो ई मंडल 3150 ने दुनिया भर में कई ध्यान केंद्र चलाने वाले हार्टफुलनेस के साथ मिलकर एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। हैदराबाद के 1,400 एकड़ में फैले विशाल और प्रसिद्ध कान्हा शांति वनम में हुए इस आयोजन में सैकड़ों रोटेरियन और स्थानीय समुदाय के हजारों लोग शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान परिसर में एक रोटरी पीस पोल भी स्थापित किया गया। आयोजन में रोटरी क्लब हैदराबाद एलीट और रोटरी क्लब ऑफ सिकंदराबाद ने सहयोग दिया।

कान्हा शांति वनम का संचालन वैश्विक गैर-लाभकारी संस्था श्री राम चंद्र मिशन करती है। इसके अध्यक्ष कमलेश पटेल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। आयोजन का उद्देश्य लोगों को यह बताना था कि रोटरी दुनिया भर में अपने रोटरी पीस सेंटर्स के जरिए शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए किस तरह काम कर रही है। भारत में ऐसा केंद्र पुणे की सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी में है, जहां पीस स्कॉलर्स को शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। पटेल हार्टफुलनेस आंदोलन के संस्थापक हैं, जिसकी मुख्य धुरी ध्यान और आत्मिक संतुलन है। कान्हा शांति वनम में हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट भी स्थित है। करीब 30 एकड़ में फैले इस परिसर को दुनिया के सबसे बड़े ध्यान केंद्रों में गिना जाता है, जहां एक समय में एक लाख लोग ध्यान कर सकते हैं।

पीस पोल का अनावरण करते हुए कमलेश पटेल ने रोटेरियनों को कान्हा परिसर की वास्तुकला और उससे जुड़ी कई विशेषताओं के बारे में बताया। उन्होंने रोटेरियनों के साथ शांति के लिए साझेदारी को लेकर उत्साह जताते हुए कहा, मैं आप सभी के साथ मिलकर ऐसे कई कान्हा बनाना चाहता हूं। उम्मीद है, आप इसके लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में शांति कैसे लाई जाए, इस पर अलग-अलग मंचों पर चर्चा होती रहती है। उन्होंने अपने गुरुजी के 1956 में संयुक्त राष्ट्र को लिखे पत्र का उल्लेख करते हुए कहा, व्यक्ति के भीतर शांति के बिना विश्व शांति संभव नहीं है। व्यक्तियों के बिना ङ्कदुनियाफ जैसी कोई चीज नहीं। शुरुआत एक व्यक्ति से, एक इंसान से होती है।

पटेल ने भगवान कृष्ण और अर्जुन के संवाद का उदाहरण देते हुए कहा कि जो व्यक्ति खुद अशांत है, वह सुख कैसे पा सकता है? हर जीवात्मा सुख की तलाश में रहती है। जब तक मन में शांति नहीं होगी, जीवन में सब कुछ हासिल कर लेने के बावजूद सच्चा सुख नहीं मिल सकता। उनके अनुसार, बेचैनी के बीच शांति संभव नहीं है। खुद के भीतर और परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य जरूरी है, तभी परिवार में शांति आ सकती है।

उन्होंने ध्यान के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि सामंजस्य एक ऐसे मन से पैदा होता है जो शांत, केंद्रित और चिंतनशील हो। और ऐसा मन ध्यान के

बिना विकसित नहीं हो सकता। अब आप इन कड़ियों को जोड़ सकते हैं-ध्यान से केंद्रित और चिंतनशील मन, फिर सामंजस्य, शांति और अंततः सुख।

उन्होंने यह भी कहा कि अगर वे अपनी पत्नी के जीवन में शांति और खुशी लाना चाहें, तो वे सीधे ऐसा नहीं कर सकते। उन्हें यह खुद करना होगा। यही हमारी मूल प्रकृति है। जब हम अपनी प्रकृति के विरुद्ध जाते हैं, तो हम बेहतर इंसान बनने के बजाय और बिगड़ जाते हैं।

पटेल ने बताया कि ध्यान की इस पद्धति को सही ढंग से सीखने के लिए कम से कम तीन-चार सत्र किसी प्रशिक्षक के साथ करना जरूरी है। हार्टफुलनेस के प्रशिक्षक छोटे-छोटे गांवों में भी उपलब्ध हैं। उन्होंने अपना ई-मेल *ID (daaji@daaji.org)* साझा करते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति उन्हें मेल कर सकता है और वे उसे उसके क्षेत्र के प्रशिक्षक से जोड़ देंगे।

करीब 40,000 लोगों की मौजूदगी वाली इस विशाल सभा को संबोधित करते हुए रो ई मंडल 3150 के डीजी उदय पिलानी ने कहा कि विश्व शांति दिवस मनाने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है कि शांति और सद्भाव का संदेश यहां मौजूद लोगों के साथ-साथ लाइव स्ट्रीमिंग के जरिए दुनिया भर तक पहुंचाया जाए।

उन्होंने बताया कि उन्हें मॉरीशस, अमेरिका और भारत के अलग-अलग हिस्सों से कार्यक्रम को लेकर संदेश मिले हैं। उन्होंने कहा कि रोटरी और हार्टफुलनेस दोनों उस प्राचीन हिंदू दर्शन में विश्वास रखते हैं, जिसमें शांति को मानवता की प्रगति और विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। उन्होंने कहा कि रोटरी और हार्टफुलनेस की सोच एक समान है-एक अधिक शांतिपूर्ण, संवेदनशील और टिकाऊ दुनिया तभी संभव है, जब लोग ध्यान, संवाद, सामुदायिक सेवा और पर्यावरण संरक्षण के जरिए एक साथ आएं।

शांति और संघर्ष समाधान की मंडल चेयर झांसी प्रेमानंद ने कहा कि वास्तविक शांति केवल एक इच्छा नहीं, बल्कि सोच-समझकर किया गया निवेश है। यह केवल संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है। इसके लिए स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य, साक्षरता और आर्थिक अवसर भी जरूरी हैं-और ये सभी रोटरी की सेवा भावना का हिस्सा हैं। उन्होंने कहा, स्थानीय सेवा प्रोजेक्ट, युवा नेतृत्व और हमारे मजबूत रोटरी पीस सेंटर्स के नेटवर्क के जरिए हम लोगों के बीच विश्वास पैदा करते हैं।

मंडल पब्लिक इमेज चेयर के. शेषसाई कुमार ने कहा कि कान्हा का यह आयोजन इस बात की शक्तिशाली याद दिलाता है कि शांति की शुरुआत हमारे भीतर से होती है। जब रोटरी की तरह इसे सेवा और सामूहिक प्रयासों के जरिए आगे बढ़ाया जाता है, तो इसका असर लंबे समय तक बना रहता है। ■

2026 कन्वेंशन

पहली बार, और फिर बार-बार!



हर रोटेरियन को रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में शामिल होने का मौका नहीं मिलता। लेकिन भारत के कोलकाता की रोटेरियन मधु बिष्णु की बात ही अलग है। वह अब तक 29 कन्वेंशन में शामिल हो चुकी हैं। बार्सिलोना में होने वाला कन्वेंशन उनका 30वां होगा!

मुझे कन्वेंशन में आना बेहद पसंद है। यह तो एक लत बन गई है, वह हंसते हुए कहती हैं। स्पेन में उन्हें किस बात का सबसे ज्यादा इंतजार है? फ्लेमेंको डांस, पायेया और अपने स्पेनिश रोटेरियन दोस्तों से मुलाकात! 26 से 30 जून तक बार्सिलोना में होने वाला यह कन्वेंशन 2019 के बाद यूरोप में पहला और 2002 के बाद स्पेन के इस शहर में पहला होगा। तो क्यों न इस बार आप भी पहली बार इसमें शामिल हों? सैन फ्रांसिस्को के पीटर लागारियास भी कन्वेंशन के पुराने मुरीद हैं। वह अब तक 15 कन्वेंशन में शामिल हो चुके हैं। उन्हें 1990 में ओरेगन के पोर्टलैंड में हुए अपने पहले कन्वेंशन की याद आज भी ताजा है। उद्घाटन समारोह में जब सदस्य अपने-अपने देशों के झंडों की परेड के दौरान तालियां बजा रहे थे, तो माहौल में एक अलग ही जोश था। वह उस अनुभव को याद करते हुए कहते हैं कि वह पल बेहद रोमांचक था।

आखिर ऐसी क्या बात है जो लोगों को बार-बार कन्वेंशन में खींच लाती है? दुनिया भर में फैले रोटरी परिवार की विविधता को करीब से महसूस करना, पुराने दोस्तों से मिलना, नए दोस्त बनाना, समाज में बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध लोगों के बीच रहना और दुनिया की जानी-मानी हस्तियों के विचारों से प्रेरणा लेना। पहली बार आने वालों के लिए कन्वेंशन को जानने-समझने की शानदार शुरुआत है 'हाउस ऑफ फ्रेंडशिप'। यह कन्वेंशन का प्रमुख आकर्षण है, जहां आपको विभिन्न प्रोजेक्ट्स के स्टॉल, रोचक और संवादात्मक प्रदर्शनियां देखने के साथ-साथ दूसरे रोटेरियंस, रोटरी स्टाफ और दुनिया भर के सहयोगी संगठनों से जुड़ने के भरपूर मौके मिलेंगे।

इसके बाद ब्रेकआउट सत्रों में हिस्सा लें। यहां आपको ऐसे सफल प्रोजेक्ट्स के बारे में जानने का मौका मिलेगा, जिन्हें आप अपने समुदाय में भी अपना सकते हैं। साथ ही, क्लब सदस्यों को सक्रिय और उत्साहित रखने के तरीके और जलवायु परिवर्तन से लेकर संघर्षों के समाधान तक, दुनिया की बड़ी चुनौतियों से निपटने के नए विचार भी मिलेंगे। मिलान की क्लेमेंटिना रोसाटो के लिए कन्वेंशन का अनुभव अभी नया ही है। वह अब तक दो कन्वेंशन में शामिल हुई हैं, लेकिन इस अनुभव ने उन्हें रोटरी परिवार का हिस्सा होने का गहरा एहसास दिया। ''यहां आप रोटरी के बारे में बहुत कुछ सीखेंगे। लेकिन साथ ही, यह भी समझेंगे कि इंसान के तौर पर हममें कितनी संभावनाएं हैं और दूसरों से जुड़कर हम कितना कुछ हासिल कर सकते हैं,'' वह कहती हैं। ■



रो ई मंडल **2981**

रोटरी क्लब विजयापुरम

तिरुवारूर जिले के विजयापुरम सरकारी अस्पताल में स्तनपान जागरूकता कार्यक्रम के दौरान 50 गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक खाद्य सामग्री बांटी गई।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ





रो ई मंडल **3011**

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ ईस्ट

सक्षम एक अभियान एनजीओ के सहयोग से सफदरजंग अस्पताल के मरीजों को व्हीलचेयर दी गईं। रोटेरियन सविता गर्ग और ऐन अंजना अग्रवाल ने परियोजना प्रायोजित की।

रो ई मंडल **3012**

रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार

दिल्ली के मयूर विहार और नोएडा में रेहड़ी-पटरी वालों को धूप और बारिश से बचाव के लिए बड़े छाते बांटे गए।





रो ई मंडल **3030**

रोटरी क्लब कलवण

265 दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग और अन्य सहायक उपकरण देने के लिए माप शिविर लगाया गया। भारत विकास परिषद, पुणे ने सहयोग दिया और महाराष्ट्र नेचुरल गैस ने सीएसआर फंड दिया। पूर्व केंद्रीय मंत्री भारती पवार ने उद्घाटन किया।

रो ई मंडल **3000**

रोटरी क्लब करूर टेक्ससिटी

करूर के रोटरी क्लबों ने विशेष बच्चों के लिए कार्निवल आयोजित किया। दस स्कूलों के 215 बच्चों ने नृत्य, गायन और नाटक में प्रतिभा दिखाई। डीजी आर सुब्रमणि उपस्थित थे और डीजीएन मीना सुब्बैया ने पुरस्कार बांटे। परियोजना पर ₹2.5 लाख खर्च हुए।



रो ई मंडल **3053**

रो ई मंडल

अलवर में नौ दिवसीय मैमोग्राफी जांच और स्तन कैंसर जागरूकता कार्यक्रम में 200 से अधिक महिलाओं की जांच हुई। रोटरी क्लब अलवर ग्रेटर के अमित श्यामसुखा ने शिविरों का समन्वय किया।



रो ई मंडल **3070**

रोटरी क्लब फगवाड़ा साउथ ईस्ट

स्वर्गीय बिशन दास की स्मृति में 100 विद्यार्थियों को स्कूल बैग बांटे गए। उनके बेटे सुदेश कुमार ने सहयोग दिया और मुख्य अतिथि रहे। क्लब अध्यक्ष किरण अग्रवाल सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

धीमे चलने की औषधि

सुरेंद्र सिंहवी

हमें सिखाया गया है कि गति ही प्रगति है - तेजी से चलो, तेजी से सोचो और तेजी से काम करो। लेकिन इसकी कीमत के बारे में हमें शायद ही कभी बताया जाता है। ऐसा मन, जिसे शायद ही कभी आराम मिलता है; ऐसा शरीर, जो कभी पूरी तरह तनावमुक्त नहीं हो पाता; और ऐसा तंत्रिका तंत्र, जो मानो स्थिरता और शांति का अनुभव करना ही भूल गया हो।

एक अभ्यास इतना सरल है कि उसके बारे में बताना भी शायद बहुत मामूली लगे। फिर भी, यह वास्तविक विश्राम और मानसिक स्पष्टता पाने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। इसके लिए न किसी उपकरण की जरूरत है, न किसी सदस्यता की और न ही किसी खास जगह की। बस संकल्प चाहिए और लगभग 15 मिनट का समय।

Aä`mg

- बहुत, बहुत धीरे चलें।
- हल्की, धीमी और गहरी सांस लें।
- सांस छोड़ने की लंबी प्रक्रिया पर पूरा ध्यान दें। सांस छोड़ने पर ध्यान देंगे, तो सांस लेना अपने आप सहज हो जाएगा।

बहुत धीमी चाल से चलना – एक मिनट में लगभग 30–50 कदम – आपको धरती से गहराई से जोड़ता है। हर कदम सोच–समझकर उठाया जाता है, अपने आप नहीं।

बस, इतना ही है पूरा अभ्यास। लेकिन इस तरह धीरे-धीरे टहलना वास्तव में आपके शरीर और मन को नई ऊर्जा देने का एक सटीक और प्रभावशाली तरीका है। आइए, इसे थोड़ा और करीब से समझें।

BgH$m eara na Š`m Aga hmVm h?

बहुत धीमी गति से चलना - लगभग 30-50 कदम प्रति मिनट - आपको अपने पैरों के नीचे की जमीन से गहराई से जोड़ता है। हर कदम अपने आप उठने के बजाय सोच-समझकर उठाया जाता है। यह छोटा-सा अभ्यास मन को चिंताओं और भविष्य की योजनाओं के चक्र से बाहर निकालकर वर्तमान क्षण में ले आता है। आप न तो अतीत की घटनाओं को दोहराते रहते हैं और न ही भविष्य की आशंकाओं में उलझते हैं। आप बस उस पल में मौजूद रहते हैं।

इसी दौरान पैरों की धीमी, लयबद्ध गति लसीका तंत्र को सक्रिय रखने में मदद करती है। लसीका तंत्र शरीर की वह आंतरिक व्यवस्था है, जो अतिरिक्त तरल पदार्थ को बाहर निकालने और प्रतिरक्षा प्रणाली के कामकाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हृदय के विपरीत, इसका अपना कोई पंप नहीं होता। यह मुख्य रूप से शरीर की गतिविधियों और सांस लेने की प्रक्रिया पर निर्भर करता है। इस तरह, हर धीमे कदम के साथ आप अपने शरीर की इस व्यवस्था को सुचारु रूप से काम करने में मदद करते हैं।

BgH$m gmg na Š`m Aga hmVm h?

धीरे और गहरी सांस लेना - लगभग चार से छह सांस प्रति मिनट - ऐसा असर पैदा कर सकता है, जिसकी अधिकतर लोगों को उम्मीद नहीं होती। हम मानते हैं कि जितनी अधिक सांस लेंगे, शरीर को उतनी ही अधिक ऑक्सीजन मिलेगी। लेकिन वास्तविकता इतनी सरल नहीं है। बहुत तेजी से सांस लेने से शरीर में कार्बन डाइऑक्साइड का संतुलन बिगड़ सकता है, जिससे ऊतकों तक ऑक्सीजन पहुंचने की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

सांस की गति धीमी करने से शरीर को इस संतुलन को बनाए रखने में मदद मिल सकती है। मन अधिक शांत और स्पष्ट महसूस होता है और शरीर धीरे-धीरे तनावमुक्त होने लगता है। धीमी और गहरी सांस लसीका द्रव के प्रवाह में भी मदद कर सकती है। इस तरह सांस लेने और चलने की प्रक्रियाएं एक-दूसरे के प्रभाव को बढ़ाती हैं।

gmg NmSZ H$s b~r à{H$`m na Ü`mZ XZ g Š`m ~XbVm h?

यहीं से यह अभ्यास अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

हमारे तंत्रिका तंत्र में सक्रियता और विश्राम से जुड़ी दो प्रमुख व्यवस्थाएं होती हैं। सांस भीतर लेना शरीर को सतर्क और सक्रिय होने में मदद करता है, जबकि सांस छोड़ना विश्राम से जुड़ी प्रक्रियाओं को बढ़ावा दे सकता है।

आधुनिक जीवन में हममें से बहुत से लोग दिनभर सतर्कता की स्थिति में रहते हैं। शरीर और मन तनाव के लिए तैयार रहते हैं, भले ही वास्तव में कोई खतरा न हो। लंबी सांस छोड़ना शरीर को शांत करने का एक स्वाभाविक तरीका है। जब हम इस प्रक्रिया पर ध्यान देते हैं, तो इसका प्रभाव और स्पष्ट महसूस हो सकता है। सांस धीरे-धीरे बाहर छोड़ते हुए हृदय गति कम हो सकती है, जबड़े की जकड़न ढीली पड़ सकती है और कंधों का तनाव घट सकता है। शरीर धीरे-धीरे उस अनावश्यक तनाव से मुक्त होने लगता है, मानो उसे किसी आसन्न आपातस्थिति के लिए तैयार रहना ही न हो।

धीरे और सहजता से सांस छोड़ने पर ध्यान देना चिंता के क्षणों में मन को शांत करने में मदद कर सकता है। कुछ सप्ताह तक नियमित अभ्यास करने से भी व्यक्ति अपने तनाव और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को बेहतर ढंग से संभालना सीख सकता है।

EH$ NmQm-gm Am_ÌU

आपको बहुत दूर या तेज चलने की जरूरत नहीं है। न संगीत चाहिए, न पॉडकास्ट और न ही किसी खास मंजिल तक पहुंचना है।

बस, कोई खुली और शांत जगह चुनें। इस तरह चलें, मानो समय ने भी आपके साथ अपनी गति धीमी कर ली हो। ऐसे सांस लें, मानो हवा को भी धीरे और सहजता से ग्रहण करना हो। और जब सांस छोड़ें, तो उस प्रक्रिया पर ध्यान बनाए रखें।

धीरे-धीरे और पूरी सांस छोड़ने से बेचैनी कम होने लगती है। नियमित अभ्यास से मन शांत रहता है और आप छोटी-छोटी बातों पर कम विचलित होते हैं। फिर आपको परेशान करना भी आसान नहीं होता।

उसके साथ बने रहें और उसे स्वाभाविक रूप से पूरा होने दें। फिर सांस छोड़ने के अंत में आने वाले उस छोटे-से विराम में कुछ पल ठहरें। उस शांति को महसूस करें।

Aä`mg H$ {bE AmXe _mZH$

- चलने की गति: 30-50 कदम प्रति मिनट
- सांस लेने की दर: 4-6 सांस प्रति मिनट
- सांस भीतर लेना: 4 सेकंड / सांस बाहर छोड़ना: 6-8 सेकंड
- अवधि: कम से कम 15 मिनट
- सतह: संभव हो तो प्राकृतिक जमीन पर चलें। नंगे पैर चलने से जमीन से जुड़ाव का अनुभव बढ़ सकता है, लेकिन ऐसा करना आवश्यक नहीं है।

मैं स्वयं लगभग एक साल से प्रतिदिन करीब एक घंटे इस अभ्यास को कर रहा हूं। यह लेख किसी किताब से मिली जानकारी पर नहीं, बल्कि मेरे अपने दैनिक अनुभव पर आधारित है।

लेखक रोटरी क्लब बेंगलुरु राजमहल विलास, रो ई मंडल 3192 के सदस्य हैं।

याद रखने योग्य बातें

- ~hV Yr_r J{V g MbZm: ध्यान को वर्तमान क्षण में टिकाता है और लसीका तंत्र के प्रवाह में मदद करता है।
- Yr_r Ama Jhar gmg bZm: सामान्य श्वसन प्रक्रिया को सहारा देता है और शरीर को शांत करने में मदद कर सकता है।
- gmg NmSZ H$s b~r à{H$`m na Ü`mZ XZm: शरीर की विश्राम संबंधी प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा देता है, हृदय गति धीमी करने और तनाव कम करने में मदद कर सकता है।
- gmg NmSZ H$ AV _ AmZ dmbm {dam_: मन को भीतर की शांति से जुड़ने का अवसर देता है। यही इस अभ्यास का वास्तविक लाभ है।

Membership and TRF Summary 2026-27

Top 20 Rotary Districts Worldwide
New member addition

Rank	District	Zone	Country	Members
1	3000	5	India	1,435
2	2981	5	India	899
3	9141	22	Nigeria	617
4	3011	4	India	599
5	3141	4	India	586
6	3710	12	Korea	525
7	3080	4	India	498
8	3203	5	India	450
9	3233	5	India	443
10	3170	7	India	426
11	3131	7	India	398
12	3670	12	Korea	398
13	3350	10	India	390
14	3680	12	Korea	380
15	9111	22	Nigeria	368
16	3191	7	India	355
17	3020	7	India	354
18	3182	7	India	354
19	3250	6	India	348
20	9142	22	Nigeria	343

Top 20 Rotaract Districts in India

Rank	District	Zone	Rotaract Clubs	Rotaractors
1	3000	5	152	7,549
2	3233	5	70	5,773
3	3292	6	194	4,794
4	3220	5	95	3,713
5	3141	4	129	3,404
6	3206	5	107	2,202
7	3192	7	89	2,199
8	3150	7	55	2,054
9	3131	7	102	1,930
10	3234	5	74	1,914
11	3080	4	88	1,907
12	3191	7	84	1,809
13	3170	7	140	1,808
14	3203	5	79	1,581
15	3060	4	52	1,460
16	3011	4	74	1,253
17	3030	6	87	1,159
18	3142	4	59	1,132
19	3120	6	64	1,014
20	3231	5	44	959

Rotary Districtwise Ranking (India)
New member addition

Rank	District	Zone	Members
1	3000	5	1,435
2	2981	5	899
3	3011	4	599
4	3141	4	586
5	3080	4	498
6	3203	5	450
7	3233	5	443
8	3170	7	426
9	3131	7	398
10	3191	7	355
11	3020	7	354
12	3182	7	354
13	3250	6	348
14	3231	5	306
15	3192	7	306
16	3142	4	303
17	3150	7	299
18	2982	5	289
19	3120	6	282
20	3292	6	279
21	3234	5	278
22	3181	7	269
23	3090	4	250
24	3132	7	244
25	3060	4	231
26	3212	5	224
27	3206	5	215
28	3291	6	212
29	3240	6	206
30	3012	4	205
31	3070	4	197
32	3110	6	190
33	3030	6	188
34	3055	4	186
35	3053	4	166
36	3262	6	164
37	3056	4	162
38	3211	5	161
39	3220	5	148
40	3204	5	134
41	3205	5	122
42	3040	4	120
43	3261	6	106
44	3100	6	89
45	3160	7	48
Total			**13,724**

Top 10 Districts - TRF Giving

Annual Fund

Rank	Zone	District	Annual Fund ($)
1	7	3150	246,758
2	4	3141	183,535
3	7	3131	162,919
4	4	3080	129,947
5	4	3142	129,002
6	4	3060	114,496
7	6	3250	99,535
8	6	3291	94,308
9	6	3120	90,780
10	7	3132	84,903

PolioPlus Fund

Rank	Zone	District	PolioPlus Fund ($)
1	7	3170	14,612
2	5	3234	13,210
3	7	3191	10,968
4	5	3206	8,093
5	6	3292	7,875
6	7	3020	7,392
7	7	3150	7,137
8	4	3141	6,889
9	6	3240	6,630
10	7	3181	5,871

Endowment Fund

Rank	Zone	District	Endowment Fund ($)
1	6	3291	57,646
2	4	3080	52,083
3	4	3053	50,000
4	5	3233	42,039
5	7	3131	39,069
6	7	3150	38,592
7	4	3141	34,596
8	6	3120	34,450
9	5	3212	30,000
10	7	3182	27,211

Zone Ranking in Implementing 10:20:30 Formula for New Clubs

Rank	Zone	Rotary	Rotaract	Interact
1	5	46	35	246
2	4	42	32	119
3	6	23	45	152
4	7	9	50	170
Total		120	162	687
Target		500	1,000	1,500

Top 20 Giving Districts in India for 2026–27

Rank	District	Zone	Total Contributions ($)
1	4	3141	1,136,629
2	7	3150	363,858
3	5	3234	285,106
4	7	3191	267,166
5	7	3131	262,803
6	4	3142	255,271
7	4	3080	239,425
8	6	3250	164,948
9	6	3291	163,961
10	6	3120	154,736
11	4	3011	152,681
12	7	3132	140,917
13	4	3060	134,583
14	5	3203	117,684
15	5	3233	102,566
16	7	3170	98,081
17	7	3020	90,456
18	5	3205	86,754
19	4	3053	83,111
20	7	3192	81,277

Zonewise Ranking - CSR Credits

Rank	Zone	District	CSR ($)
1	4	3141	569,201
2	4	3142	119,792
3	7	3132	54,534
4	7	3150	53,694
5	4	3011	52,083
6	6	3250	34,092
7	5	3233	31,500
8	5	3234	26,042
9	7	3191	23,750
10	7	3131	22,500

Rotary PEOPLE OF ACTION

परिवर्तन की शक्ति

टीम रोटरी न्यूज़

nU _ amQar H$s S`ar H$m{V

रोटरी क्लब पूना नॉर्थ, रो ई मंडल 3131, ने 2005 से अब तक पुणे जिले के मावल, मुलशी, खेड़ और अंबाजोगाई तालुकों के 200 गांवों की 2,460 से अधिक महिलाओं को दुधारू गायें दी हैं। इन गायों की संख्या बढ़कर अब 50,000 से अधिक हो गई है। इनसे हर दिन पांच लाख लीटर दूध का उत्पादन होता है, जिसका सालाना आर्थिक मूल्य ₹600 करोड़ है।

क्लब अध्यक्ष दीपक टक्कर बताते हैं, पिछले दो दशकों में इस विशाल डेयरी परियोजना पर हमने कुल ₹9.74 करोड़ खर्च किए हैं। इस पहल से जुड़े 300 दूध संग्रह केंद्रों में 50,000 से अधिक लोगों को रोजगार मिला है। ये केंद्र दो लाख से ज्यादा उपभोक्ताओं तक ताजा दूध पहुंचाते हैं। ■



रोटरी क्लब पूना नॉर्थ से मिली दुधारू गाय के साथ एक लाभार्थी महिला।



भुवनेश्वर के वृद्धाश्रम एकाम्र निलय में बुजुर्गों के साथ रोटेरियंस।

~OJm H$s Am I m H$s OmM

वरिष्ठ नागरिक दिवस (21 अगस्त) पर रो ई मंडल 3262 के रोटरी ई-क्लब ने भुवनेश्वर के वृद्धाश्रम एकाम्र निलय में नेत्र जांच शिविर लगाया। रोटरी की मोबाइल नेत्र सेवा और पीडीजी जयश्री मोहंती की पहल विजन होप एक्सप्रेस के सहयोग से 55 बुजुर्गों की आंखों की जांच की गई। इनमें 11 को मोतियाबिंद के ऑपरेशन की जरूरत पाई गई।

क्लब ने आश्रम के निवासियों को भोजन और नए कपड़े दिए। उनके लिए सोलर गीजर भी लगवाया। ■

gmbmna H$ Jm_rU ñH$b _ {S{OQb Šbmg

रोटरी क्लब सोलापुर स्मार्ट सिटी, रो ई मंडल 3132, ने हैप्पी स्कूल पहल के तहत कुसुर के न्यू इंग्लिश स्कूल में विद्यार्थियों की डिजिटल पढ़ाई के लिए स्मार्ट टीवी दिया। इस परियोजना को पी पी पटेल एंड कंपनी ने सीएसआर फंड से सहयोग दिया।

स्कूल आने-जाने के लिए लंबी दूरी पैदल तय करने वाली छात्राओं को साइकिलें दी गईं। क्लब ने गीले और सूखे कचरे को अलग रखने के लिए दो डस्टबिन और हाथ धोने का स्टेशन भी लगाया। ■



साइकिलों के साथ छात्राएं और रोटरी क्लब सोलापुर स्मार्ट सिटी के अध्यक्ष बसवराज बिराजदार (दाएं से छठे)।

Ñ{ï>~m{YV {dÚm{W`m H$ {bE _m{~{bQ>r RYLA

रोटरी क्लब विश्रामबाग, रो ई मंडल 3170, ने मिरज के लेट सौ सुशीलाबाई डी घोडावत आवासीय नेत्रहीन विद्यालय के 40 दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए दो दिवसीय एम्पैथी और मोबिलिटी कार्यशाला आयोजित की।

स्वागत थोरात और स्वरूपा देशपांडे ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। एम्पैथी सत्र में रोटेरियंस और रोटरेक्टर्स ने दृष्टिबाधित लोगों की रोजमर्रा की चुनौतियों को समझने के लिए उनके कामों का अनुभव लिया। विद्यार्थियों को छूकर और सूंघकर फल, सब्जियां व अनाज पहचानने, सफेद छड़ी की मदद से स्वतंत्र रूप से चलने और सीढ़ियां सुरक्षित ढंग से चढ़ने जैसे जीवनोपयोगी कौशल सिखाए गए। ■



शॉपिंग मॉल में दृष्टिबाधित विद्यार्थी।

हर उम्र में प्रोटीन है जरूरी

गीता मथाई



आजकल प्रोटीन की चर्चा हर तरफ है। कभी इसकी बात मुख्य रूप से जिम जाने वाले लोग और खिलाड़ी करते थे, लेकिन अब आम लोग भी अपने खानपान में प्रोटीन की मात्रा को लेकर जागरूक हो रहे हैं। भारतीय भोजन में चावल या रोटी की मात्रा अधिक और प्रोटीन से भरपूर खाद्य पदार्थों की मात्रा कम होने के कारण कुछ लोगों को पर्याप्त प्रोटीन नहीं मिल पाता। अच्छी बात यह है कि सही योजना के साथ शाकाहारी भोजन से भी शरीर की जरूरत पूरी की जा सकती है।

विटामिन और खनिज शरीर को कम मात्रा में चाहिए, लेकिन प्रोटीन की जरूरत अपेक्षाकृत अधिक होती है। यह मांसपेशियों और दूसरे ऊतकों को बनाने, उनकी मरम्मत करने और उन्हें मजबूत बनाए रखने में मदद करता है। रोगों से लड़ने की क्षमता, हार्मोन और एंजाइम के निर्माण, घाव भरने और बीमारी या चोट के बाद शरीर को स्वस्थ होने में भी इसकी अहम भूमिका है।

हर उम्र में प्रोटीन जरूरी है, लेकिन इसकी मात्रा उम्र, शारीरिक गतिविधि और स्वास्थ्य पर निर्भर करती है। बच्चों के लिए: बढ़ते शरीर को प्रोटीन की जरूरत होती है। हालांकि, इसकी सही मात्रा बच्चे की उम्र और विकास के चरण पर निर्भर करती है। वयस्कों के लिए: स्वस्थ वयस्कों के लिए सामान्य दिशानिर्देश के अनुसार, हर किलोग्राम वजन पर करीब 0.8 ग्राम प्रोटीन रोजाना पर्याप्त होता है। यानी 70 किलो वजन वाले व्यक्ति को लगभग 56 ग्राम प्रोटीन चाहिए।

व्यायाम करने वालों के लिए: नियमित रूप से कसरत करने वालों को अधिक प्रोटीन की जरूरत हो सकती है। कठिन स्ट्रेंथ ट्रेनिंग या लंबे समय तक सहनशक्ति बढ़ाने वाले व्यायाम करने वालों के लिए यह मात्रा रोजाना 1.2 से 2 ग्राम प्रति किलोग्राम वजन तक हो सकती है। हालांकि, एक घंटे व्यायाम करने का मतलब यह नहीं कि आपको इस सीमा की सबसे ऊंची मात्रा ही चाहिए। रोजाना व्यायाम करना फायदेमंद है, लेकिन अगर आप दिन का ज्यादातर समय कुर्सी पर बैठकर बिताते हैं, तो बीच-बीच में उठकर चलना भी जरूरी है। लंबे समय तक लगातार बैठे रहने से सेहत पर बुरा असर पड़ सकता है।

उम्र बढ़ने के साथ मांसपेशियों की ताकत और आकार धीरे-धीरे कम हो सकते हैं। इस स्थिति को सार्कोपीनिया कहते हैं। इससे कमजोरी, चलने की रफ्तार कम होने और कुर्सी से उठने में परेशानी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। आगे चलकर संतुलन बिगड़ने, गिरने, हड्डी टूटने और दूसरों पर निर्भरता बढ़ने का खतरा भी रहता है। उम्र बढ़ना इसका एक कारण है, लेकिन निष्क्रिय जीवनशैली, हार्मो न में बदलाव, पुरानी बीमारियां और खराब पोषण भी समस्या को बढ़ा सकते हैं।

बुजुर्गों को दांतों की परेशानी, ठीक से फिट न होने वाले नकली दांत, मुंह में दर्द, निगलने में कठिनाई या भूख कम लगने के कारण पर्याप्त भोजन करना मुश्किल हो सकता है। कुछ दवाएं भी भूख और स्वाद को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं का समाधान तलाशना चाहिए, न कि इन्हें बढ़ती उम्र का सामान्य हिस्सा मानकर नजरअंदाज करना चाहिए। स्वस्थ बुजुर्गों के लिए अक्सर हर किलोग्राम वजन पर रोजाना 1 से 1.2 ग्राम प्रोटीन का लक्ष्य सुझाया जाता है। बीमारी या उससे उबरने के दौरान जरूरत बढ़ सकती है। हालांकि, किडनी की बीमारी होने पर प्रोटीन की मात्रा डॉक्टर की सलाह से तय करनी चाहिए। हर भोजन में प्रोटीन का कोई न कोई



स्रोत शामिल करने से रोजाना की जरूरत पूरी करना आसान हो जाता है।

प्रोटीन की मात्रा समझने के लिए कुछ आम खाद्य पदार्थों के उदाहरण देखें। एक बड़े अंडे में लगभग 6-7 ग्राम और उसके सफेद हिस्से में 3-4 ग्राम प्रोटीन होता है। 100 ग्राम पके चिकन ब्रेस्ट में करीब 30 ग्राम, जबकि इतनी ही मात्रा में पकी मछली में 20-25 ग्राम प्रोटीन मिलता है। 100 ग्राम पकी दाल में लगभग 7-9 ग्राम और 100 मिलीलीटर दूध में 3-3.5 ग्राम प्रोटीन होता है।

दालों, बीन्स, चने, सोयाबीन, टोफू, दूध, दही और पनीर से भी अच्छी मात्रा में प्रोटीन मिलता है। मेवे और बीज प्रोटीन देते हैं, लेकिन इनमें कैलोरी भी अधिक होती है। रोटी और चावल से भी कुछ प्रोटीन मिलता है, मगर इनके साथ दाल, दही या दूसरे प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ लेना बेहतर है।ध्यान रखें कि भोजन में प्रोटीन की मात्रा उसकी किस्म, मात्रा और पकाने के तरीके के अनुसार बदलती है। उदाहरण के लिए, गाढ़ी दाल में पतली दाल की तुलना में प्रति कटोरी अधिक प्रोटीन हो सकता है।

सूखी दाल पकने पर पानी सोखकर वजन में बढ़ जाती है। इसलिए 100 ग्राम कच्ची दाल और 100 ग्राम पकी दाल में प्रोटीन की मात्रा समान नहीं होती। इसका मतलब यह नहीं कि पकाने से दाल का सारा प्रोटीन गायब हो जाता है।खाने के पैकेट पर दिए गए पोषण संबंधी विवरण और भरोसेमंद पोषण ऐप्स से प्रोटीन की मात्रा का अंदाजा लगाया जा सकता है। इंटरनेट पर मिलने वाले चार्ट या एआई से तैयार आंकड़ों को भी विश्वसनीय स्रोतों से जांच लेना चाहिए।

कम भूख लगती है तो क्या करें? बुजुर्गों को कभी-कभी बड़ी मात्रा में खाना मुश्किल लगता है। ऐसे में छोटे-छोटे भोजन में प्रोटीन से भरपूर चीजें शामिल करना मददगार हो सकता है। अंडा, दही, पनीर और गाढ़ी दाल इसके अच्छे विकल्प हैं। जिन लोगों को दूध पीने से परेशानी होती है, वे दही या लैक्टोज-फ्री दूध आजमा सकते हैं। हालांकि, सही विकल्प व्यक्ति की सहनशीलता और जरूरत पर निर्भर करेगा। कुछ लोग प्रोटीन बढ़ाने के लिए रोजाना कई अंडों का सफेद हिस्सा खाते हैं। छह अंडों के सफेद हिस्से से करीब 20-24 ग्राम प्रोटीन मिलता है। यह ज्यादातर वयस्कों की पूरी दैनिक जरूरत से कम है। अंडे की जर्दी में भी कई उपयोगी पोषक तत्व होते हैं, इसलिए हर किसी के लिए उसे हटाना जरूरी नहीं है।

क्या प्रोटीन सप्लीमेंट लेना चाहिए? अगर भोजन से पर्याप्त प्रोटीन नहीं मिल पा रहा है, तो सप्लीमेंट मदद कर सकते हैं। ये पाउडर, बार और तैयार पेय के रूप में मिलते हैं। व्हे और सोया प्रोटीन इसके कुछ विकल्प हैं। लेकिन प्रोटीन सप्लीमेंट हर किसी के लिए जरूरी नहीं है। इसका फायदा इस बात पर भी निर्भर करता है कि व्यक्ति को पहले से पर्याप्त प्रोटीन मिल रहा है या नहीं। खरीदने से पहले लेबल ध्यान से पढ़ें। एक स्कूप में पाउडर की कुल मात्रा और उसमें मौजूद वास्तविक प्रोटीन की मात्रा अलग हो सकती है। कुछ उत्पादों में चीनी और कैलोरी भी काफी अधिक होती हैं। अनावश्यक उत्तेजक पदार्थों, छिपे हुए घटकों या हार्मोन जैसा असर करने के दावों वाले उत्पादों से बचें।

सप्लीमेंट को हाई ब्लड प्रेशर, बढ़े हुए ट्राइग्लिसराइड्स या डायबिटीज का इलाज नहीं सम झना चाहिए। जरूरत से ज्यादा प्रोटीन लेना अपने आप में बेहतर सेहत की गारंटी नहीं है। किडनी की पुरानी बीमारी से जूझ रहे लोगों को प्रोटीन की मात्रा डॉक्टर से तय करानी चाहिए। उनकी जरूरत बीमारी की अवस्था और डायलिसिस हो रहा है या नहीं, इस पर निर्भर करती है। हालांकि, यह कहना भी सही नहीं है कि स्वस्थ किडनी वाले व्यक्ति में उचित मात्रा में प्रोटीन सप्लीमेंट लेने से अनिवार्य रूप से किडनी की बीमारी हो जाएगी।

मांसपेशियों को मजबूत रखने के लिए सिर्फ प्रोटीन खाना काफी नहीं है। इसके साथ नियमित शारीरिक गतिविधि भी जरूरी है। वजन उठाना, रेजिस्टेंस बैंड से व्यायाम करना और अपनी क्षमता के अनुसार शरीर के वजन का इस्तेमाल करके कसरत करना मांसपेशियों को मजबूत बनाने में मदद करता है। कुर्सी से बार-बार उठना-बैठना भी एक उपयोगी अभ्यास हो सकता है। बुजुर्गों के लिए चलना और संतुलन सुधारने वाले व्यायाम भी फायदेमंद हैं।

शुरुआत में 2-3 किलो का डंबल किसी व्यक्ति के लिए सही हो सकता है, लेकिन दूसरे के लिए भारी या हल्का। अपनी ताकत के अनुसार शुरुआत करें और धीरे-धीरे वजन या दोहराव बढ़ाएं। कमजोरी, जोड़ों की गंभीर परेशानी या संतुलन की समस्या वाले लोगों को विशेषज्ञ की निगरानी में व्यायाम करना चाहिए। सही मात्रा में प्रोटीन, संतुलित भोजन और नियमित व्यायाम-ये तीनों मिलकर मांसपेशियों की ताकत, चलने-फिरने की क्षमता और आत्मनिर्भरता बनाए रखने में मदद करते हैं। अच्छी सेहत के लिए जरूरी है कि हर उम्र में अपने भोजन पर ध्यान दें और शरीर की बदलती जरूरतों के अनुसार खानपान में बदलाव करें।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*



रो ई मंडल **3170**

रोटरी क्लब बेलगाम मिडटाउन

डीजीई अशोक नाइक ने कोलादुर गांव, बैलहोंगल तालुक में ₹1 लाख की ग्लोबल ग्रांट से स्थापित सौर ऊर्जा चालित जल आपूर्ति प्रणाली और मंदिरों में सोलर लाइटों का उद्घाटन किया। इससे 10,000 ग्रामीणों और उनके मवेशियों को गैर-पीने योग्य पानी मिलेगा।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ





रो ई मंडल **3182**

रोटरी क्लब कोनंदूर

स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए 45 महिलाओं ने साड़ी के लटकन बनाने के पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लिया। बैंक ऑफ बड़ौदा और कर्नाटक टेलर्स एसोसिएशन, तीर्थहल्ली ने सहयोग दिया।

रो ई मंडल **3234**

रोटरी क्लब नंगनल्लूर एलीट

विजयादशमी पर 25 ऑटो चालकों को उनके योगदान के सम्मान में नई शर्टें दी गईं। जे सूर्यनारायण ने शर्टें प्रायोजित कीं और क्लब अध्यक्ष मीना सतीश ने पहल का नेतृत्व किया।





रो ई मंडल **3240**

रोटरी क्लब दीमापुर

चुमौकेदिमा पुलिस स्टेशन में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए आरओ फिल्टर यूनिट लगाई गई। अतिरिक्त डीसीपी वेनी वेसे ने इसका उद्घाटन किया।

रो ई मंडल **3181**

रोटरी क्लब बेलथांगडी

पूर्व अध्यक्ष शरथ पदवेतनया द्वारा प्रायोजित ₹7.5 लाख के दो घर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की बुजुर्ग महिलाओं को सौंपे गए। क्लब अध्यक्ष श्रीधर के वी और इंजीनियर विद्याकुमार कंचोडु ने चाबियां सौंपीं।



रो ई मंडल **3261**

रोटरी क्लब दमोह ग्रेटर

शासकीय कमला नेहरू गर्ल्स कॉलेज में सैनिटरी पैड नष्ट करने वाली मशीन लगाई गई। क्लब अध्यक्ष अजीत जैन, समन्वयक संजय जैन और अन्य सदस्य मौजूद थे।



रो ई मंडल **3291**

रोटरी क्लब जोधपुर गार्डन्स कलकत्ता

दृष्टिबाधित खिलाड़ियों के ऑल बंगाल शतरंज टूर्नामेंट में 30 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। मुकाबले उभरे हुए खानों वाले बोर्डों पर खेले गए। शतरंज ग्रैंडमास्टर दिव्येंदु बरुआ ने आयोजन में सहयोग दिया।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित



पानी की कद्र करना सीखें

प्रीति मेहरा

मेरे बगल वाली मेज पर चार लोग बैठे थे। उन्होंने पानी की एक बोतल मंगाई। वेटर ने चारों के गिलास भर दिए। खाना खाते हुए वे धीरे-धीरे पानी पीते रहे। बिल चुकाकर जब वे उठे, तो चारों गिलासों में आधा-आधा पानी बचा था। वेटर ने मेज साफ की, गिलास उठाए और बचा हुआ पानी सिंक में उड़ेल दिया। कितना बड़ा अपव्यय!

मैं चुपचाप यह सब देखता रहा। मन दुखी था, लेकिन कर भी क्या सकता था? एक पल को सोचा कि उन चारों से कहूं कि गिलास का पानी खत्म करके जाएं। फिर लगा कि ऐसा कहना उनकी निजी स्वतंत्रता में दखल देना होगा।

इस कॉलम के जरिए मैं पाठकों से बस इतना कहना चाहता हूं कि पानी बर्बाद करना कोई अच्छी बात नहीं है। खासकर तब, जब विशेषज्ञ लगातार चेतावनी दे रहे हैं कि जल संकट हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। इस साल सामान्य से कम बारिश के कारण देश एक दशक के सबसे गंभीर जल संकटों में से एक का सामना कर रहा है।

देश के 178 प्रमुख जलाशयों पर नजर रखने वाले केंद्रीय जल आयोग (CWC) के हालिया आंकड़ों के मुताबिक, मानसून के अंत में इन जलाशयों में कुल उपयोग योग्य जल भंडार 132.734 अरब घन मीटर (BCM) था। पिछले साल यह 166.856 BCM था। इस साल का भंडार पिछले 10 वर्षों के औसत 151.118 BCM से भी कम रहा। साफ है कि पानी की स्थिति चिंताजनक है, जबकि किसानों को रबी की फसलों के लिए अभी भी पानी की जरूरत है।

इन आंकड़ों को भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के पूर्वानुमान के साथ देखें, तो आने वाले महीनों की तस्वीर और मुश्किल नजर आती है। विभाग के अनुसार, अक्टूबर से दिसंबर के बीच मानसून के बाद होने वाली बारिश सामान्य से कम रह सकती है।

इससे जलाशयों में पानी की भरपाई प्रभावित होगी, मिट्टी में नमी घटेगी और भूजल स्तर पर भी असर पड़ेगा। बारिश की कमी के बीच फसलों की सिंचाई किसानों के लिए बड़ी चुनौती बन सकती है। इस संकट से निपटने के उपाय तलाशते हुए मैंने इंटरनेट पर कई स्रोत खंगाले। इसी दौरान *Concern Worldwide* की वेबसाइट पर दी गई जानकारी ने मेरा ध्यान खींचा। यह जल संकट की वैश्विक तस्वीर सामने रखती है।

वेबसाइट के मुताबिक, दुनिया की कम से कम 50 प्रतिशत आबादी हर साल कम-से-कम एक महीने गंभीर जल संकट का सामना करती है। दुनिया के 26 प्रतिशत लोगों को सुरक्षित पेयजल की सुविधा

उपलब्ध नहीं है, जबकि 41 प्रतिशत लोगों को पर्याप्त स्वच्छता सेवाएं नहीं मिलतीं। अनुमान है कि 2050 तक सूखे का असर दुनिया की 75 प्रतिशत आबादी तक पहुंच सकता है।''

ये आंकड़े चौंकाने वाले हैं और चुनौती बहुत बड़ी है। लेकिन राहत की बात यह है कि इससे निपटने के उपाय मौजूद हैं और कारगर भी साबित हुए हैं। आइए, जानते हैं जल संकट से निपटने के कुछ तरीके:

QH$am g nmZr H$s Amn{V

जल संकट से निपटने का एक आसान और त्वरित उपाय है पानी के टैंकरों से आपूर्ति। शरणार्थी शिविरों या सूखे से जूझ रहे इलाकों में टैंकरों के जरिए पानी पहुंचाया जाता है। हालांकि, यह महंगा उपाय है और लंबे समय तक संकट का समाधान नहीं कर सकता। लेकिन विकट परिस्थितियों में यह लोगों की जान बचाने का कारगर अस्थायी विकल्प बन सकता है।

g_Ðr nmZr H$m nrZ bm`H$ ~ZmZm

जिन इलाकों में पीने योग्य साफ पानी नहीं मिलता, वहां अक्सर किसी न किसी रूप में अशुद्ध पानी उपलब्ध होता है। ऐसे में, उपलब्ध पानी को इस्तेमाल लायक बनाने के उपाय अपनाए जा सकते हैं। समुद्री पानी को पीने योग्य बनाने के लिए छोटे, पोर्टेबल डिसैलिनेशन उपकरणों का इस्तेमाल किया जा सकता है। बड़े स्तर पर भी समुद्री पानी से नमक हटाकर उसे पीने लायक बनाया जा सकता है। मीठे पानी के स्रोतों को शुद्ध करने के लिए जल शुद्धिकरण की गोलियां भी उपयोगी हैं। ये पानी में मौजूद उन सूक्ष्मजीवों और रोगाणुओं को नष्ट करने में मदद करती हैं, जो टाइफाइड, हैजा और पानी से फैलने वाली दूसरी बीमारियों का कारण बनते हैं।

_mOXm Ob òmVm H$m ~MmE

हर बार नए जल स्रोत तलाशना जरूरी नहीं। कई बार किसी समुदाय के पास पहले से मौजूद पानी के स्रोतों को सुरक्षित रखना ही सबसे अच्छा उपाय होता है। छोटे-छोटे सुरक्षा ढांचे बनाकर इन स्रोतों को इंसानों और पशुओं के हस्तक्षेप से बचाया जा सकता है। इससे पानी दूषित होने का खतरा घटता है और लंबे समय तक साफ पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

brH$O RrH$ H$a

घरों के नलों से लेकर पानी की बड़ी पाइपलाइनों तक, कहीं भी होने वाला रिसाव पानी की बर्बादी का कारण बनता है। इन लीकेज को समय रहते ठीक करके उपलब्ध पानी को बचाया जा सकता है।स्थानीय लोगों को आमतौर पर पता होता है कि मरम्मत की जरूरत कहां है। जरूरत है उन्हें सही तकनीकी मदद और आर्थिक सहयोग देने की, ताकि वे जरूरी सुधार कर सकें और पानी की हर बूंद बचा सकें।

~m[ae H$s ha ~X ghO

जहां पर्याप्त बारिश होती है, वहां पानी बचाने का एक आसान और कम खर्चीला तरीका है वर्षा जल संचयन। इसके लिए छत जैसी सतह पर गिरने वाले बारिश के पानी को पाइपों के जरिए टंकी में जमा किया जा सकता है। उचित शोधन के बाद इस पानी को पीने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। खेती, पशुपालन, स्कूलों और अस्पतालों में भी यह

सबसे पहले, अगली बार रेस्तरां में आपके गिलास में पानी डाला जाए, तो उसे पूरा पीजिए। इससे आपकी प्यास भी बुझेगी और बचा हुआ पानी गंदे पानी में बहाने से भी बचेगा।

बेहद उपयोगी है। खासकर उन देशों में, जहां पानी की कमी के बीच कृषि में बड़ी मात्रा में पानी खर्च होता है। इन प्रणालियों का रखरखाव भी समुदाय के लोग आसानी से कर सकते हैं।

Ob à~YZ g{_{V`m

जब समुदाय के लोग अपने जल स्रोतों की जिम्मेदारी खुद उठाते हैं, तो जरूरतमंदों तक पानी पहुंचाना आसान हो जाता है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर चुने गए सदस्यों की जल प्रबंधन समितियां बनाई जाती हैं, जो पानी के स्रोतों की देखरेख करती हैं और उनके उचित इस्तेमाल व वितरण को सुनिश्चित करती हैं।

Ob àXfU na bJm_ bJmE

पानी के दूषित होने से हर साल करीब 1 मिलियन लोगों की मौत होती है। इस समस्या से अकेले नहीं निपटा जा सकता, लेकिन मिलकर बदलाव जरूर लाया जा सकता है। इसके लिए गंदे पानी को जल स्रोतों में बहाने पर रोक लगाने और नियमों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करने की मांग करनी होगी।

Ob TmM H$m _O~V ~ZmE

कमजोर प्रशासनिक व्यवस्था वाले देशों में अक्सर सरकार के पास पानी, स्वच्छता और साफ-सफाई (WASH) की सुविधाएं मुहैया कराने के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा और संसाधन नहीं होते। यह समस्या की वजह हो सकती है, लेकिन इससे जिम्मेदारी खत्म नहीं हो जाती।

ये तो हुए बड़े स्तर पर किए जाने वाले उपाय। लेकिन हम व्यक्तिगत स्तर पर क्या कर सकते हैं? सबसे पहले, अगली बार रेस्तरां में आपके गिलास में पानी डाला जाए, तो उसे पूरा पीजिए। इससे आपकी प्यास भी बुझेगी और बचा हुआ पानी गंदे पानी में बहाने से भी बचेगा। बेहतर होगा कि गिलास में उतना ही पानी लें, जितना आप पी सकते हैं।

H$N> AmgmZ VarH$

ब्रश करते समय नल बंद रखें: दिन में दो बार ब्रश करना जरूरी है, लेकिन इस दौरान नल खुला छोड़ने से काफी पानी बर्बाद होता है।

शॉवर का पानी सहेजें: नहाने के लिए गर्म पानी आने का इंतजार करते समय शॉवर के नीचे बाल्टी रख दें। इस पानी का इस्तेमाल बाद में पौधों में डालने या घर में पोछा लगाने के लिए कर सकते हैं।

वॉशिंग मशीन का समझदारी से इस्तेमाल करें: कपड़े इकट्ठा होने पर एक साथ धोएं। एक-दो कपड़ों के लिए मशीन चलाने से बचें। इससे पानी और बिजली, दोनों बचेंगे।

छोटे लीकेज को नजरअंदाज न करें: टपकता नल या रिसती पाइपलाइन धीरे-धीरे काफी पानी बर्बाद कर सकती है। समय रहते मरम्मत कराएं।

गिलास में पानी न छोड़ें: आखिर में, खाने की मेज पर आधा भरा गिलास छोड़कर न उठें। जितना पानी लें, उसे पूरा पीएं। पानी की हर बूंद कीमती है!

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

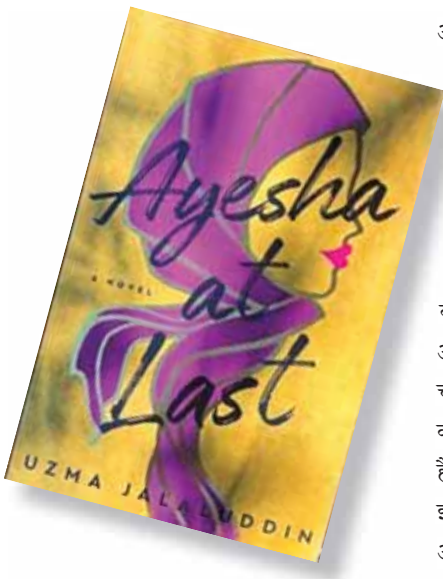


am_mg, g_PXmar Ama qOXJr H$ g~H$

Egr {H$Vm~, Om X{Z`m H$m X I Z Ama g_PZ H$m Z`m ZO[a`m XVr h&

जेन ऑस्टिन दुनिया भर में बेहद लोकप्रिय हैं। दिसंबर 2025 में द कॉमन रीडर में प्रकाशित एक लेख, 'Why we love Jane Austen more than ever after 250 years', में हेनरी ऑलिवर लिखते हैं कि ऑस्टिन ने आधुनिक उपन्यास की नींव इसलिए रखी, ताकि वे एक ऐसे समाज में अच्छा इंसान बनने, खुश रहने और बेहतर जिंदगी जीने जैसे बुनियादी सवालों के जवाब तलाश सकें, जहां व्यापार और पैसा अहम भूमिका निभाते हैं। उनके उपन्यासों के सवाल आज भी हमारी जिंदगी से जुड़े हैं।

मुमकिन हो तो यह लेख जरूर पढ़ें। हालांकि, इस कॉलम का विषय जेन ऑस्टिन नहीं, बल्कि उजमा जलालुद्दीन और उनका लेखन है। हां, उजमा जेन ऑस्टिन की बड़ी प्रशंसक हैं। उनकी किताबों को ऑस्टिन की रचनाओं को दी गई श्रद्धांजलि भी कहा जा सकता है। हाल ही में मैंने उनकी दो किताबें पढ़ीं- *आयशा ऐट लास्ट* और *हाना खान कैरीज ऑन।* कनाडा की लेखिका उजमा ऐसे दौर में लोगों की जिंदगी के बारे में लिखती हैं, जब अलग-अलग संस्कृतियों और विचारों के बीच टकराव दुनिया के लगभग हर हिस्से में दिखाई देता है। कनाडा भी इसका अपवाद नहीं है। कई भाषाओं, धर्मों और समुदायों वाले इस देश ने वर्षों से दुनिया भर के लोगों को शरण और नया





संध्या राव

घर दिया है। उजमा अपने अनुभवों और आसपास की दुनिया से कहानियां बुनती हैं।

आयशा ऐट लास्ट की नायिका आयशा 20 की उम्र पार कर चुकी है। वह कविता लिखती है और स्कूल में पढ़ाती है। उसका परिवार प्यार करने वाले लोगों से बना है-नाना-नानी, मां और भाई। लेकिन आयशा की अपनी जिंदगी अभी तक किसी ठिकाने पर नहीं पहुंची है। वह निजी जिंदगी और करियर, दोनों में अपनी जगह तलाश रही है। उसकी मुश्किलें तब और बढ़ जाती हैं, जब उसकी तुलना चचेरी बहन हफ्सा से की जाती है। हफ्सा वह लड़की है, जैसी समाज की नजर में हर लड़की को होना चाहिए-कम उम्र, खूबसूरत और शादी के लिए बिल्कुल तैयार! इसी बीच, स्थानीय मस्जिद में आयोजित एक कार्यक्रम के सिलसिले में आयशा को हफ्सा की जगह उसकी भूमिका निभानी पड़ती है। इसके बाद गलतफहमियों और उलझनों का ऐसा सिलसिला शुरू होता है कि मामला संभालना मुश्किल हो जाता है।

इसी दौरान आयशा की मुलाकात खालिद से होती है। वह शांत स्वभाव का, रूढ़िवादी विचारों वाला व्यक्ति है और संयोग से उसकी सगाई किसी और से हो चुकी है। खालिद आयशा की ओर खिंचा चला जाता है, लेकिन आयशा को उसका पहनावा और व्यक्तित्व कुछ खास पसंद नहीं आता। आगे क्या होता है, यह जानने के लिए किताब पढ़नी होगी! उजमा इन तमाम उलझनों को जिस सहजता और दिलचस्प अंदाज में सुलझाती हैं, वह पाठक को बांधे रखता है। उनकी कहानी में हास्य भी है, रोमांस भी और समाज को समझने की गुंजाइश भी।

2018 में रयान बी पैट्रिक को दिए एक इंटरव्यू में उजमा ने बताया था कि आयशा ऐट लास्ट का विचार उनके मन में कैसे आया। उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की थी, जो लंबी दाढ़ी रखता है, धार्मिक कपड़े पहनता है और सिर पर टोपी लगाता है। पहली नजर में वह किसी रूढ़िवादी या डरावने व्यक्ति जैसा लगता है, लेकिन असल में वह पूरी तरह रोमांटिक है और एक लड़की के प्यार में डूबा हुआ है। उजमा के मुताबिक, इसी किरदार से धीरे-धीरे पूरी कहानी आकार लेने लगी। इस उपन्यास को अक्सर *प्राइड ऐंड प्रेजुडिस* का मुस्लिम संस्करण कहा जाता है। इसे लिखने में उजमा को कई साल लगे। घर संभालना, नौकरी करना और छोटे बच्चों की परवरिश-इन सबके बीच लेखन के लिए समय निकालना आसान नहीं था। उजमा हाई स्कूल में पढ़ाती हैं और अखबार में कॉलम भी लिखती हैं। लेकिन किताब प्रकाशित होते ही उन्हें शानदार सफलता मिली।

आयशा और हाना की कहानियों की खूबी उनके छोटे-छोटे विवरण हैं, जिनसे पाठक खुद को जोड़ सकता है। खासकर वे लोग, जिनके परिवारों का इतिहास उपनिवेशवाद से जुड़ा रहा है, इन कहानियों में अपने अनुभवों की झलक देख सकते हैं। आयशा के नाना भारत के हैदराबाद में साहित्य के प्रोफेसर थे। बाद में उनका परिवार कनाडा चला गया। एक दिन आयशा अपनी मां के व्यवहार पर सवाल उठाती है। उसे लगता है कि मां उसके दिवंगत पिता से नफरत करती हैं, क्योंकि घर में उनकी कोई तस्वीर नहीं है और मां उनके बारे में कभी बात भी नहीं करतीं। वह नाना से कहती है, पापा के जाने से मैंने भी तो कुछ खोया है। इस पर नाना शेक्सपियर के नाटक *हैमलेट* में ओफीलिया के संवाद का हवाला देते हैं-हम जानते हैं कि हम क्या हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि हम क्या बन सकते हैं।

आयशा भी जानती है कि वह आज क्या है, लेकिन उसे अभी यह पता लगाना है कि वह आगे क्या बन सकती है। उजमा की कहानियां इसलिए असर छोड़ती हैं, क्योंकि उनके किरदार बनावटी नहीं लगते। दोनों उपन्यासों में मतभेद, टकराव और कई मुश्किल हालात आते हैं, लेकिन एक बात साफ रहती है-इन किरदारों के लिए यही दुनिया उनका घर है। चाहे दूसरे लोग उन्हें कितना भी अलग-थलग करने की कोशिश करें। उजमा ने पैट्रिक से बातचीत में बताया था कि बचपन में उन्हें अलग-अलग नस्लों और संस्कृतियों के लेखकों की किताबें बहुत कम मिलती थीं। प्रवासियों और दूसरे समुदायों के अनुभवों पर लिखी किताबें भी अक्सर ऐसे नजरिए से लिखी जाती थीं, जिसमें उनके जीवन को समझने के बजाय उन्हें कमतर दिखाया जाता था। *आयशा और हाना* की खासियत यही है कि ये उन लोगों की जिंदगी को उसी रूप में दिखाती हैं, जैसी वह वास्तव में है। 2018 में *सीबीसी रेडियो* से बातचीत में उजमा ने कहा था कि वह ऐसी कहानी लिखना चाहती थीं, जो प्रवासियों की जिंदगी को केवल दुख और संघर्ष की कहानी बनाकर न पेश करे। उनकी किताबों में पहचान से जुड़े गंभीर सवाल और पारिवारिक उलझनें जरूर हैं, लेकिन उनमें प्यार और खुशी के लिए भी पूरी जगह है।

उजमा का दूसरा उपन्यास हाना खान कैरीज़ ऑन भी इसी सोच को आगे बढ़ाता है। हाना, जिसका पूरा नाम हनान है, रेडियो की दुनिया में अपना करियर बनाना चाहती है। वह अपनी मां के पारिवारिक रेस्तरां थ्री सिस्टर्स बिरयानी पाउटीन को चलाने में मदद करती है और साथ ही स्थानीय स्वतंत्र रेडियो स्टेशन रेडियो टोरंटो में इंटर्न भी है। वहां उसकी मुलाकात दक्षिण एशियाई मूल के एक अन्य इंटर्न थॉमस मैथ्यूज़ से होती है। दोनों की बॉस मारिसा लेक है। हाना को लगता है

दोनों किताबों का अंत रोमांटिक कॉमेडी की तरह नाटकीय है, लेकिन वहां तक पहुंचने का सफर उतार-चढ़ाव से भरा है, जिसमें सजीव किरदार और जिंदगी से जुड़ी वास्तविक परिस्थितियां हैं।



कि मारिसा को दूसरों की मदद करने की ऐसी सनक है, जिसमें वह खुद को दूसरों का उद्धारकर्ता समझने लगती है।

मारिसा पर उसके वरिष्ठ अधिकारी लगातार दबाव डालते हैं कि वह ऐसा कार्यक्रम बनाए, जो लोगों को आकर्षित करे। वह यही दबाव हाना और थॉमस पर डाल देती है। मुश्किल यह है कि तीनों के लिए दिलचस्प कार्यक्रम का मतलब बिल्कुल अलग-अलग है! उधर, हाना के परिवार के रेस्तरां को सड़क के दूसरी ओर खुले एक नए, आलीशान हलाल रेस्तरां से कड़ी प्रतिस्पर्धा मिल रही है। उसे एक सख्त मिजाज पिता और उसके बाजार की नब्ज समझने वाले बेटे आयदिन चलाते हैं। हाना अपने पॉडकास्ट एनाफ्ज़ ब्राउन गर्ल रम्बल्स में अपनी भड़ास निकालती है। लेकिन ऑनलाइन शिकायतों की गर्मी असल जिंदगी में भी पहुंच जाती है और दोनों पक्षों के बीच तनाव बढ़ने लगता है। ऐसे में हाना को थोड़ी राहत उसके पॉडकास्ट के एक हमदर्द श्रोता, स्टैनलीपी, से मिलती है। भारत से मिलने आई उसकी खाला कॉकब भी हाना की जिंदगी में अहम भूमिका निभाती हैं। वह हाना को अपने सपनों की ओर बढ़ने और अपनी असली पहचान पाने के लिए प्रेरित करती हैं।

दोनों उपन्यासों का अंत रोमांटिक कॉमेडी यानी रोमकॉम की परंपरा के मुताबिक नाटकीय अंदाज में होता है। लेकिन उस अंत तक पहुंचने का सफर कई मोड़ों, गलतफहमियों और उतार-चढ़ाव से भरा है। किरदार खून-मांस के बने असली लोग लगते हैं और उनके अनुभव हमारी रोजमर्रा की जिंदगी से मेल खाते हैं। यही इन किताबों को ताजगी देता है। उजमा बहुसांस्कृतिक समाज की कोई चमकदार, बनावटी तस्वीर पेश नहीं करतीं। उनके किरदारों में खूबियां भी हैं और कमियां भी। वे हंसते हैं, गलतियां करते हैं, रिश्तों में उलझते हैं और कभी-कभी बिना कुछ कहे संपर्क तोड़ लेते हैं। वे अपने विविध समुदायों वाले मोहल्लों में रहते हैं, जहां दोस्ती के साथ गपशप भी चलती है। वे प्रार्थना करते हैं, नौकरी करते हैं, दफ्तर की राजनीति झेलते हैं और नस्लवाद व भेदभाव का सामना करते हैं। साथ ही, वे सच्चे रिश्तों और रोजमर्रा की जिंदगी में मिलने वाले सुकून का आनंद भी लेते हैं। *टोरंटो स्टार* अखबार में उजमा के कॉलम का नाम है-समोसे और मेपल सिरप। यह शीर्षक ही उनकी दुनिया को समझने के लिए काफी है। समोसे दक्षिण एशियाई संस्कृति की पहचान हैं, जबकि मेपल सिरप कनाडा की। दोनों का एक साथ होना उस मिली-जुली दुनिया का प्रतीक है, जिसमें उजमा के किरदार रहते हैं।

अंत में एक बिल्कुल अलग तरह की किताब का जिक्र जरूरी *है-फ्रैक्चर्ड कम्युनिटीज़।*

यह किताब झारखंड के सिंहभूम जिले के आदिवासी समुदायों और ब्रिटिश शासन के दौरान उनके इतिहास पर आधारित पीएचडी शोध से विकसित हुई है। इसके लेखक उमर खालिद एक शोधार्थी भी रहे हैं। वे पिछले छह वर्षों से बेहद विवादित आरोपों के सिलसिले में बिना जमानत जेल में हैं और उनकी कैद जारी है। गिरफ्तारी के समय उनका शोध पूरा नहीं हुआ था। इसे विश्वविद्यालय में जमा करने की अनुमति पाने के लिए उन्हें अदालत का दरवाजा खटखटाना पड़ा। विद्वानों ने इस किताब को इतिहास और विश्लेषण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण रचना माना है। इसमें बताया गया है कि ब्रिटिश शासन ने आदिवासी समाजों के भीतर मौजूद मतभेदों और दरारों का इस्तेमाल उन्हें अपने अधीन रखने के लिए कैसे किया। यह गंभीर विषय पर लिखी गई गंभीर किताब है, लेकिन इसे प्रतिरोध की आवाज भी कहा जा सकता है। यह हमें याद दिलाती है कि आज के युवा क्या कह रहे हैं, उनकी बात सुनना और उनके सवालों पर ध्यान देना कितना जरूरी है।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

LBW





~m~{Jar H$s ~marH$ H$bm

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

सरकारी बाबुओं से आखिर हमारा रिश्ता क्या है? कुछ-कुछ वैसा, जैसे नाक पर निकले मुंहासे से होता है। न उसे देखकर खुशी होती है, न उससे छुटकारा पाना आसान होता है! फिर भी बाबुओं के साथ हर किसी का कोई न कोई यादगार अनुभव जरूर होता है।मेरे पिता खुद उम्रभर सरकारी अफसर रहे।

रिटायरमेंट के कई साल बाद, जब वे 70 के पार थे, उन्होंने एक रद्द हुई ट्रेन का टिकट लौटाने की कोशिश की। उन्हें गंभीर डायबिटीज थी और हाथ कांपते थे, इसलिए फॉर्म भरना मुश्किल था। उन्होंने काउंटर पर बैठे कर्मचारी से मदद मांगी। फॉर्म में कुल पांच जानकारियां भरनी थीं। लेकिन बाबू ने साफ कह दिया कि यह उसका काम नहीं है। फिर मां ने उसे `20 दिए और देखते ही देखते फॉर्म भर गया!

यानी सरकारी काम में पांच खाने भरने के लिए भी कभी-कभी सरकारी नियम नहीं, बीस रुपये की जरूरत पड़ती है। बाबुओं के पास एक खास ताकत होती है-काम को मना कर देना या हां कहने में इतनी देर लगाना कि आदमी खुद ही हार मान जाए।

कुछ महीने पहले मेरी पत्नी को इसका अनुभव हुआ। 27 साल पहले बैंक खाते में दर्ज अपना ईमेल पता बदलवाना था। मार्च में शुरू हुआ यह अभियान अब तक खत्म नहीं हुआ है। बैंक के कर्मचारियों को समझ ही नहीं आया कि यह काम कैसे किया जाए। नतीजा? तरह-तरह के दस्तावेज मांगे गए और ऐसे नियम बताए गए, जिनके बारे में न पहले किसी ने सुना था, न शायद कभी बनाए गए थे। और यह कोई सरकारी बैंक नहीं, बल्कि एक बड़ा निजी बैंक है। बाबूगिरी का सरकारी नौकरी से कोई लेना-देना नहीं; यह तो एक सर्वव्यापी कला है, जो हर जगह फलती-फूलती है।

पिछले साल एक दोस्त को ₹5,000 का जुर्माना भरने का नोटिस मिला। कसूर? उसने वह काम किया ही नहीं था, जिसके लिए जुर्माना लगाया गया था! हुआ यूं कि पड़ोसी की शिकायत पर सरकारी कर्मचारियों की एक टीम उसके घर के सामने लगे पेड़ की कुछ डालियां काट गई। कुछ हफ्तों बाद दूसरे विभाग के बाबुओं की एक और टोली ने दोस्त को नोटिस थमा दिया कि उसने अवैध रूप से पेड़ की डालियां काटी हैं। साथ में ₹5,000 का जुर्माना भी। दोस्त ने पैसे देने से इनकार कर दिया। काफी मशक्कत के बाद मामला सुलझा।

एक और दोस्त को अपने नए घर का कंप्लीशन सर्टिफिकेट चाहिए था। वह खुद सरकारी अफसर था, इसलिए उसे लगा कि काम आसानी से हो जाएगा। लेकिन कई चक्कर लगाने और याद दिलाने के बाद भी प्रमाणपत्र नहीं मिला। आखिरकार उसने अपने एक सहकर्मी से मदद मांगी। सहकर्मी ने नीचे के बाबुओं को फोन करके प्रमाणपत्र देने का आदेश दिया। दोस्त खुशी-खुशी उसे लेने पहुंचा, तो पता चला कि अभी तीन और प्रमाणपत्र चाहिए!

कुछ साल पहले एक शोधपत्र में बताया गया था कि भारत में कारोबार चलाने के लिए 68,000 तक नियमों और अनुपालनों का पालन करना पड़ सकता है। इनमें से 27,000 केंद्र सरकार से जुड़े थे और बाकी अलग-अलग राज्य सरकारों के। हर नियम की निगरानी के लिए बाबुओं की पूरी फौज तैनात है। लेकिन नियमों का पालन सुनिश्चित करने के बजाय, कई बार उनका उल्लंघन नजरअंदाज करने के लिए रिश्वत ली जाती है।

सरकार ने इस समस्या को दूर करने की गंभीर कोशिश की। लेकिन बाबू भी कम नहीं निकले। पुराने नियम हटे, तो नए नियमा गए। आखिर जहां चाह होती है, वहां राह निकल ही आती है-और जहां बाबू होते हैं, वहां नियमों की भी कोई कमी नहीं होती!

लेकिन सबसे बेशर्म और सबसे मजेदार बाबू का किस्सा मेरे भाई का है। जब वह अपना घर बनवा रहा था, तब एक बाबू ने उससे किसी काम के बदले रिश्वत मांगी।

भाई ने साफ मना कर दिया। बोला, ''मैं भी आपकी तरह सरकारी कर्मचारी हूं। रिश्वत नहीं दूंगा।'' बाबू ने बिना पलक झपकाए जवाब दिया, ठीक है, आपको 50 प्रतिशत की छूट दे देता हूं!

अब बताइए, ऐसे हुनरमंद लोगों से प्यार न करें तो क्या करें? ये रिश्वत भी मांगते हैं, मोलभाव भी करते हैं और जरूरत पड़ने पर डिस्काउंट भी देते हैं! सचमुच, बाबूगिरी एक कला है। और इस कला में माहिर लोगों के रहते हमारी जिंदगी कभी नीरस नहीं हो सकती।■

इवान्स्टन की झलकियां

भारत के रोटरी नेता - रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम, रो ई निदेशक के पी नागेश, टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश और रो ई अध्यक्ष-नामित भरत पंड्या - अमेरिका के इवान्स्टन में रोटरी नेताओं के साथ बैठकों और संवाद में शामिल हुए।

अपने फेसबुक पेज पर तस्वीरें साझा करते हुए, रो ई निदेशक नागेश ने लिखा: दुनियाभर के रोटरी परिवार के साथ शानदार मुलाकातों, सार्थक बातचीत और प्रेरक अनुभवों ने इस यात्रा को बेहद खास बना दिया। हर पल ने मित्रता, सहयोग और 'स्वयं से बड़कर सेवा' के हमारे साझा संकल्प की ताकत का एहसास कराया। ■



रो ई उपाध्यक्ष एम मुरुगानंदम, रो ई अध्यक्ष-नामित डॉ भरत पंड्या और रो ई निदेशक के पी नागेश, अमेरिका के इवान्स्टन स्थित रो ई मुख्यालय में।



रो ई उपाध्यक्ष मुरुगानंदम, निदेशक नागेश और टीआरएफ ट्रस्टी ए एस वेंकटेश, वन रोटरी सेंटर में रोटरी पोलियोप्लस की मूर्ति के सामने।



रो ई उपाध्यक्ष मुरुगानंदम, आरआईपीएन पंड्या और निदेशक नागेश।

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26 | issue, including cover, 84. Price: `50

